अनुशासन गीताञ्जली

(धारा-27)

समता (आत्मानुशासन)-
परानुशासन (न्याय-संविधान-राजनीति)

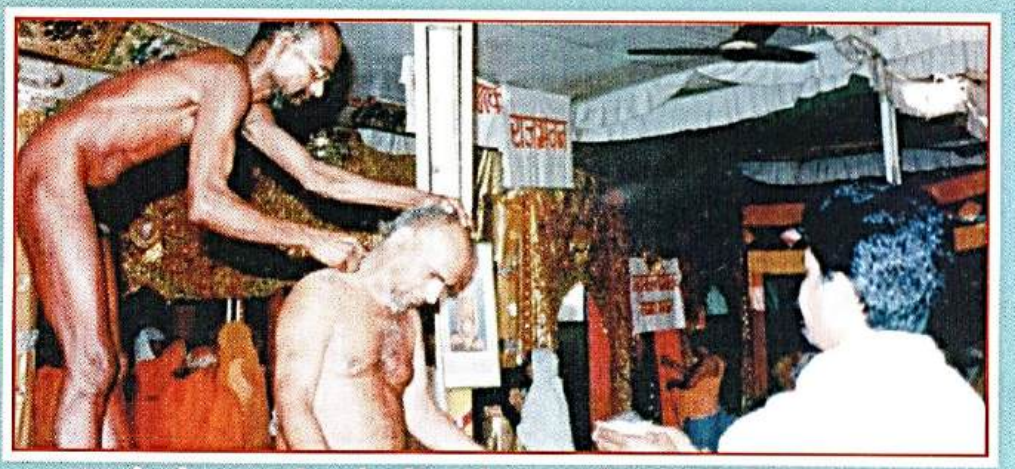
-वैज्ञानिक धर्माचार्य श्री कनकनन्दी जी गुरुदेव



आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी समापन समारोह को सम्बोधित करने के पूर्व मंगलाचरण करते हुए आचार्य कनकनन्दी गुरुदेव। साथ में राष्ट्रसन्त गणेश मुनि ससंघ (स्थानकवासी) शिवसागर मुनि ससंघ (मूर्ति पूजक) आचार्य शान्ति सागर, साध्वी कनक जी ससंघ (श्वे. तेरापंथ) आदि।



उपरोक्त सभी में कनकनन्दी गुरुदेव रचित काव्य का पठन करते आ. कनकनन्दी संघस्थ मुनि सुविज्ञसागर (2014)



आचार्य वर्द्धमानसागर जी का केशलोंच करते हुए आचार्य कनकनन्दी (पंचकल्याण प्रतिष्ठा महोत्सव हिरणमगरी से.11, 1996-उदयपुर) 2014 को यहां पर आ. कनकनन्दी ससंघ का चातुर्मास हुआ।



श्रीमती पूजा तथा श्रीमती संगीता सपरिवार (दिल्ली) आचार्य कनकनन्दी गुरुदेव को शास्त्र भेंट करते हुए। (हिरणमगरी सेक्टर-11, 2014)



उपरोक्त पूजा को 1989 में प्रतियोगिता में उत्तम स्थान प्राप्त करने के उपलक्ष्य में तथा सेवा के कारण पुरस्कृत करते हुए उपाध्याय कनकनन्दी, आचार्य कुन्थुसागर जी ससंघ (बडौत-उ.प्र.)

अनुशासन गीताञ्जली (धारा-27)

समता (आत्मानुशासन)-परानुशासन (न्याय-संविधान-राजनीति)
-वैज्ञानिक धर्माचार्य श्री कनकनन्दीजी गुरुदेव

द्रव्य प्रदाता

1. श्री संजय, दीप्ति, श्रद्धा, प्रज्ञा जैन दिल्ली
2. श्री महेश, पूजा, शगुन, रिया जैन दिल्ली
3. श्रीमती नयना सुरेश जी बखारिया, सेक्टर-11
4. श्री दिपेश जी जैन चितरी जन्म दिवस (दीपावली के उपलक्ष्य में)
5. सेक्टर-4 (उदयपुर) में ग्रीष्म प्रवास एवं आचार्य कनकनन्दी साहित्य कक्ष की स्थापना के उपलक्ष्य में ज्ञानदान।

ग्रंथांक - 226
संस्करण - 2014

प्रतियाँ - 1000
मूल्य - 101/- रु.

सम्पर्क सूत्र व प्राप्ति स्थल
आचार्य श्री कनकनन्दीजी द्वारा आशीर्वाद प्राप्त

1. *धर्म-दर्शन सेवा संस्थान, द्वारा-श्री छोटूलालजी चित्तौड़ा*
चन्द्रप्रभ दि. जैन मंदिर आयड़, आयड़ बस स्टॉप के पास
उदयपुर (राज.)- 313001, *मो*- 99836-18172

2. *डॉ. नारायणलाल कछारा, सचिव- धर्म-दर्शन सेवा संस्थान*
55, *रवींद्रनगर, उदयपुर (राज.)*- 313001
फोन नं.- 0294-2491422, *मो*- 92144-60622
Email : nlkachhara @ yahoo.com

विषय / (गीत)

1.	शिक्षा संस्कृति ज्ञान-विज्ञान के आदि प्रवर्तक : भगवान् आदिनाथ	9
2.	ज्ञान-विज्ञान-आध्यात्म के आद्य प्रवर्तक	10
3.	परम न्याय संविधान राजनीति के सूत्र (कृति-परिचय)	11
4.	मेरी परिकल्पना में वैश्विक पश्च-पाप सप्त-व्यसन रहित से विश्व में होता अधिक विकास (वैश्विक संविधान कानून)।	13
5.	सर्वज्ञ से प्राप्त शिक्षायें।	14
6.	परम व्यक्तित्व विकास होता है विशुद्धि से	16
7.	धर्म का संक्षिप्त सार स्वरूप (धर्म सार)	18
8.	भावना आधारित है- न्याय अन्याय	19
9.	अन्तरात्मा से प्रार्थना	20
10.	आध्यात्मिक जन होते हैं कानून से परे!	21
11.	सत्ता सम्पत्ति प्रसिद्धि बुद्धियुक्त न्यायदाता भी परमज्ञान-सुख हेतु बनते हैं साधु!	22
12.	अभी भी है भारत में अनेक परतंत्रता।	23
13.	नेता की आत्मकथा (नेता का स्वरूप)	25
14.	मानवीय कलंक को मिटाने वाले महामानव-अब्राहम लिंकन	26
15.	सर्वोदय के विभिन्न ज्ञाता-प्रवक्ता एवं कार्यकर्ता	27
16.	सर्वोदय भजनीय-परतंत्रता त्यजनीय	28
17.	पावन भावना एवं व्यवहार	29
18.	अनुशासन की आत्मकथा	30
19.	न्यायाधीश की आत्मकथा	31
20.	सार्वभौम है महावीर के सिद्धान्त	33
21.	सर्वोदयी भारतीय संस्कृति	34
22.	विश्वगुरु भारतमाता	35
23.	अभिनंदन-हे! विश्व गुरु भारत	36

24.	भारतीय संस्कृतिः आध्यात्मिक संस्कृति	36
25.	भारत की आधुनिकता	37
26.	मेरी पावन चार वैश्विक अभिलाषा	38
27.	मेरी पीड़ा के कारण	39
28.	मेरी प्रयोगधर्मिता	40
29.	दोष स्वीकार करने वालों के प्रति मेरा उन्नत भाव	41
30.	असंक्लेशित भाव से विश्व कल्याण की भावना भाऊँ	41
31.	मैं आगे आगे ही चला	42
32.	मेरे सकारात्मक सोच, कथन एवं चारित्र, व्यवहार	43
33.	मैं सर्वोदय चाहता हूँ	43
34.	समता एवं मौन से मुझे प्राप्त लाभ	44
35.	मेरी भावना : परम ज्ञान हेतु मुझे चाहिये स्व-ज्ञान	45
36.	अनन्त बिन कहाँ सुख पावे?	46
37.	क्षुद्रता से भी शिक्षा लेकर महान् बनूँ	47
38.	पात्रता के अनुसार होता है-सत्य व हित ग्रहण	48
39.	आध्यात्मिक दृष्टि होने पर	48
40.	मेरे आनंद एवं दुःख के कारण	49
41.	समालोचना व्यक्तित्व विकास के कारण, न कि आलोचना	50
42.	भेड़-भेड़िया चाल के होते हैं अधिकांश लोग	51
43.	उपलब्धियों के सदुपयोग से विकास तो दुरुपयोग से विनाश	52
44.	कैसे हैं? आधुनिक शिक्षित धार्मिक	53
45.	अंतरात्मा के द्वारा मन को सम्बोधन	54
46.	व्यक्तित्व विकास में बाधक भोजन-पेय	55
47.	मेरे आनंद एवं दुःख के कारण	56
	II	
48.	मेरे लिए सुखद एवं दुःखद कारक	57
49.	क्यों है भारतीय प्रतिभा कुन्द/(अविकसित)?	58

50. संकीर्ण स्वार्थी होते प्रायः मानव 59
51. अहिंसा-अपरिग्रह का सार्वभौम नियम 60
52. सार्वभौम सर्वोदयी संविधान तथा न्याय 61
53. सर्वोदय के उपाय 62
54. कानून के परे नीति-सत्य-आध्यात्मिक 63
55. आध्यात्मिक एक-लाभ अनेक 64
56. सर्व अनुशासन का मूल-आत्मानुशासन 65
57. कोई भी कार्य अचानक (अकारण) नहीं होता 66
58. धार्मिक या अधार्मिक सबके लिए करणीय 67
59. सामान्य ज्ञान एवं सदाचार 68
60. प्राचीन या अद्यतन : जो श्रेष्ठ है वह ग्रहणीय 68
61. विभिन्न- विषय ज्ञान से विविध लाभ 70
62. वैश्विक राज्य व विश्व नागरिकता 71
63. बुद्धि-सम्वेदना-आध्यात्म 72
64. नीति-सुनीति-कुनीति 72
65. सरल रेखा के सम होता है सत्य-न्याय 74
66. लोक एवं सरकारी मान्यता से न मिले, सत्य-शांति-मोक्ष 76
67. वैश्विक एकता एवं सर्वोदय 77
68. आदर्शमय जीवन हो! 78
69. महान लक्ष्यादि बिना सत्तादि से होता विनाश 79
70. सत्ता-सम्पत्ति-शक्तिवान् करते हैं पाप अधिक 79
71. अच्छे या बुरे भाव-व्यवहार के प्रमुख कारण 80
72. किशोर भी होते हैं धर्मात्मा या पापात्मा 81
73. भोग-भूमिजों से प्राप्त शिक्षायें 83
74. ग्रामीण संस्कृति एवं प्रवृत्ति 83
75. दशविध-शक्ति की जागृति 84
76. उत्तम भाव बिना शिक्षादि से भी न होते श्रेष्ठ काम 85

77. नैतिक<धार्मिक<आध्यात्मिक 86
78. समस्त सांसारिकता से परे है आध्यात्मिकता 87
79. अलौकिक वृत्तियुक्त होते हैं आध्यात्मिक 88
80. सुख प्राप्ति के उपाय 88
81. स्वागत हो! नवीन वर्ष 89
82. नवीन वर्ष में स्व-मूल्यांकन/(हिसाब) 90
83. धन्य हे/ वे... 91
84. महान् कार्यों में बाधक-साधक कारण 92
85. नीति-सुमनाञ्जली 92
86. छोटे-छोटे सदाचार नित्य ही पालो 93
87. होना चाहिये! 94
88. अनुशासन से बने जीवन महान् 95
89. नैतिक नियम न कर सको तो... 96
90. सभी के लिए नैतिकाचार 97
91. सुभाव-कुभाव का स्वरूप एवं फल 98
92. प्रायश्चित्त रूपी औषधि से तन-मन-आत्मा स्वस्थ 99
93. त्यजनीय सर्व मानवकृत विकृतियाँ एवं कुरीतियाँ 100
94. अन्याय का प्रतिकार विधेय 101
95. स्वीकार्य-अस्वीकार्य 102
96. अनावश्यकता से जीव पाप करे अधिक 103
97. दुनिया की विचित्रता 104
98. भ्रष्टाचार की महिमा 105
99. क्षुद्र मानवकृत सीमा से पार चला 105
100. जीवन में आध्यात्मिकता की आवश्यकता 106
101. अधिक सत्ता-सम्पत्ति (प्रसिद्धि) भोग वाले होते हैं अधिक पापी-दुःखी 107
102. अंतरंग दूषित भावों की अभिव्यक्ति सत्तादि द्वारा 108
103. साधुः सामाजिक-कानूनी सीमा से परे 109

104. अन्य की तुलना व प्रतिस्पर्धा से रहित हैं 110
105. सद्गृहस्थ (श्रावक) के 35 गुण 111
106. अठारह (18) पाप स्थान 111
107. प्रतिक्रमणः आध्यात्मिक दंड प्रक्रिया 113
108. तुच्छ जीव के भाव-व्यवहार 114
109. मारने वाले मारे/(मर) जाते 115
110. सप्त-भय रहित एवं भय सहित 116
111. संकल्पी हिंसा-त्यागी का भाव एवं व्यवहार 116
112. निर्दोषी जीवों के प्रति दोष करना संकल्पी-हिंसा 117
113. संकल्पी हिंसा एवं अनावश्यक पाप करते हैं जीव अधिक 119
114. मजहब भी सिखाता है आपस में वैर रखना 119
115. 7 जन्मान्ध एवं हाथी 120
116. जो कुछ होता सही न होता 121
117. छोटे भी होते हैं मोटे उपकारी 122
118. विनाश होता है धीरे-धीरे 123
119. विकास होता है धीरे-धीरे 124
120. भारतीयों के भ्रष्टाचार एवं पापाचार के कारणों का अनुसंधान 125
121. इण्डियनों के पिछड़ापन के कारण एवं निवारण 127
122. हर पाप-पुण्य एवं मोक्ष के कर्ताः मानव 128
123. संकीर्ण-स्वार्थी क्रूरतम प्राणीः मानव 129
124. असीम क्षमतावान्ः मानव 130
125. कब ये मानव शान्ति पायेगा? 131
126. महामानव प्रति मानव की क्रूरता 132
127. परपीड़क का विनाश एवं साम्यभावी का विकास 133
128. विश्वगुरु भारत बन गया बेईमानों का देश 134
129. अभी भारत को क्या हो गया? 136
130. भारतीयों में सत्य को मानने का सत्-साहस नहीं 137

131. कृषक की आत्मकथा तथा आत्महत्या 139
132. गो माता की व्यथा गाथा 140
133. शिक्षा की गाथा-व्यथा-आत्मकथा 142
134. मन्यमाना सभ्य मानव की असभ्य बर्बर वृत्ति 143
135. हे! मानव विनाशक युद्ध त्यागो, विकास के कर्म करो 144
136. हर अच्छाइयों को विकृत करता है मानव 146
137. मानव की विषमतापूर्ण विचित्र प्रवृत्ति 147
138. भारत के अपराधों के कारण-परिणाम तथा निवारणोपाय 148
139. जैन धर्म की अति विशेषताएँ 149
140. सम्यक्त्व एवं व्रत को दूषण नहीं करने वाले लोक व्यवहार भी ग्राह्य 150
141. सुख प्राप्ति के उपाय 151
142. बंध, मोक्ष का कारण-मन 152
143. निंदक संगति न कीजिए 152
144. दया ही पावन अमृत धारा 153
145. धार्मिक जन के लक्षण 154
146. सरल एवं कठिन 155
147. स्वयं को जानना-मानना-पाना कठिन क्यों? 155
148. बुद्धि (मतिज्ञान) एवं अनुभूति (श्रुतज्ञान) प्राप्ति के उपाय 156
149. मेरा व तेरा पथ हो! मोक्ष-पथ 158
150. मुमुक्षु के लिए सतत करणीय 158
151. गृहस्थाश्रमी एवं गृहस्थों की दशा-दिशा/(समस्या) 159
152. निमंत्रण बिना होता है धर्म 160
153. समता/(सामायिक) एक, लाभ अनंत 161
154. ज्ञानामृतम् 163
155. मानव जब विवेकी होगा 164
156. आत्मदीप पहिले, परदीप अनन्तर 165
157. शिक्षा धर्मादि का मूल्यांकन धन से 166

158. सफलता एवं असफलता के कारक 167
159. क्षुद्र मानव की अनधिकार चेष्टा 168
160. तब ये मानव नैतिक होगा 169
161. कब ये मानव परम आदर्श बनेगा? 170
162. महापुरुष व (या) सफल व्यक्ति के गुण 170
163. कितना विवश (गुलाम) है मानव? 171
164. मानव की दोष प्रवृत्ति के कारण एवं निवारणोपाय 172
165. दोष निवृत्ति एवं सत् प्रवृत्ति के कारण 173
166. स्व-पर हित हेतु स्व-पर गुण-दोष ज्ञातव्य 175
167. सत्य कटु नहीं, सत्य है सच्चिदानन्द 176
168. हर क्षेत्र में भाव की मुख्यता क्यों? 177
169. भाव से भाग्य एवं भावी निर्माण 178
170. अशुभ त्यागो, शुभ से शुद्ध बनो 179
171. विश्व के हर जीव चैतन्य दृष्टि से एक समान 180
172. व्यक्ति राष्ट्र एवं विश्व के उत्थान-पतन के कारक 181
173. विश्व कल्याण के लिए भौतिकता से श्रेष्ठ आध्यात्मिकता 183
174. शांति की सरिता बहाते चलो 184
175. युद्ध एवं शान्ति- (सत्य-न्याय हेतु युद्ध) 185
176. यदि विश्व में युद्ध न होता 187
177. हो भारतीय संस्कृति युक्त जापानी कार्य पद्धति 188

परिशिष्ट

क) जज का फैसला 188
ख) मगरा प्रांत में जैन/(जन) एकता की बहार 189
ग) आध्यात्मिक विज्ञान सभा सम्पन्न 190
घ) जैन/(भारतीय) सत्य-तथ्य, जो आधुनिक विज्ञान से परे 192

❑❑❑

शिक्षा-संस्कृति-ज्ञान-विज्ञान के आदि प्रवर्तकः

भगवान् आदिनाथ

(भारत का प्राचीनतम इतिहास)

(चाल : हाँ तुम बिल्कुल ....)

आदि ब्रह्मा आदीश्वर श्री आदिनाथ महान् हो।
आदिराज आदिगुरु वृषध्वज नमो नमः।। (टेक)
भोगभूमि का जब अन्त आया, कल्पवृक्ष सब नष्ट हुए।
क्षुधित प्रजा को प्रभु ने सिखाया, कृषि के द्वारा जीवन बचाया-2
आत्मरक्षायें असि सिखाया, लेखन पठनार्थे मसि बताया।। आदिराज...
भौतिक विनियम हेतु वाणिज्य, गृहोपकरण शिल्प बताये।
परस्पर सहयोग सेवा बताया, इसलिये आदि ब्रह्मा कहलाये।-2
आपने ब्राह्मी लिपि भी सिखायी, जिसका नाम ब्राह्मी लिपि हुआ।।2।। आदिराज...
सुंदरी पुत्री को अंक सिखाया, इसलिये आदिगुरु भी कहलाये।
राजा बनकर शासन किया, राजनीति न्याय आप सिखाये-2
तुम्हारा पुत्र भरत हुआ, प्रथम चक्री विख्यात हुआ ।।3।। आदिराज...
उनसे आर्य देश हुआ भारत, शस्यश्यामला हमारा देश।
तुम्हारा पुत्र बाहुबली हुआ, प्रथम कामदेव शक्तिशाली हुआ -2
अर्ककीर्ति अन्य पुत्र भी हुए, सबको विभिन्न विद्या सिखाये ।।4।। आदिराज...
आपंको जब वैराग्य हुआ, सब पुत्रों को राज्य दिया।
जिससे देशों का उदय हुआ, पुत्रों के नाम से वंश चला-2
इक्षुरस प्रयोग तुमने सिखाया, इसलिये इक्ष्वाकु वंश कहाया ।।5।। आदिराज...
सूर्य चन्द्रादि वंश पुत्रों से, वंशों का प्रारम्भ इनसे हुआ।
दीक्षा प्रयाण से प्रयाग हुआ, अक्षय वट दीक्षावृक्ष बना-2
आत्मध्यान में लीन होने से, जटाजूट से भूषित हुए ।।6।। आदिराज...
पुरिमताल में हुआ केवलज्ञान, अशोक है बोधि वृक्ष का नाम।

देवों ने समवशरण बनवाया, गन्धकुटी मध्य में बनवाया-2
सर्वभाषामयी दिव्य ध्वनि से, प्रभु ने ज्ञान विज्ञान सम्बोधा ।।7।। आदिराज...
आत्म विकास का मार्ग बताया, वैश्विक तत्त्व का रहस्य बताया।
कैलाश से मोक्षधाम पधारे, सच्चिदानंद हैं रूप तिहारे-2
सत्य शिव सुंदर अविकारी बन, अनन्त वैभव अविनाशी हुए ।।8।। आदिराज...
आदि अणु प्रकृति ज्ञानी, शिक्षा संस्कृति के आदि विज्ञानी।
सापेक्ष सिद्धांत के आदि ज्ञाता, न्याय राजनीति के आद्य प्रणेता-2
आधुनिक या प्राचीन ज्ञान, देश-विदेशों के संपूर्ण ज्ञाता ।।9।। आदिराज...
रीति रिवाज समाज ज्ञान, समस्त ज्ञाता आदि भगवान्।
'कनकनन्दी' है भक्त तुम्हारा, तुम्हारा आदर्श हमको प्यारा-2
तुम्हारी भक्ति से तुम सम बनूँ, इसी हेतु से भक्ति मैं करूँ ।।10।। आदिराज...
आदिराज... आदि ब्राह्मा...

❑❑❑

आदिनाथ तीर्थंकर की स्तुति

ज्ञान-विज्ञान-आध्यात्म के आद्य प्रवर्तक

(रागः आधा है चन्द्रमा...)

करता हूँ वन्दना आदि स्वामी...2
तेरे बिन और कोई नहीं स्वामी ऽऽऽ... (स्थायी)
आदि तीर्थंकर राजा स्वामी-शिक्षक न्यायाधीश कलागामी
साधु-दिगम्बर सर्वज्ञानी-समवशरणपति मोक्षगामी
प्रजापालनार्थे ज्ञान दिया-असि मसि कृषि वाणिज्य बताया
करता हूँ वन्दना ...(1)...
शिल्प सेवा का ज्ञान दिया-राजा बनकर न्याय किया
ब्राह्मी को अक्षर ज्ञान दिया-ब्राह्मी लिपि जो कहलाया
सुंदरी को अंक का ज्ञान दिया-गणित का शुभारंभ किया
करता हूँ वन्दना ...(2)...

भरत आदि जो पुत्र हुए-न्याय राजनीति ज्ञान दिये
अर्थशास्त्र युद्ध कला ज्ञान-शतपुत्रों को भी दिया ज्ञान
नीलाञ्जना मरण को देखा-वैरागी बनके राज्य त्यागा
करता हूँ वन्दना ...(3)...
ध्यान से जटाजूट तव बढ़ा-महायोगीश्वर ध्यान रूढ़ा
इक्षु रस से हुई तव पारणा-अक्षय तृतीया दिन गणना
पाञ्चाश्चर्य महिमा आहारदान की -गुणगान चक्री ने बखाना
करता हूँ वन्दना ...(4)...
सर्वज्ञ आप्त हुए हैं आप-सर्व सत्य को जाना है आप
विश्व-संबोधन किया है आप-विमुक्त मार्ग के नेता आप
विश्वगुरु में आद्य आप ब्रह्मा विष्णु-शिव जिन आप्त मोक्षगामी
करता हूँ वन्दना ...(5)...
अन्त में गिरि कैलाश गये-आत्म स्वभाव में स्थिर हुए
सर्व कर्म नाशी मोक्ष गये-लोकाग्र शिखरे वास किये
सच्चिदानन्दमय आत्मलीन प्रभु-'कनकनन्दी' को तव गुण भाये
करता हूँ वन्दना ...(6)...

❑❑❑

परम न्याय संविधान-राजनीति के सूत्र

आचार्य कनकनन्दी

(चाल : 1. दोहावली..., 2. हाँ तुम बिल्कुल..., 3. सायोनारा..., 4. शत शत वन्दन..., 5. आधा है चन्द्रमा (करता हूँ वन्दना), 6. दुनिया में रहना है तो..., 7. गजानना...।)

"धर्मेण रक्षति रक्षितः"... यह है (सच्चा) संविधान।
"धर्मेण हन्ति हन्तः"... यह सही दण्ड-विधान।। (1)
"परित्राणाय साधुनां"... यह है (परम) रक्षा तंत्र।।
"विनाशायश्च दुष्कृतां" ... यह है (परम) दण्ड तंत्र।। (2)

"जैसा बोओगे वैसा पाओगे" ... यह है न्यायिक प्रक्रिया।
"पश्चात्तापत् फलश्च्युति" ... यह है क्षमा याचना।। (3)
"समताचरण ही परम चरण" ... यह है साम्यवाद।
"पस्पर उपग्रहो जीवानां" ... यह है समाजवाद (4)
"प्रजा सुरक्षा तथा सम्वृद्धि" ... यह है राज्यनीति/(राजशासन)।
"आत्मानुशासन-संयमाचरण" ... यह है प्रशासन। (5)
"आत्मसाक्षी सही ज्ञान" ... यह है साक्ष्य विधान।
"कर्मों के बंधन होना" ... यह है बन्दी सदन। (6)
"कर्मानुसार भाव होना" ... यह है अधिवक्ता।
"कर्म उदय से फल मिलना" ... यह है न्याय कर्त्ता। (7)
"अहिंसा सत्य अचौर्य ... ब्रह्मचर्य (पालन) अपरिग्रह।
"क्रोध मान माया लोभ" ... सप्त-व्यसन परिहार।। (8)
इतने में (सर्व) संविधान है... तथाहि न्याय-विधान।
उल्लंघन कर्त्ता होता दोषी ... अन्यथा निरपराध ।। (9)
मन वच काय कृत कारित ... तथाहि अनुमत में/(है)।
पालन या उल्लंघन से ... निर्दोष-दोषी विधान।। (10)
आत्म विशुद्धि से कर्म विनाश ... यह है बन्दी मुक्त/(दोष मुक्त)
सत्य शिव सुंदर बनना ... यह है जीवन लक्ष्य ।। (11)
अनेकांत है विचार पद्धति ... स्याद्वाद है कथन।
राग-द्वेष-मोह रहित भावना ... सर्वोदय नियम ।। (12)
आत्म-विश्वास ज्ञान चारित्र ... सम्यक् मोक्षोपाय।
ध्यान-अध्ययन धैर्य संयम ... क्षमादि सहोपाय।। (13)
अहिंसा परमो धर्मः यह है ... विश्वशांति उपाय।
पर्यावरण सुरक्षा/(इको सिस्टम) व ... सर्वजीव अधिकार।। (14)
यह है परम न्याय संविधान ... राजनीति वैश्विक।
इसी से सर्वोदय होता (है) ... 'कनक' मान्य विशेष।। (15)

(बेदला, दि 3.1.2014 रात्रि 9.17 तथा 1.58, प्रातः 6.42)

(वैश्विक संविधान कानून)
मेरी परिकल्पना में पञ्चपाप-सप्त-
व्यसन रहित से विश्व में होता अधिक विकास

– आचार्य कनकनन्दी

(रागः शत-शत वन्दन)

यदि न होते विश्व में, पञ्चपाप- सप्त व्यसन।
विश्व अधिक विकास करता, सुखमय होता हर जीवन ।। (स्थायी)
हिंसा झूठ चोरी कुशील परिग्रह, ये होते हैं पञ्चपाप।
अन्य पाप के भी जनक होते, जिससे जन्म लेते संताप।।
मद्य-मांस-भक्षण चोरी वेश्यागमन व परस्त्री संग रमण।
जूआ खेलना शिकार करना, ये हैं सप्त विध-व्यसन।। यदि न होते ...1
पञ्चपाप सप्त व्यसन यदि, कोई सेवन न करते।
नैतिक सदाचारी होने से, वैर-विरोध नहीं करते।।
शोषण मिलावट भ्रष्टाचार न होते, न होता आतंकवाद।
हत्या, बलात्कार, कुकार्य न होते, न होता युद्ध उन्माद।। यदि न होते...2
न होता प्रकृति हनन व, न होते प्रदूषण भारी।
दुर्घटना व रोग कम होते, न होते अपराध भारी।।
जिससे पुलिस सेना की भी, न होती आवश्यकता।
अस्त्र-शस्त्र व न्यायालय की, न होती आवश्यकता।। यदि न होते...3
औषधालय वैद्य डाक्टर की, आवश्यकता होती कम।
औषधि नर्स उपकरणों की, आवश्यकता होती न्यून।।
धन जन साधन समय का, होता सदुपयोग विशेष।
बुद्धि भावना श्रम का भी, होता सदुपयोग विशेष।। यदि न होते...4
जीविका उपार्जन जीवन निर्माण, में होता विशेष विकास।
शोध बोध व ध्यान अध्ययन से, होता आत्मिक-विकास।।
मानव महामानव बनता, साधना से होता भगवान्।
इसी हेतु ही 'कनकनन्दी', करता सतत प्रयास।। यदि न होते...5

(उदयपुर पायडा 21.3.2014, मध्याह्न-11.40)

❑❑❑

सर्वज्ञ से प्राप्त शिक्षायें

एक सर्वज्ञ जो जानते उसे अनन्त असर्वज्ञ भी नहीं जानते
अनन्त अज्ञानी जो नहीं जानते, उसे एक ज्ञानी जानते

– आचार्य कनकनन्दी

(चालः 1. छोटी-छोटी गैया..., 2. सायोनारा....)

आठ वर्ष (व) अन्तर्मुहूर्त में, कोई तीर्थंकर सर्वज्ञ बनते।
ब्रह्माण्ड के सम्पूर्ण सत्य को, युगपत/(एक साथ) सभी को जानते।।
असंख्यात भी देव-मानव, तथा अनन्त तिर्यंञ्च जीव।
उस सत्य को न जान पाते, जो होते हैं असर्वज्ञ।।
इससे मुझे/(अनेक) शिक्षायें मिलती, सत्य प्राप्त होते स्वयं में/(से)
अरबों भी मानव जो नहीं जानते, उसे भी मैं जानूं स्वयं में।। (1)
घाति कर्म या राग द्वेष मोह काम, क्रोध को नाशकर बनते सर्वज्ञ।
मैं भी ऐसा आचरण करके, मैं भी बन जाऊँगा/(पाऊँगा) सर्वज्ञ।।
अनन्त एकेन्द्रिय जीव, एक वचन भी न बोल पाते।
किंतु एक वाग्मी मानव, करोड़ों वचन बोल पाता।।
अनेक अन्धे जिस सूर्य को, दिन में भी न देख पाते।
किंतु एक चक्षुष्मान्, उस सूर्य को देख पाता।। (2)
अनन्त ज्ञान सहित हूँ मैं, द्रव्य दृष्टि व स्वभाव से।
कर्म आवृत्त होने के कारण, असर्वज्ञ हूँ अशुद्ध से।।
कर्म मेरा जितना-जितना, निरावरण होता जाएगा।
उतना-उतना मैं जान जाऊँगा, अन्य जाने या न जाने।।
अनेक मानव धर्म नाम से, अथवा स्वार्थवशता से।
कानून राजनीति संविधान से, असत्य/(अयोग्य) मानते/(करते) मोह से ।।3।।
यथाहि भेदभाव संकीर्णता, शोषण मिलावट बेईमानी।
फैशन-व्यसन, भ्रष्टाचार व, अन्याय-अत्याचार कुवाणी।।
दहेज हत्या व गर्भपात, परस्त्रीरमण व वेश्यागमन।
चोरी डकैती आतंकवाद, हत्या मद्य माँस सेवन।।
तम्बाकू सेवन व धूम्रपान, पशु-पक्षी-मानव बलिदान।

दास प्रथा व बंधुआ मजदूर, बाल यौन शोषण-दमन।। ।।4।।
उद्दण्ड अनुशासनहीन, आलस्य प्रमाद व वाद-विवाद।
कलह करना गंदगी फैलाना, गरीब दुर्बलों का दमन।।
मद्य निर्माण व बूचड़खाना, चलाते कानून बल से।
क्रय-विक्रय व सेवन करते, करोड़ों मानव मोह से।।
तथाहि तम्बाकू बीड़ी सिगरेट, अफीम गुटका सॉफ्टड्रिंक।
निर्माण विक्रय सेवन करते, तथापि नहीं है सम्यक्।।5।।
सत्य का निर्णय लोकतंत्र सम, नहीं होता है बहुमत से।
भेड़चाल या भेड़ियाचाल से, सत्य न मिलता अंधश्रद्धा से।
सर्वज्ञ से मैं शिक्षा लेकर, सत्य समता व शांति (मैं) चाहूँ।
इसी भव से ही 'कनकनंदी', यथायोग्य सम्भव यह पाऊँ।। 6।।

(पायड़ा, दि. 27/3/2014 मध्याह्न 1.20)
यह कविता "जीत आपकी" (ले. शिवखेड़ा) से भी प्रेरित है।

❑❑❑

किसी व्यक्ति को नैतिक शिक्षा दिए बिना वैचारिक शिक्षा देना समाज के लिए संकट को न्यौता देना है।

- थियोडोर रुजवेल्ट

नैतिकता और कानून (Ethics and Legality)

किसी व्यक्ति को यह सोचकर दुःखी नहीं होना चाहिये कि उसने अच्छा काम किया, लेकिन औरों ने बुरा काम किया। अगर किसी ने अकेले ही सही काम किया हो, तो उसने उचित किया और यदि गलत काम किया हो, तो पूरी मानव जाति की स्वीकृति भी उसके काम को उचित सिद्ध नहीं कर सकती।

-हेनरी फील्डिंग

ज्यादातर लोग इस बात से सहमत होंगे कि नैतिकता और कानून एक ही चीज नहीं हैं। जो बात नैतिक हो सकती है, वह कानून के दायरे में भी हो सकती है और नहीं भी। इसका उल्टा भी उतना ही सच है। मिसाल के तौर पर -

(1) एक जीवन बीमा सेल्समैन ज्यादा कमीशन पाने अपने ग्राहक को सबसे

उपयोगी पॉलिसी बेचने के बजाए अनुपयुक्त पॉलिसी बेचता है। उसका काम कानूनी तो है, मगर अनैतिक और सिद्धांत के खिलाफ है।

(2) एक नौजवान अधिकारी, कार की सीट पर खून से लथपथ पड़े अपने जख्मी बच्चे को बचाने के लिए स्पीड लिमिट से तेज गाड़ी चला रहा है। ऐसी स्थिति में शायद ही कोई उसने कानून तोड़ने संबंधी नैतिकता का प्रश्न उठाएगा। उस बच्चे का जीवन बचाने के लिए डॉक्टरी सहायता उपलब्ध न कराना सिद्धांत के खिलाफ होगा, फिर चाहे इसके लिए ट्रैफिक नियमों को तोड़ना ही क्यों न पड़े।

कानून न्यूनतम पैमाने तय करता है, जबकि नैतिकता और मूल्य इन पैमानों से काफी आगे जाते हैं। नैतिकता और मूल्य, निष्पक्षता और न्याय पर आधारित है। ये लोगों को खुश या नाखुश करने के लिए नहीं है। ये लोगों की जरूरतों और अधिकारों का सम्मान और इज्जत करने के लिए है।

❑❑❑

परम-व्यक्तित्व-विकास होता है आत्मविशुद्धि से
(आध्यात्मिक विशुद्धि की वृद्धि से होता है-
सर्वोच्च व्यक्तित्व विकास)
भद्रता/नैतिकता<धार्मिकता<आध्यात्मिकता

सृजेता- आचार्य कनकनन्दी

(चाल : शत शत वन्दन..., 2. आत्मशक्ति...,)

सम्यक् दर्शन ज्ञान चारित्र है, महान् सूत्र विश्व का।
जीवन निर्वाह निर्माण तथा, परिनिर्माण सभी का।।

सम्यक् दर्शन है आत्मविश्वास, जो शुद्धात्म स्वरूप है।
मिथ्यात्व अनन्तानुबंधी, क्षयोपशम-क्षय से होता उत्पन्न है।।
इसके बिना न होता सम्यक् ज्ञान, तथा सम्यक् चारित्र।
मन्दकषायी जीव इनके बिना, हो सकता नैतिक व भद्र।। (1)

यथाभोगभूमिज पशु-मानव व, देव न सेवते सप्त व्यसन।
व्यवहार-स्थूल पञ्चपाप न करते, तथापि न होते धार्मिक जन।

सम्यक् दर्शनादि सह जीव होते हैं, सच्चे धार्मिक (जैन) जीव।
भले वे नारकी देव मानव अथवा पशु पक्षी भोगभूमिज।। (2)

व्रती जीव ही होते श्रावक, निर्व्यसनी, पंचाणुव्रती/(पंचत्यागी)।।
प्रत्याख्यान कषाय के क्षयोपशम से, होते हैं सच्चे साधु।
कर्मभूमिज योग्य मानव ही, हो सकते हैं ऐसे साधु।।
ऐसे साधु ही सेवन करते, सम्यक् दर्शन ज्ञान चारित्र।
आत्म विशुद्धि की वृद्धि के द्वारा, अन्त में पाते परिनिर्वाण।। (3)

सम्यक् दृष्टि जीव जीता है, निर्माण तथा निर्वाण हेतु।
मिथ्यादृष्टि जीवन जीता, भोग-उपभोग करने हेतु।।
भद्र यदि होता जीव, करता नहीं है क्रूराचार।
तथापि निर्वाण हेतु न पालता, सम्यक् ज्ञान व सदाचार।। (4)

शुभलेश्या व मन्दकषाय से, पालन करता है नैतिकाचार।
स्व-पर को कष्ट देना, नहीं करता वह भ्रष्टाचार।।
ऐसा मानव मरकर स्वर्ग में, पाता है सुख-भोग।
तथापि आत्म विशुद्धि बिना, नहीं पाता है निर्वाण सुख।। (5)

आत्मविशुद्धि की क्रमवृद्धि से, भद्र भी बनता है सुदृष्टि।
उत्तरोतर विशुद्धि से गुणस्थान/(आध्यात्मिक श्रेणी) की होती है वृद्धि।।
भद्रता (नैतिकता) बिना न होता धर्म, धर्म बिना न आध्यात्मिक।
आध्यात्मिक बिन न परम व्यक्तित्व/(विकास), अतः सर्वश्रेष्ठ आध्यात्मिक ।। (6)

आत्मविशुद्धि की क्रमवृद्धि से, पाप भी होता अवश्य त्याग।
यथा यथा प्रकाश वृद्धि से, अंधकार का होता विनाश।।
आत्मविशुद्धि के बिना जो पाप, न करते दण्ड भय से।
उनका गुणस्थान न बढ़ता, वह भले भद्र कहावे जग में।।(7)

जो होते है मिथ्यात्वी क्रूर, सेवते हैं पाप व व्यसन।
वे नरक तिर्यञ्च में जन्मते, वे न होते धार्मिकजन।।
मन्द कषाय से बनता भद्र, धार्मिक बने सम्यक्दृष्टि ही।
श्रावक बने पञ्चाणुव्रती, आध्यात्मिक बने सच्चे साधु ही।। (8)

भद्रता से मिले संसार-सुख, धर्म से संवर निर्जरा भी।
श्रावक पावे स्वर्ग सुख भी, साधु पावे निर्वाण सुख भी।।
यह है आध्यात्मिक रहस्य, नहीं जानते वैज्ञानिक भी।
परम व्यक्तित्व विकास हेतु, 'कनकनन्दी' बना है साधु।। (9)

(पायड़ा, दि. 17/3/2014 मध्याह्न 10.27)

(यह कविता भू.पू. कृषि वैज्ञानिक डॉ. श्यामलाल गोदावत की जिज्ञासा से बनी)

❑❑❑

धर्म सार

धर्म का संक्षिप्त सार स्वरूप

- आचार्य कनकनन्दी

(तर्ज: शत शत वन्दन..., दोहा)

धर्म का स्वरूप संक्षिप्त से, कर रहा हूँ वर्णन।
स्व-पर विश्व हित हेतु, सार भूत सम्बोधन।। (1)
सत्यविश्वास ज्ञान चारित्र, यह है सूत्ररूप धर्म।
आत्म विश्वास सद् विवेक (ज्ञान) युक्त, सदाचरण है धर्म।। (2)
अहिंसा सत्य अचौर्य ब्रह्मचर्य (व), अपरिग्रह व्रत।
मन वचन काय कृत कारित, व अनुमत से सहित।। (3)
क्रोध मान माया लोभ मोह, काम विकार का त्याग।
नव कोटि से करना है, व्यसनों-फैशनों का त्याग।। (4)
उत्तम क्षमा मार्दव आर्जव, सत्य व शौच संयम।
तप त्याग अकिंचन्य, ब्रह्मचर्य दशविध (हैं) धर्म।। (5)
सम्यक् गमन सम्यक् कथन, सम्यक् भोजन शयन।
हर काम सम्यक् करना, मल मूत्रादि विसर्जन।। (6)
हर जीवों में मित्रता, गुणी में प्रमोद भाव।
दुःखी जीव प्रति करुणा (भाव), दुर्जनों से साम्यभाव।। (7)
दान दया परोपकार युक्त, सेवा सहयोग सहित।
प्रेम वात्सल्य निःस्वार्थ युक्त, उदार भाव सहित।। (8)
आत्मविश्लेषण आत्मानुशासन, आत्मा के परिशोधन।
ध्यान अध्ययन अनुप्रेक्षा, भावना सोलह कारण।। (9)

उदार व्यापक पावन भाव, सरल सहज कोमल।
दीन हीन व गर्व रहित, शीतल शांत निर्मल।। (10)
निर्भय निर्वैरत्व व, निशंक निराभिमान!।
निर्द्वन्द निष्कलंक, निर्मोही निर्विकारवान्।। (11)
भेदभाव व कलह निंदा, विद्वेष ईर्षा व तृष्णा।
प्रतिस्पर्द्धा व कुंठा रहित, भाव जो विगत घृणा।। (12)
वस्तु स्वरूप धर्म है, सच्चिदानंद स्वरूप।
सत्य साम्य सुखमय, "कनक" का शुद्ध रूप।। (13)

(बेदला 8.1.2014 रात्रि 12.15)

❑❑❑

भावना आधारित है न्याय-अन्याय
(सत्तादि से करता है मानव अधिक अन्याय)

– आचार्य कनकनन्दी

(तर्जः शत शत वन्दन..., आत्मशक्ति.....)

सत्ता सम्पत्ति बुद्धि बल से, मानव करता अधिक पाप।
पशु-पक्षी कीट-पतंग वनस्पति, मानव तक को देता संताप।। (स्थायी)
क्रोध-मान-माया लोभ काम (आदि)/ भाव, आदि से होते प्रबल।
जिससे भावना विकृत होती, जिससे पाप करता प्रचुर।।
यथा अधिक ईंधन संयोग से, अग्नि प्रज्ज्वलित होती अधिक।
अधिक अग्नि अधिक जलाती; तथाहि सत्तादि से पाप अधिक।। (1)
गरीब दुर्बल न आक्रमण करता, वही करता युद्ध हत्या अधिक।
मिलावट शोषण अन्याय अत्याचार, भ्रष्टाचार आतंकवाद अधिक।।
प्रकृति शोषण दोहन प्रदूषण, अधिक नहीं करता वह भी।
अधिक सत्तादिवान् अधिक करता, आवश्यक या अनावश्यक से भी।। (2)
सत्तादिवान् जो नियम/(कानून) बनाते, स्वार्थ साधन में करते प्रयोग
परोपकार तो वे कम करते, दुरुपयोग में अधिक प्रयोग।।
परोपकारी जो दयालु होते, संवेदनशील व उदारमना।
वे ही सत्तादि को पाकर, नहीं करते विकृत भावना।। (3)

अतएव वे सत्तादि के द्वारा, करते हैं वे परोपकार।
सुभावना या कुभावना से, होते उपकार या अपकार।।
न्याय अन्याय भी भावना से होते, कानून सत्तादि न मुख्य कारण।
न्याय हेतु भी सुभाव मुख्य, डिग्री आदि न होते प्रमुख।। (4)
भाव प्रमुख ही नियामक शक्ति, विद्युत् यंत्रों में यथा विद्युत्।
पवित्र भावना-व्यवहार श्रेय, न्याय राजनीति धर्म सहित।।
धर्म-अधर्म व पुण्य-पाप मोक्ष, न्याय-अन्याय में भाव प्रमुख।
पावन-भावना करो हे! मानव, "कनकनन्दी" का पावन लक्ष्य।। (5)

(बेदला 5.1.2014 प्रातः 7.48 बजे)

❑❑❑

अन्तरात्मा से प्रार्थना

आचार्य कनकनन्दी

(चालः रवींद्र संगीत..., 2. हमको मन की शक्ति देना...)

अन्तर मम विकसित करो ... अन्तरतम हे!ऽऽऽ
निर्मल करो, निर्भय करो ... निःशंक करो हे!ऽऽऽ
आत्म-विश्वास ज्ञान चारित्र ... सम्यक् करो हे!ऽऽऽ
क्रोध मान माया लोभ ... विनाश करो हे!ऽऽऽ
संयम धैर्य क्षमा नम्रता ... विकास करो हे !ऽऽऽ
उदारभाव व्यापक दृष्टि ... विस्तार करो हे !ऽऽऽ
स्वावलंबी अनुशासी ... सहिष्णु बनूँ !ऽऽऽ
सत्य-तथ्य-परमार्थ ... ज्ञेय को जानूँ !ऽऽऽ
अप्रभावी आत्मनिष्ठ ... मुमुक्षु बनूँ !ऽऽऽ
ज्ञानी-ध्यानी स्वाध्यायी ... पावन बनूँ !ऽऽऽ
कर्मक्षय करने में ... सक्षम (मैं) बनूँ !ऽऽऽ
सच्चिदांनंद मय ... 'कनक' मैं बनूँ!ऽऽऽ

(बेदला 4.1.2014 मध्याह्न 3.25)

❑❑❑

किनके लिए कानून की आवश्यकता नहीं

यदि सारे मौजूदा कानूनों को खत्म कर भी दें तो बुद्धिमान व्यक्ति वैसी ही जिंदगी जीता रहेगा। -एरिस्टोफैन्स, प्राचीन ग्रीक नाटककार

आध्यात्मिक जन होते हैं कानून से परे
अपराधियों के लिए होता है कानून
(दोषी को हो कानून का डर-निर्दोषों को नहीं)

- आचार्य कनकनन्दी

(चालः यमुना किनारे..., 2.शत शत वन्दन...)

कोई कार्य अनावश्यक न होता, निरोगी कभी औषधि न लेता।
अकारण कोई काम न होता, सर्वत्र कार्य कारण संबंध होता।। टेक।।
सर्वज्ञ कभी न ग्रंथ पढ़ते, सिद्ध भगवान् न कर्म बाँधते।
सिद्ध (मोक्ष) के बाद न संसारी होते, वीतरागी सन्त न कानून मानते।।
कानून संविधान दण्ड विधान, सामाजिक व्यवस्था के होते नियम।
सामाजिक व्यवस्था से परे वे होते, वीतरागी निस्पृह सन्त जो होते।। (1)
आरम्भ परिग्रह व्यापार कृषि, सेवा शिल्प व घर गृहस्थी।
हिंसा झूठ चोरी कुशील ठगी, मिलावट-शोषण अयोग्य वृत्ति।।
क्रोध मान माया लोभ-प्रवृत्ति, आक्रमण युद्ध आतंक वृत्ति।
अन्याय अत्याचार पाप प्रवृत्ति, फैशन-व्यसनों से जो हुई निवृत्ति।।(2)
ऐसे आध्यात्मिक संत जो होते, कानून संविधान से परे वे होते।
कानून तो सामान्य नैतिक होता, आध्यात्मिक नियम तो परम/(अनन्त) होता।।
यथा तीर्थंकर गणधर आचार्य, उपाध्याय साधु महात्मा नर।
स्वेच्छा से सभी पाप करते दूर, दोष-दुर्गुणों से जो हो गये पार।।(3)
अन्य जन भी जो सज्जन होते, सरल-सहज व निर्दोषी होते।
किसी को भी कभी कष्ट न देते, स्व-पर-उपकारी विवेकी होते।
बिना कानून भी आदर्श होते, कानून ज्ञान बिना भी निर्दोष होते।
कानून से दण्डनीय नहीं वे होते, प्राकृतिक कानून से सहित होते।। (4)
प्लावन सूत्र बिन जलचर तैरते, प्राकृतिक रूप से पक्षी उड़ते।
वैज्ञानिक आविष्कार पूर्वकाल से, पुस्तकीय ज्ञान बिन वे करते।।
कानून ज्ञाता न्यायाधीश मंत्री भी, अपराधी होने पर दण्डनीय ही।
कानून अज्ञ भी यदि निर्दोषी, दण्डनीय नहीं है कानून से भी।। (5)
अतएव कानून न सबसे परे, सत्य अहिंसा शुचि सब से परे।
तथाहि महात्मा सज्जन श्रेष्ठ, संविधान कानून नहीं वरिष्ठ।।

तीर्थंकर बुद्ध साधु सज्जन, समाज सुधारक महात्मा जन।
महात्मा गांधी अब्राहम लिंकन, नेलसन मण्डेला राजाराम मोहन।। (6)
मार्टिन लूथर किंग, कार्ल मार्क्स, डेसमंड टूटू, वालस्टोन क्राफ्ट।
लक्ष्मीबाई दुर्गाबाई, मंगलपाण्डे, लाल बाल पाल सुभाष बोस।।
स्वतंत्रता प्रेमी अनेक सज्जन संत, अयोग्य कानूनों का करते अंत।
जिससे मानवों का होता विकास, लौकिक से लेकर आध्यात्म तक।। (7)
अयोग्य शोषणकारी पक्षपात सहित, अहिंसा सत्य से जो रहित।
अस्वीकार हो सभी क्रूर कानून, जाल में अयोग्य फँसना विहंगम।।
कानून पुलिस व दण्ड भय से, सज्जन भी नहीं करते अच्छे काम भी।
घायलों की सहायता या साक्षी बनना, अन्याय भ्रष्टाचार का विरोध करना।। (8)
दण्ड/(कानून) से दोषी को होना चाहिए डर, निर्दोषी रहे कानून से निडर।
तब ही मानवों का होगा विकास, 'कनक' करे सत्य-साम्य विश्वास।। (9)

(बेदला 6.1.2014 रात्रि, 9.02)

❑❑❑

सत्ता-सम्पत्ति-प्रसिद्धि-बुद्धियुक्त न्यायदाता भी परम ज्ञान-सुख हेतु बनते हैं साधु (भगवान् शान्ति कुन्थु अरहनाथ से प्राप्त शिक्षाएँ)

– आचार्य कनकनन्दी

(चालः यमुना किनारे..., 2.शत शत वन्दन...)

शान्ति कुन्थु अरहनाथ से, तीर्थंकर चक्रवर्ती व कामदेव।
तीन ज्ञान व दो कल्याणक युक्त, तथापि वे साधु बने विरक्त।। टेक।।
इसी से मुझे यह शिक्षा मिलती, सत्ता-सम्पत्ति से न मिले सुख।
ख्याति पूजा लाभ भोग विलास, न मिलता है अनन्त सुख।।
राज्य विस्तार या प्रजा पालन से, नहीं मिलता है परम-सुख।
परिवार स्त्री-देव मानवों से, नहीं मिलता है आत्मिक-सुख।।(1)
शासन-प्रशासन आज्ञा आदेश से, नहीं मिलती है आत्मिक-शान्ति।
न्याय-निर्णय दण्ड-विधान से, नहीं मिलती है परम-शान्ति।।

परिवार पालन विवाह बंधन, जन्म-मरण से न मिले शान्ति।
युद्ध विजय शत्रु दमन, प्रशस्तिलेख से न मिले शान्ति।। (2)
तीन ज्ञान भी न परमज्ञान, शरीर-सुंदर न आत्म वैभव/(सौंदर्य)।
इसलिए वे दीक्षा लेकर, आत्म-उपलब्धि हेतु वन-गमन।।
दीक्षा लेते ही चार ज्ञान व, चौसठ ऋद्धि से होते सम्पन्न।
तथापि मौन साधना से, अनन्त चतुष्टय हेतु करते ध्यान।। (3)
आत्मविशुद्धि द्वारा घाति क्षय से, जब वे बनते सर्वज्ञ देव।
तब ही विश्वकल्याण हेतु, उपदेश देते सर्वज्ञ देव।।
अनन्त ज्ञान दर्शन सुख वीर्यमय, अनन्त चतुष्टय से होते सम्पन्न।
दोष अठारह रहित होने से, उनके उपदेश सत्य सम्पन्न।। (4)
उनके उपदेश ही परम मान्य, स्व-पर-विश्व कल्याण हेतु।
राग-द्वेष व काम मोह युक्त, अन्य के वचन नहीं कल्याण हेतु।।
तथाहि अन्य तीर्थंकर केवली, गणधर साधु बुद्ध सन्तादि।
स्व-स्व सत्ता सम्पत्ति त्यागकर, सुख प्राप्ति हेतु बने संन्यासी।। (5)
अतएव ज्ञान-विज्ञान-कानून, जो सत्य-तथ्य सहित होते।
वे ही मान्य अन्यथा नहीं, 'कनकनन्दी' यह शिक्षा लेते।। (6)

(बेदला, 7.1.2014 मध्याह्न 2.52)

❑❑❑

अभी भी है भारत में अनेक परतंत्रता

- आचार्य कनकनन्दी

(रागः 1.आत्मशक्ति...., 2. शत-शत वन्दन)

दीर्घकालीन परतंत्रता से, भारत की बहु विध हुई क्षति।
धन-जनहानि संस्कृति विकृति, वैचारिक क्रांति की हुई क्षति।। 1
शक हूण मुगल मुसलमान, पठान अंग्रेजों ने किया आक्रमण।
हजारों वर्ष भारतवर्ष, आक्रमणों से हुआ संक्रमण/(संत्रस्त)।। 2
जिससे भारत की मूल संस्कृति, विकृत हुई व वृद्धि न हुई।
ज्ञान-विज्ञान-भाषा-परम्परा, कानून राजनीति शुद्ध न रही।। 3
आध्यात्मिकता हमारी मूल संस्कृति, जिससे होती अनन्त शक्ति/(वृद्धि)
अक्षय अनन्त ज्ञान-दर्शन सुख, वीर्य की होती उपलब्धि।। 4

इसी के पहले संसार संबंधी, संपूर्ण विकास/(उपलब्धि) की होती है प्राप्ति।
ज्ञान-विज्ञान गणित राजनीति, सत्ता-सम्पत्ति की होती है प्राप्ति।। 5

दीर्घकालीन गुलामी के कारण, स्वतंत्रता न रही किसी में।
संस्कृति सभ्यता भाषा परम्परा, साधना आराधना राजनीति में।।6

जिससे वैचारिक स्वतंत्रता न रही, नहीं रही भी अभिव्यक्ति की।
लेखन-पठन शोध-बोध व, निर्माण प्रचार अधिकार की।। 7

हीनता-दीनता कुंठा नैराश्य, ईर्ष्या द्वेष घृणा भाव भी जन्मे।
क्रोध प्रतिरोध वैर विरोध, प्रति हिंसा के भाव भी जन्मे।। 8

सैंकड़ों वर्षों के आंदोलन से, भारत पुनः स्वतंत्र हुआ।
राजनीतिक हस्तांतरण हुआ, पूर्ण स्वतंत्र अभी (भी) न हुआ।। 9

केवल गोरा (अंग्रेज) गये, काला अंग्रेज शासक बने।
गुलाम मानसिक शासक अभी भी, देश (राष्ट्र) के शोषक बने।। 10

संविधान या कानून प्रशासन, हमारी संस्कृति के सम न बने।
विदेशी संस्कृति परम्परा से, ज़ोड़तोड़ कर यह सब बने।। 11

शिक्षा-पद्धति हमारी न बनी, मैकाले/(विदेशी) की बनी शिक्षा पद्धति।
तथाहि भाषा न्यायिक प्रक्रिया, पुलिस व्यवस्था विदेशी (गुलाम) रही।। 12

अहिंसा धर्म का होता हनन, बूचड़खाना में पशुवध से।
सत्य का बोध होता सर्वत्र, संसद से न्यायालय तक में।। 13

आध्यात्मिकता तो दासी हो गयी, भौतिकता बन गयी है रानी।
अतएव भ्रष्टाचार फैला है, शांति सम्वृद्धि हो रही कुर्बानी।। 14

लिव इन रिलेशनशिप, समलैंगिकता, वधशाला व मधु की मान्यता।
भारतीय संस्कृति के योग्य नहीं, मांस निर्यात भी योग्य नहीं।। 15

अभी भी अन्य गुलाम वृत्ति, यत्र तत्र कर रही प्रवृत्ति।
स्वतंत्र मौलिक महान् कार्य में, भारतीयों को नहीं प्रवृत्ति।।16

स्वतंत्रता से ही होता विकास, परतंत्रता से होता विनाश।
स्वच्छन्दता त्यागो स्वतंत्र बनो, 'कनकनन्दी' का तुम्हें आशीष।। 17

(बेदला 6.1.2014, रात्रि 12.25 से 2.02)

❑❑❑

नेता की आत्मकथा

(नेता का स्वरूप)

(तर्ज : नाम तिहारा ..., 2. भोली मेरी माँ..., 3. जीना यहां...,
4. नगरी-नगरी...)

नेता मेरा नाम है, नेतृत्व मेरा काम है।
स्वपर के हित साधने, होता मेरा काम है।... (टेक)
कर्मभूमि के प्रारंभ में, "कुलकर" मेरा नाम है।
मानवों के हित करने से, 'मनु' मेरा नाम है।
आदि महानेता ऋषभ हुए, "आदिनाथ" शुभ नाम है।
शिक्षा संस्कृति राजनीति के, आद्य प्रवर्तन काम है। ... (1) नेता मेरा...
उनके पुत्र भरत हुए, प्रथम चक्री अभिराम है।
जिनके नाम पर आर्यावर्त का, भारत हुआ नाम है।।
और भी तेइस तीर्थंकर जो, धर्म साम्राज्य के नेता हैं।
और भी ग्यारह चक्रवर्ती, राज्यशासन के नेता है।। (2) नेता मेरा...
और भी अनेक अर्द्धचक्री हुए, राजा व महाराजा हैं।
राज्यशासन के नेता हुए, पाले अपनी प्रजा हैं।।
प्राचीनकाल में भारत में हुए, लोकतंत्रात्मक नेता हैं।
लिच्छिवि आदि गणतंत्र के, प्रजापालक नेता हैं। ...(3) नेता मेरा...
नेतृत्व द्वारा मानव जाति को, आगे बढ़ावे सो नेता हैं।
सामाजिक से आध्यात्म तक, होते विभिन्न नेता हैं।।
धर्म, अर्थ, काम मय राज्य, होता राज्य शासन में।
धर्म मोक्ष मूलक शासन, होता है आत्मिक शासन में।।...(4) नेता मेरा...
भारत में जब राजतंत्र में, न रहा सही नेतृत्व।
दीर्घकाल तक गुलाम रहा, भारत जैसा प्रभुत्व।।
राणा प्रताप शिवाजी तथा, लक्ष्मीबाई के नेतृत्व।
मंगलपाण्डे खुदीराम बोस, सुभाषचंद्र प्रभुत्व।। ... (5) नेता मेरा...
विवेकानंद अरविंद, दयानंद प्रभुत्व।
लाल-बाल-पाल गाँधी, सावरकर के नेतृत्व।।

भारत पुनः आजाद हुआ, तोड़ पराधीन बंधन।
ऐसा है मेरा काम काटे, जो सबका बंधन।। ... (6) नेता मेरा...
मेरा भी जन्म विदेशों में होता, विविध रंग रूप में।
कन्फूसियस, कार्लमॉर्क्स, वाशिंगटन आदि में।।
लिंकन, अब्राहम, लूथरकिंग, मंडेला आंग सान सू हैं।
लोकतंत्र व समाजवाद, इनकी महान् देन है।।...(7) नेता मेरा...
मेरा नाम पे आज कलंक, लगाये इंडियन नेता हैं।
लोक सेवक बनके आज, बने तानाशाही नेता हैं।।
भ्रष्टाचार व स्वार्थसिद्धि के, आज पुरोधा नेता हैं।
देश बेचकर आज बने हैं, राष्ट्र के सर्वोच्च नेता हैं।। ...(8) नेता मेरा...
"कनकनन्दी" तो काव्य द्वारा, जगाये भारतीय आत्मा को।
भारत जगकर विश्वगुरु बने, दे नेतृत्व विश्व को।। ...(9) नेता मेरा...

□□□

मानवीय कलंक को मिटाने वाले
महामानव अब्राहम लिंकन

(राग : 1.शत-शत वंदन..., 2. है अपना दिल तो...)

हुआ था एक महामानव, नाम था अब्राहम लिंकन
मिटाया मानव जाति-कलंक, दास-प्रथा रूपी महाकलंक।।
परिवार था उनका निर्धन, पंकज/(कमल) रस खिले लिंकन।
मृदुल सरल वीर न्यायप्रिय, दास उद्धारक मानव प्रिय।
धीर-वीर धैर्यशाली गंभीर, हार न मानने वाले कर्मवीर।
लोकतंत्र के हैं अमोद्य वीर, मानव अधिकार के उन्नत शिर।।
उदार व्यापक विचारशील, परोपकारी मननशील।
न्याय राजनीति समता नेता, अमेरिका के महान् नेता।।
अन्तःकरण को मानने वाले, पवित्र विचार करने वाले।
दास-प्रभु को न मानने वाले, समता-शासन पालने वाले।।
शत्रु को भी मित्र मानने वाले, मित्र बनाकर मिटाने वाले।
तन-मन-धन-सत्ता-समय, सदुपयोग में किया नियोग।।
तुम्हारे आदर्श मानव पाले, सत्ता-सम्पत्ति सम्पन्न वाले।
पृथ्वी में न्याय का शासन होगा, 'कनक' का भाव सफल होगा।

सर्वोदय के विभिन्न ज्ञाता-प्रवक्ता एवं कार्यकर्ता

(राग : 1. जय हनुमान ज्ञान...)

सर्वोदय के हुए विविध प्रवक्ता ... प्राचीन काल से अभी तक के।
विभिन्न क्षेत्र व काल खंड के ... उनका योगदान बहुत/(बहुविध) हुए।। (1)
आदि तीर्थंकर 'ऋषभदेव' ... प्रजाहित हेतु षट्कर्म कहा।
असि मसि कृषि वाणिज्य .. शिल्प सेवा का उपदेश दिया।। (2)
ऋषभदेव से पहिले भी कुछ ... "कुलकर-मनु" भी चौदह हुए।
भोगभूमि के आर्य के बाद ... दुःखित प्रजा का उपकार किये।। (3)
भोगभूमि के 'आर्य' लोग तो ... चौसठ कला से सहित थे।
अक्षर चित्र गणित शिल्प व... संगीत कला में निपुण थे।। (4)
इनका यह ज्ञान था स्वाभाविक ... पूर्व कर्म संस्कार से सहज था।
भोगभूमि के अन्त तक यह ज्ञान ... धीरे-धीरे लोप होता गया।। (5)
कर्मभूमि के प्रारंभ पहले तथा ... भोगभूमि के अन्तकाल में।
पुण्यकर्मजन्य संस्कारहीन से ... ज्ञानहीन होता गया अंत में।। (6)
जिससे वे सब संत्रस्त हुए ... उसी काल की समस्या से।
समस्याओं के समाधान हुए ... उसी काल में मनुओं से।। (7)
ग्रहों का ज्ञान 'प्रतिश्रुति' ने दिया ...तारों का ज्ञान 'सन्मति' मनु से।।
पशुपालन 'क्षेमंकर' ने सिखाया ... पशु से सुरक्षा 'क्षेमंधर' ने।। (8)
सीमा निर्धारिक 'सीमंकर' हुए ... कल्पवृक्षों की सीमाएँ बाँधी।
सीमा चिह्नित 'सीमन्धर' ने किया ... कलह निवारण हेतु ये किया।। (9)
पशु सवारी के हुए उपदेशक ... 'विमलवाहन' नामक कुलकर।
संतान को बताने वाले हुए ... 'चक्षुष्मान' नामक कुलकर।। (10)
आशीर्वाद उपदेशक 'यशस्वान' हुए ... चंद्रदर्शक 'अभिचन्द्र' हुए।
जन आल्हादक 'चन्द्राभ' हुए ... नौका उपदेशक 'मरुदेव' हुए ।। (11)
प्रसेनजित हुए जरायु शोधक ... नाभिकर्तक हुए 'नाभिराय'।
दोष निवारक व दण्ड विधायक ... हुए वे कुलकर आद्यप्रवर्तक।। (12)
कुलकर अनन्तर आदिनाथ हुए ... नाभिराय के जो पुत्र महान्।
सर्वोदय से श्रेष्ठतम प्रवक्ता ... लौकिक-आध्यात्मिक दोनों निदान।। (13)
जीवन निर्माण से निर्वाण तक ... समस्त विधा का किया उपदेश।
रत्नत्रयरूपी मोक्षमार्ग द्वारा .... गुणस्थान-अपेक्षा किया निर्देश।। (14)

उनके शत पुत्र दो पुत्रियाँ हुई ... जिनसे अंकाक्षर विद्याएँ हुई।
राजनीति से धर्मनीति तक ... अनेक विद्यायें/(विधाएँ) प्रारंभ हुई।। (15)
तथाहि और भी तेइस तीर्थंकर ... गणधर आचार्य पाठक हुए।
साधु महात्मा तथा गौतम बुद्ध ... लेखक चिंतक ऋषि मुनि भी हुए।। (16)
रामकृष्ण व्यास याज्ञवल्क्य ऋषि ... बाल्मिकी कणाद कपिल हुए।
चरक सुश्रुत वाक् भट्टाचार्य ... पतञ्जलि अष्टावक्र भी हुए।। (17)
विदेशों से भी हुए दार्शनिक ... सुकरात पाइथागोरस प्लेटो।
अरस्तु कन्फ्यूशियस ईसा मसीह.. लोयेत्से से लेकर कार्ल-मार्क्स।। (18)
तथाहि राजनेता अनेक हुए ... देश-विदेशों में गुणी महान्।
वाशिंगटन व अब्राहम लिंकन ... लाल बाल पाल गाँधी महान्।। (19)
नेताजी सुभाष विनोबा भावे ... भगत सिंह व चंद्रशेखर।
नेल्सन मण्डेला मार्टिन लूथर (किंग) ... बनार्ड शॉ रस्किन टालस्टाय।। (20)
सेवा (क्षेत्र) में नाईटेंगल मदर टेरेसा ... रोटरी व लायन्स क्लब।
रेडक्रॉस या एम्बुलेंस तथा ... यूनिसेफ नारायण (सेवा) संस्था।। (21)
संयुक्त राष्ट्र संघ पर्यावरण सुरक्षा ... मानवाधिकार पशुरक्षा संस्था।
विश्वधर्म संसद एनसीसी संस्था ... धर्मार्थ संस्था से होता ये काम।। (22)
वैज्ञानिक लेखक कवि चिंतक आदि ... समाजसेवक जन करते काम।
'कनकनन्दी' भी सदा प्रयासरत ... शिष्य-भक्तों के द्वारा करते काम।। (23)

❑❑❑

सर्वोदय भजनीय ... परतंत्रता त्यजनीय

(बहुभाषीय-बहुरागीय सर्वोदयी गीत)

(चाल : 1. सायोनारा..., 2. तुम दिल की...)

सतत स्वात्मा स्मरणीय... नित्य सत्कर्म करणीय...
सतत गुण वरणीय ... दुर्गण सदा त्यजनीय ...
वैभाविक गुण त्यजनीय ... आत्म स्वरूपे रमणीय...
उदार भाव करणीय ... वैश्विक कुटुम्ब भावनीय ...
अंधश्रद्धा त्यजनीय ... सत्य श्रद्धान/(विश्वास) भजनीय ...
मिथ्याज्ञान त्यजनीय ... सम्यक् ज्ञान ग्रहणीय...

मिथ्या चारित्र त्यजनीय ... सदाचरण पालनीय ...
क्षमा धर्म धारणीय ... क्रोध भाव त्यजनीय ...
मृदु भाव वरणीय ... अहंभाव/(अहंकार) त्यजनीय...
आर्जव धर्म पालनीय ... कुटिल भाषा त्यजनीय...
सत्य सदा धारणीय ... असत्य सदा वर्जनीय ...
शुचि भाव वरणीय ... लोभ भाव त्यजनीय...
संयम धर्म पालनीय ... प्रमाद भाव वर्जनीय...
इच्छा निरोध करणीय ... तप धर्म पालनीय ...
परिग्रह त्यजनीय ... त्याग धर्म पालनीय ...
मैथुन भाव त्यजनीय ... ब्रह्मस्वरूपे रमणीय ...
संकीर्णता त्यजनीय ... वैश्विक भाव भजनीय...
परतंत्रता त्यजनीय ... सर्वोदय सेवनीय ...
सच्चिदानन्दे रमणीय ... सर्व विभाव त्यजनीय ...
"कनक" द्वारा भावनीय ... स्वात्मोपलब्धि करणीय...

❑❑❑

पावन भावना एवं व्यवहार

(रागः अच्छा सिला दिया...)

"सत्यमेव जयते" का गाना गायेंगे, सदाचरण को सदा पालेंगे।
"परस्पर उपग्रहो" काम करेंगे, वैर-विरोध ईर्ष्या नहीं करेंगे।। (ध्रुवपद)।।
"अहिंसा परमो धर्म" हम पालेंगे, पर्यावरण सुरक्षा हम करेंगे।
"हित-मित-प्रिय" हम बोलेंगे, अन्यथा मौन हम पालेंगे।। (1)
"जीओ और जीने दो" काम करेंगे, वैश्विक शान्ति हम लायेंगे।
"विद्या ददाति विनय" हम पढ़ेंगे, विनम्र भाव से हम बढ़ेंगे।। (2)
"यथा बोया तथा पाया" हम मानेंगे, पुरुषार्थ से हम भाग्य पायेंगे।
"आत्मदीप परदीप" हम बनेंगे, तम विनाश/(अन्धेरा नाश) हेतु ज्योति बनेंगे।। (3)
"लोभ पाप का बाप" हम मानेंगे, शोषण भ्रष्टाचार नहीं करेंगे।
"संतोष परम सुख" हम मानेंगे, भोग लालसा तृष्णा नहीं करेंगे।। (4)
"भाव से भाग्य निर्माण" हम करेंगे, स्वर्ग-नरक-मोक्ष हम मानेंगे।
"वस्तु स्वभाव धर्म" हम मानेंगे, समता भाव से हम जीयेंगे।। (5)

"विश्वगुरु अनेकांत" को मानेंगे, उदार-सहिष्णु हम बनेंगे।
"स्याद्वादमयी वाणी" बोलेंगे, पूर्वाग्रह-दुराग्रह हम त्यजेंगे।। (6)
"गुरु गुणी जनों" को हम मानेंगे, अनक्षरी ज्ञान (पाठ) हम पढ़ेंगे।
"तोतारटन्त पाठ" नहीं पढ़ेंगे, वाचन-पाचन-अनुभव करेंगे।। (7)
"सत्य समता शान्ति" हम पायेंगे, आदर्शमय जीवन हम जीयेंगे।
"नहि ज्ञानेन सदृश्यमिह विद्यते", आध्यात्म ज्ञानमय हम बनेंगे।। (8)
"प्रमत्तभावमय हिंसा" छोड़ेंगे, आध्यात्मिक विकास हम करेंगे।
"ढोंग-पाखंड आडम्बर" त्यजेंगे, सरल-सहज-पावन बनेंगे।। (9)
सात्विक भोजन हम करेंगे, फैशन-व्यसन नहीं करेंगे।
सनम्रसत्यग्राही हम बनेंगे, अन्धानुकरण नही करेंगे।। (10)
स्व-पर उपकारी बनेंगे, विश्वमैत्री भाव हम धरेंगे।
उदार पवित्र भाव हम धरेंगे, 'कनक' की भावना मोक्ष वरेंगे।। (11)

❑❑❑

अनुशासन की आत्मकथा

(अनुशासन के विविध रूप पालन से लाभ तथा भंग से हानि)

(राग : 1. सुनो-सुनो ऐ दुनिया वालों..., 2. पूजा पाठ रचाऊँ...)
सुनो सुनो हे दुनिया वालों, मेरा नाम है अनुशासन।
मेरे सहयोग बिना न कोई, हो सुकार्य जग में जानो।...(टेक)
मैं हूँ व्याप्त हर काम में, आध्यात्मिक से लौकिक तक
मेरे सहयोग बिना हर काम, होता असफल निश्चित जान
आत्मानुशासन, मनानुशासन, इन्द्रियशासन, शरीरशासन
समयानुशासन, धनानुशासन, साधनानुशासन विविध नाम (1)
सर्वानुशासन में आत्मानुशासन, सर्वश्रेष्ठ-ज्येष्ठ-क्लिष्ट भी जानो
इसी शासन से सर्वानुशासन, शासित होते निश्चय मानो
यथा ही विद्युत् चालित यंत्र में, विद्युत् होता प्रमुख जानो
तथावत् ही आत्मानुशासन, हर शासन में प्रधान मानो...(2)
आत्मशासन से साधा जाता, विश्वश्रेष्ठ कार्य मोक्ष निदान
मनानुशासन द्वितीय प्रमुख, जिससे शासित अन्य शासन

इसलिए ही कहा जाता है, "मनएव मनुष्याणां बन्ध मोक्षयो"
मन वश से इन्द्रियाँ वश, जिससे शरीर भी होता वश (3)
इन्हीं शासनों से समयानुशासन, होता शासित निश्चय जानो
हर समय होता सदुपयोग, जिससे होता है कार्य महान्
"पमायेण एक समय ण मुक्कउ", ऐसा आदेश वीर प्रभु का
"संयम जीवन असंयम मरण", ऐसा भी शासन अतिवीर का। (4)
धनानुशासन से न्यायोपार्जन, अपरिग्रह भी इससे जानो
सदुपयोग भी इससे होता, अन्यथा शोषण-परिग्रह मानो
साधन के अनुशासन से, साधनों का होता सदुपयोग
साधना के अनुशासन से, साध्य की सिद्धि होती निदान
मेरा आदर जो नहीं करता, मेरे कोप का होता भाजन
उसका कार्य करता नाश, धन जन का भी करूँ विनाश
मेरा शासन अति कठोर, पालनकर्त्ता को करूँ निहाल
भंग जो करे मेरा शासन, कठोर दंड से करूँ कंगाल
दुर्घटना से अपमृत्यु तक, विभिन्न दण्ड से करूँ प्रहार
मेरा दण्ड यदि नहीं चाहते, मेरे शासन का करो आदर
'कनकनन्दी' की लेखनी द्वारा, मेरा स्वरूप का हुआ वर्णन
कार्य संपादन सुख शान्ति हेतु, मेरी आज्ञा का करो पालन।

❑❑❑

न्यायाधीश की आत्मकथा

(योग्य न्यायमूर्ति एवं अयोग्य न्यायमूर्ति का स्वरूप)

(राग : 1. नगरी-नगरी..., 2. शायद मेरी...., 3. पावन है...)

मैं हूँ न्यायमूर्ति न्याय करना है मेरी सहज वृत्ति
अपना-पराया, धनी-गरीब बिन मम सहज प्रवृत्ति...(टेक/स्थायी)
कर्मभूमि के प्रथम चरण में पहला चरण जन्म हुआ
'मनु' रूप में मेरा संबोधन सबसे पहले प्रसिद्ध हुआ।
'हा' 'मा' 'धिक' रूप में वाचनिक, दण्ड से प्रारंभ हुआ
दोषानुरूप से दण्ड विधान चिकित्सा समान प्रयोग किया...(1)

प्रथम श्रेष्ठ न्यायधिपति में 'ऋषभ' रूप में प्रसिद्ध हुआ।
भरत चक्री रूप में ऋषभ के पुत्र स्वरूप में प्रगट हुआ।
तभी से अभी तक मैं करोड़ों, न्यायमूर्ति रूप न्याय दिया
राजतंत्र से लोकतंत्र तक, देश-विदेश में न्याय किया... (2)

राजतंत्र में स्वयं राजा ही, मुख्य न्यायाधीश होता था
मंत्री, पुरोहित, न्यायमूर्ति सह, निर्णय स्वयं ही लेता था
अभयकुमार, विक्रमादित्य आदि, मेरा श्रेष्ठ न्यायिक रूप है
सत्यनिष्ठ निष्पक्ष रूप से निर्भयता से न्याय स्वरूप है... (3)

न्यायानुसार स्वयं को या स्वजन को भी दण्ड मैं देता हूँ
लोभ, राग, द्वेष, ईर्ष्या मोहवश पक्षपात मैं न करता हूँ
इसलिए मुझे धर्मराज, न्यायाधीश न्यायमूर्ति कहते
दण्डाधिकारी, न्यायाधिपति या न्यायकर्ता भी मुझे कहते... (4)

मेरे कारण भी समाज राष्ट्र में, न्याय-नीति रक्षा होती
सुख समृद्धि सदाचार शान्ति समता निर्भयता होती
मेरे बिना ये संभव न होंगे, 'मत्स्य न्याय' का होगा प्रसार
जंगली राज्य का विस्तार होगा, दुर्बल सज्जन का होगा संहार... (5)

हाय रे! दुर्भाग्य मेरे नाम पर कुछ पापी होते हैं न्यायधीश
न्याय के नाम पर अन्याय करते, मेरी शुचिता का करते विनाश
धन, मान, प्रसिद्धि के हेतु अथवा स्वार्थ या पक्षपात से
राग, द्वेष या मोह अज्ञान से अथवा दबाव रूढ़ कानून से... (6)

करते जो फैसला अविवेकी, सत्य-तथ्य-न्याय से विपरीत
सच्चे न्याय की हत्या करके, करते निर्दोष दंडित
स्वतंत्र भारत में अभी भी चलते, विदेशी शासक / (गुलाम भारत) के कानून
वकील प्रायोजित झूठे साक्षी भी, आधारित फैसला हेतु कानून ... (7)

इसलिए तो फैसला भी अति देरी से होता है भारत में
मुकदमों का पहाड़ लगा है आध्यात्मिक भारत में
कर्तव्यनिष्ठा से न्यायालय यदि सक्रिय होता है कभी-कभी
प्रभावशाली दोषी आरोप लगाते हैं न्यायालय न होता ऐसा कभी ... (8)

विधायिका व कार्यपालिका में, चलता अभी है जंगली राज
सत्य-न्याय व समता बिन भारत में बल का राज/(मत्स्य का राज)
इसलिए मेरे सत्य रूप का अति आवश्यक इस देश में
मम स्वरूप बताने हेतु 'कनकनन्दी' का प्रयास इस रूप में... (9)

❑❑❑

सार्वभौम हैं महावीर के सिद्धांत

(भगवान् महावीर के सिद्धांतों से प्राप्त शिक्षायें)

महावीर के सिद्धांत शाश्वत होते, देश काल जाति परे सबके होते।
यथा सीमा-बद्ध नभ नहीं होता सबके आधारभूत आकाश होता।। (टेक)
अनेकांत अहिंसा व अपरिग्रह, अचौर्य व ब्रह्मचर्य समतामय।
स्याद्वाद सत्यनिष्ठा क्षमा संयम, विनय त्याग तपस्या पावनमय ।। (1)
अनेकांत व्यापक दृष्टिकोण बताता, सत्यग्राही, बनने की प्रेरणा देता।
इसी से संकीर्ण दृष्टि विनाश होती, मताग्रही दृष्टि कभी नहीं रहती।। (2)
सर्वजीव अधिकार अहिंसा दृष्टि, सहअस्तित्व शाकाहार यह बताती।
युद्ध हत्या आत्महत्या सर्व मिटाती, पर्यावरण सुरक्षा इसी से होती।।(3)
परिग्रह द्वि-विध बहिरंग व अन्तः, क्रोधमानमायालोभ होते हैं अन्तः।
धन-धान्य दासी-दास होते हैं बहि, दोनों से विभिन्न कष्ट होते हैं सही।। (4)
परिग्रह से तनाव कलह होते, प्रकृति हनन व प्रदूषण भी होते।
शोषण युद्ध व हत्या भी होते, मिलावट भ्रष्टाचार आतंक होते।। (5)
अपरिग्रह से यह सब न होते, आदर्श साम्यवादी जन सर्वत्र होते।
साम्यवाद हेतु न होता भी युद्ध, साम्यवाद से भी अधिक विशुद्ध।। (6)
अचौर्य से न होता मिलावट व चोरी, डाका डालना या कर्त्तव्य चोरी।
हीनाधिक माप तौल या तस्करी, परीक्षा में नकल या रिश्वतखोरी।। (7)
ब्रह्मचर्य से न होता जनसंख्या विस्फोट, परस्त्री गमन या वेश्या-गमन।
एड्स रोग न होता जो प्राणहारी, पूर्ण ब्रह्म से मिले आध्यात्मपुरी।। (8)
समता से छोटा-बड़ा कोई न होता, धनी-गरीब का भेदभाव न होता।
तनाव दुःख संताप कुछ न होते, रागद्वेषमोहघृणाईर्ष्या न होते। (9)

स्याद्वाद-सत्य-कथन पद्धति श्रेष्ठ, सत्यांश कथन से न होता अनिष्ट।
वाद-विवाद कलह हठ न होते, शेष सत्यांश गुण-धर्म लोप न होते।। (10)
सत्यनिष्ठा से असत्य दूर हो जाते, कूट-कपट-मायाचारी-धोखा न होते।
सत्य में अनंत शक्ति निहित होती, सत्यनिष्ठा से यह शक्ति प्रगट होती।। (11)
क्षमा से वैर विरोध द्वेष न होते, शरीर-मन-आत्मा स्वस्थ भी होते।
पूर्वार्जित पाप-कर्म नष्ट भी होते, आध्यात्मिक गुण-धर्म प्रगट होते।। (12)
संयम से अनर्थभावकाम न होते, तन-मन-आत्मा के बल बढ़ते।
समय-शक्ति-साधन व्यर्थ न होते, स्व-पर विकास हेतु खर्च भी होते।। (13)
विनय से ज्ञान-गुण शोभा को पाते, विनय से आत्मगुण विकास होते।
स्नेह सहयोग संगठन बढ़ते, विनय से इहपरलोक सुखी बनते।। (14)
त्याग से स्व-पर उपकार ही होता, अंतरंग-बाह्य-रूप त्याग जो होता।
अंतरंग त्याग से जीव पावन होता, बहिरंग त्याग से परिग्रह छूटता।। (15)
तृष्णा त्याग ही यथार्थ से तपस्या होती, तृष्णा त्याग से दुःखों की निवृत्ति होती।
तृष्णा-त्याग से लोभ का त्याग हो जाता, लोभ-त्याग से पाप का बाप नशता।। (16)
इन कारणों से जीवन पावन होता, पावन जीवन अमृतमय हो जाता।
जिससे जीवों को शाश्वतिक सुख मिलता, इसी हेतु "कनक" प्रयास करता।। (17)

❑❑❑

सर्वोदयी भारतीय संस्कृति

(चालः चंदा मामा दूर के..., 2. क्या मिलिये...)

आर्य संस्कृति सबसे प्यारी ... जैन संस्कृति सबसे न्यारी।
प्रकृति रक्षण करने वाली ... आत्मिक विकास करने वाली ... (ध्रुव पद)
यहाँ की धरती पावन वाली ... षट ऋतु (व) शस्य श्यामला वाली
नदी पर्वत जंगल वाली ... ह्रद समुद्र से सहित वाली ...
तीर्थंकर बुद्ध जननी वाली ... ऋषि मुनि-आचार्य की प्रिय जननी
ज्ञानी-विज्ञानी गणितज्ञ कवि ... आयुर्वेद कलाज्ञ की आप जननी।
आपसे सभ्यता संस्कृति जन्मी ... अहिंसा समता शान्ति विस्तरी
आध्यात्मिकता व मुक्ति प्रदायी ... विश्व गुरुत्व की आप दातारी
विश्व कुटुम्ब की शिक्षा दात्री ... वैश्विक शान्ति आप प्रदात्री

अनेकांत स्याद्वाद शिक्षादात्री .. आत्मिक शान्ति आप प्रदात्री
भारतीय जन तुम्हें भूल गये (हैं) ... भौतिक भोग में मस्त हो गए (हैं)
जिससे अन्याय पाप बढ़े (हैं) ... शोषण भ्रष्टाचार रोग बढ़े (हैं)
पाश्चात्य लोग तुम्हें मान रहे ... शोध-बोध में आगे बढ़ रहे...
बहुविध विकास वे कर रहे ... इण्डियन उनका फॉलो कर रहे
भारतीय अभी तुम जाग जाओ ... स्व-संस्कृति को शीघ्र अपनाओ
सर्वोदय सुख तुम भी पाओ ... 'कनकनन्दी' के आशीष पाओ...

❑❑❑

विश्वगुरु भारत माता

(रागःचालः ओडिसी, बंगला...)

वन्दे भारत जननी ... जननी जननी जननी ऽऽऽ
धृत पयोदधि तव पद कमला ... शिर पर शोभित मुकुट हिमालया,
जननी 3 ऽऽऽ (ध्रुवपद)
नद-नदी-झरना तव रक्त शिरा ... वन-उपवन शोभित शरीरा ऽऽऽ
शस्य श्यामला चारुवदना ... पशु-पक्षी-मानव तव वाला ऽऽऽ
जननी ....3 ऽऽऽ (1)
तीर्थंकर बुद्ध-ऋषि प्रसूता .. ज्ञानी विज्ञानी कवि की माता ऽऽऽ
आयुर्वेद संगीतज्ञ गुणी की माता ... लेखक तत्त्वज्ञ-वीरों की माता ऽऽऽ
जननी ....3 ऽऽऽ (2)
शिक्षा-संस्कृति आध्यात्म दात्री ... धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष प्रदात्री ऽऽऽ
ज्ञान-विज्ञान-गणित जननी ... न्याय-राजनीति-कला प्रदात्री ऽऽऽ
जननी ....3 ऽऽऽ (3)
"वसुधैव कुटुम्ब" (की) आप प्रदात्री ... अनेकांत-स्याद्वाद-अहिंसा प्रदात्री ऽऽऽ
"सत्य-शिव-सुंदर" बोधदात्री ... चार आश्रम की प्रबोधनदात्री ऽऽऽ
जननी ....3 ऽऽऽ (4)
विश्व गुरुत्व से आप शोभिता/(पण्डिता)... नर-सुर-विद्याधर मण्डिताऽऽऽ
स्वर्गलोक से भी आप गरिष्ठा/(श्रेष्ठा) ... 'कनकनन्दी' चाहे तव प्रतिष्ठाऽऽऽ
(वन्दे भारत जननी... जननी जननी जननी ऽऽऽ)

❑❑❑

66वें स्वतंत्रता दिवस के उपलक्ष्य में
"अभिनंदन हे! विश्वगुरु भारत"

(भारतीय महान् इतिहास एवं हमारा कर्त्तव्य)

(रागः होठों पे सच्चाई..., सायोनारा..., तुम दिल की धड़कन...)

विश्व वन्दित अभिनंदित ... विश्वगुरु भारत है।
इसका नाम ही आर्यावर्त व ... अजनाभि देश है।। ।।ध्रु.।।
पहले से यहाँ आर्य रहते थे ... इसलिये आर्यावर्त।
नाभिराय के कारण से हुआ ... अजनाभि यह देश।।
इनके पुत्र ऋषभदेव ... हुए प्रथम तीर्थंकर।
ज्ञान-विज्ञान शिक्षा संस्कृति ... जिनसे हुआ प्रचार ।। (1)
इनके पुत्र भारत से हुआ ... भारत देश है नाम।
ब्राह्मी पुत्री से ब्राह्मी लिपि व ... सुंदरी से अंक ज्ञान।।
इसी देश में जन्म लिये हैं ... 'मनु' या 'कुलकर'।
मानव नामकरण इनसे हुआ ... नृवंश रूपी नारी-नर।। (2)
इसी देश में जन्मे हैं ... बुद्ध ज्ञानी मुनि विद्याधर।
लेखक कवि गणितज्ञ ... आयुर्वेदज्ञ कलाधर।।
जिनसे जन्मा ज्ञान-विज्ञान ... आध्यात्मिक महाज्ञान। (3)
जिसके कारण भारत बना ... "विश्वगुरु" महान्।
इसी देश की हम हैं संतान ... हमें बनना है महान्।
मन वचन काय आत्मा कृति से ... करके कार्य महान्।।
"आत्मसंस्कृति' व 'विश्वबन्धुत्व' ... से करना है 'सर्वोदय'।
स्व-पर-विश्व कल्याण करना ... 'कनकनन्दी' का है ध्येय।। (4)

❑❑❑

भारतीय संस्कृति की विशेषताएँ

('भारतीय संस्कृति : आध्यात्मिक संस्कृति')

(रागः तुम दिल की ..., क्या मिलिये ऐसे..., सायोनारा)

भारतीय संस्कृति सबसे प्यारी ... आर्य संस्कृति सबसे न्यारी।
आध्यत्मिक संस्कृति सहित वाली ... सर्वोदय करने वाली ।। ध्रु.।।

अणु से विश्व/(ब्रह्माण्ड) सहित वाली ... आत्मा को परमात्मा करने वाली
वैश्विक कुटुम्ब सहित वाली ... सत्य अहिंसा समता वाली।।
तन-मन आत्मा स्वस्थ वाली ... चार आश्रम सहित वाली।
चार पुरुषार्थ युक्त वाली ... परम लक्ष्य मुक्ति वाली।। (1)
शिक्षा कला सभ्यता वाली ... गणित विज्ञान/(साहित्य) संगीत वाली
आयुर्वेद व्याकरण नृत्य वाली ... शोध बोध खोज प्रयोग वाली।।
नदी नद समुद्र रक्षा वाली .. पशु पक्षी वृक्ष रक्षा वाली।
स्व-पर विश्व कल्याण वाली ... वैश्विक शान्ति प्रबोधन वाली।।
तीर्थंकर बुद्ध ऋषि दायिनी ... राजा महाराजा चक्री दायिनी।
लेखक चिंतक कवि जननी ... न्यायाधीश वैज्ञानिक वीर जननी।।
इण्डियन तुझे भूल रहे हैं... इडियट् अतः बन रहे हैं।
अनेक समस्यायें भोग रहे हैं ... कर्त्तव्य विमूढ़ हो रहे हैं।। (3)
विदेशी तुझे मान रहे हैं ... विविध लाभ पा रहे हैं।
भारतीय अभी तुम तो जागो ... आत्म संस्कृति से शान्ति भोगो।।
आत्मा में होती अनन्त शक्ति ... आत्म संस्कृति से मिलती मुक्ति।
आत्म संस्कृति अतः अपनाओ ... 'कनक' चाहे मुक्ति को पाओ।। (4)

❑❑❑

व्यंग्यात्मक कविता

''भारत की आधुनिकता''

(रागः छोटी-छोटी गैया...)

अभी भारत आधुनिक हो रहा ... आध्यात्मिक छोड़ भौतिक हो रहा।
धर्म व मोक्ष को त्याग भी रहा ... अर्थ व काम में व्यस्त/(मस्त) हो रहा।।
संस्कार छोड़ साक्षर हो रहा ... स्वतंत्रता छोड़ स्वच्छन्द हो रहा।
तोतारटन्त पाठ पढ़ भी रहा ... सामान्य ज्ञान को भूल सा गया।। (1)
शालीन सदाचार रिक्त हो रहा ... फैशन व्यसनों में मस्त हो रहा।
स्व संस्कृति को त्याग रहा है ... अप संस्कृति को भोग रहा है।।
शील मर्यादा को त्याग रहा है ... कुशील व बोल्ड बन रहा है।
भय-नम्रता को छोड़ रहा है ... उद्दण्ड क्रूर बन रहा है।। (2)

श्रम-स्वावलंबन त्याग रहा है ... आलस्य प्रमादी बन रहा है।
शोध-बोध-खोज नहीं रहा है ... नकल-दिखावा कर रहा है।।
मातृ-भाषा को भूल रहा है ... गुलामी-भाषा में झूल रहा है।
आत्मा-परमात्मा का ज्ञान न रहा ... तुच्छ-कामुकता चाह रहा ।। (3)
आदर्श पुरुषों को भूल रहा ... नेता-अभिनेता को पूज रहा।
गुणग्रहण को छोड़ रहा ... निन्दा-अपमान कर रहा।।
अतएव भारत भ्रष्ट हुआ ... रोग गरीबी से त्रस्त हुआ।
कदाचार से जब मुक्त होगा ... आधुनिकता से युक्त होगा।। (4)

❑❑❑

मेरी पावन चार वैश्विक अभिलाषा

(चालः 1. आत्मशक्ति..., 2. कसमे वादे..., 3. शत शत वन्दन..., 4. सायोनारा..., 5. क्या मिलिये..., 6. छोटी-छोटी गैया..., 7. गरजत बरसत...)

सभी जीव प्रति मैत्री भाव हो, नहीं हो मेरी द्रोह भावना।
अदुःखकारक भाव हो मेरा, नहीं हो मेरी दुष्ट भावना।।
वसुधैव कुटुम्ब भाव हो मेरा, आत्मदृष्टि-से सम भावना।
ऊँच-नीच भेद-भाव मेरा न हो, अपना-पराया क्षुद्र भावना।।
शत्रु-मित्र का भाव कभी न हो, नहीं हो मेरी स्वार्थ भावना।
राग-द्वेष-मोह विरहित हो मेरा, आकर्षण-विकर्षण रिक्त भावना।।
गुणी जन प्रति हो प्रमोद भाव, आदर-सत्कार-भक्ति भावना।
गुणी से ग्रहण करूँ गुण मैं सदा, गुणी प्रति न हो ईर्ष्या भावना।।
पूजा-प्रार्थना-आराधना-आरती, वन्दन-नमन नमस्कार भी।
सत्कार-पुरस्कार-सम्मान-आदर, प्रमोद के यह सब पर्यायवाची।।
पञ्च परमेष्ठी (है) परम गुणी सदा, जो आध्यात्मिक सम्पन्न।
वे तो परम वंदनीय मेरे, अन्य गुणी यथायोग्य आदर।।
क्लिष्ट जीव प्रति कृपा भाव हो, करुणाभाव से हूँ ओतप्रोत।
उनके हित हेतु प्रवचन करूँ, लेखन-प्रेरणा करूँ सतत।।
रोगी प्रति तो भाऊँ हो निरोगी, दुःखी गरीब हो सदा सुखी।
पीड़ित पतित संत्रस्त भयभीत, सभी जीव हो जाये सुखी।।

शोषित हो तो शोषण मुक्त हो, दास हो तो दासत्व से मुक्त।
दीन-हीन बाल/(गृह) मजदूर हो तो, पाये सम्मान हो जाये मुक्त।।
विपरीत वृत्ति प्रति माध्यस्थ भाव हो, नही करूँ ईर्ष्या द्वेष घृणा।
उनके लिए भी शुभ भाव करूँ, बने वे भी सभी अच्छा-सच्चा।।
अग्नि न बुझती ईंधन से कभी, तम से न नशता तम कभी।
अज्ञान मिथ्या पाप भी न नशता अज्ञान मिथ्या पाप से कभी।।
अज्ञान-मिथ्या-पाप सहित जीव, होते हैं विपरीत वृत्ति वाले।
अज्ञान आदि नाश होने पर वे, हो जायेंगे वे सुशील वाले।।
अन्य के कारण मैं क्यों बनूँ, दुष्ट दुर्जन व दुराचारी।
क्रोधी मानी लोभी व मायावी, संक्लेशित दुःखी पापाचारी।।
निर्लिप्त रहूँ मैं कमल के समान, सर्वज्ञ सम रहूँ (मैं) ज्ञाता दृष्टा।
सत्य समता शान्ति को मैं पाऊँ, 'कनक' की पावन है अभिलाषा।

(खमनोर, दिनाँक 24/11/2013, रात्रि 8.04)

❑❑❑

मेरी पीड़ा के कारण

(चालः 1. शत शत वन्दन...)

मुझे तो अत्यन्त होती पीड़ा, जबसे मैं खोटा/(तुच्छ) भाव करता।
छोटा (क्षुद्र) व अहित (भाव) कार्य करता।
निंदा-चुगली या भेदभाव करता, ईर्ष्या द्वेष घृणा स्वार्थभाव धरता।। (स्थायी)।।
दूसरों का अपमान-अनादर करना, निर्दोषी को यदि मैं सदोषी मानता।
असत्य को भी यदि मैं सत्य मानता, सत्य को यदि मैं असत्य मानता।
निर्दोषी को यदि कोई दोषी मानता, किसी भी प्रकार से कोई (उसे) कष्ट देता।
निंदा-चुगली या अपमान करता, मुझे तो पीड़ा होती जब ज्ञात हो जाता।।
निर्दोषी को यदि कोई कष्ट भी होता, मुझे तो पीड़ा होती जब ज्ञात हो जाता।
पशु-पक्षी-मानव कीटादि पतंग, कष्ट वे पाते मुझे भी होता संताप।।
होती है मुझे पीड़ा यदि होता अपव्यय, समय शक्ति बुद्धि का होने पर अपव्यय।
तथाहि धर्म कानून नीति या नियम, पीड़ा होती यदि कोई करे उल्लंघन।।
अक्रम अस्त-व्यस्त काम जो होता, उद्दण्ड उत्श्रृंखलता से काम जो होता।
सरल-सहज रिक्त काम जो होते, मुझे पीड़ा होती जब अन्याय होते।।

कोई माने दोष या न माने दोष, मेरा भाव इससे न होता आवेश।
मेरा निर्णय स्वयं मैं ही करता निष्पक्ष, होकर ही सत्य/(शान्ति) से करता।।
शान्ति या पीड़ा मेरी भावना/(अनुभूति) कराती, सच्चा हूँ तो शान्ति मिले न हो तो/(अन्यथा) अशान्ति।
सत्य समता शान्ति मेरा परम ध्येय, इसी हेतु सब होते उपयोग।।
(खमनोर, दिनाँक 27/11/2013; रात्रि 11.08 तथा प्रातः 5.54)

❑❑❑

मेरी प्रयोगधर्मिता

स्वात्म शक्ति का प्रभाव एवं अनुभव चाहता हूँ

– आचार्य कनकनन्दी

(चालः 1. तेरे प्यार का आसरा..., 2.शत शत वंदन...)

स्वात्म-शक्ति का मैं ज्ञान चाहता हूँ, अनुभव प्रभाव का भान चाहता हूँ।
स्व पर विश्व में प्रयोग चाहता हूँ, परीक्षण-निरीक्षण फल चाहता हूँ।। ...स्थायी...
तीर्थंकर-बुद्ध-ऋषि सम चाहता हूँ, द्रव्य-क्षेत्र-काल भाव योग्य चाहता हूँ।
पुराण-ग्रंथों में यथा मैं पढ़ा हूँ, उसी का प्रयोग अभी चाहता हूँ।। (1)
आत्मा की शक्ति है आत्म विश्वास, स्व-अनन्त शक्ति प्रति दृढ़ विश्वास।
परम विकास का सच्चा विकास, परमात्मा बनने का सद् विश्वास।। (2)
स्वात्मा का ज्ञान है परम विज्ञान, अन्य सभी ज्ञान है छोटा विज्ञान।
इसी से स्व-पर व विश्व को जानूँ, शोध बोध सह सत्य को जानूँ।। (3)
आत्म-विश्वास आत्म विज्ञान सह, समता सह सत् आचरण करूँ।
सरल-सहज धैर्य क्षमा सहित, आदर्शमय उच्च साधना करूँ।। (4)
उदार पावन संतोष त्याग शुरु, निस्पृह एकांत मौन को धरूँ।
सत्ता-सम्पत्ति व प्रसिद्धि रहित, वीतरागता की मैं साधना करूँ।। (5)
इसी से आत्मशक्ति शान्ति परिणति, हर समय में भोग चाहता हूँ।
स्वगुण विकास का स्तर चाहता हूँ, उसके फल का मैं रस चाहता हूँ।। (6)
अनुभव से मैं विकास करूँ सदा, विश्वास ज्ञानाचार बढाऊँ सदा।
कर्त्ता-भोक्ता-ज्ञाता बनूँ मैं सदा मेरा, सच्चिदानंदमय 'कनक' आत्म परा।। (7)
(खमनोर, दिनाँक 25/11/2013, रात्रि 10.58)

❑❑❑

दोष स्वीकार करने वालों के प्रति मेरा उन्नतभाव

(दोष स्वीकारने का बहुआयामी लाभ)

– आचार्य कनकनन्दी

(रागः 1. नगरी-नगरी ..., 2. तुम दिल की धड़कन...)

मुझे अच्छा लगता आनंद आता, जब कोई स्व-दोषों को मानता।
आदर बढ़ता सम्मान बढ़ता, वात्सल्य व अनुग्रह बढ़ता।। ध्रु.।।
उसे पढ़ाने का भाव होता, कृत दोष को छोटा मानता।
सत्यग्राही व विनम्र (भी) मानता, विकास करने योग्य मानता।।
गुणग्राही व ज्ञानी मानता, चारित्र संपन्न शांत मानता।
अमायावी व संयमी मानता, हिताहित विवेकी सहज/(पावन) मानता।। (1)
इसे ही कहते हैं प्रायश्चित्त, शुद्ध करने का स्व-पर चित्त।
आत्मविश्लेषण व आत्मविकास, दोष/(पाप) दूर के उपाय विशेष।।
अंतरंग तप है यह विशेष, मानसिक रोगों को करता कृष/(नाश, विशेष)।
जिससे विनशे शरीर रोग, तन-मन-आत्मा होते निरोग।। (2)
जिससे ज्ञान विकास होता, आत्मविश्वास सुदृढ़ होता।
संयम तप का होता विकास, सम्यक्चारित्र होता विकास।।
धार्मिक ग्रंथों में यह मैं पढ़ा, प्रायश्चित्त न्याय नीति में पढ़ा।
चिकित्सा मनोविज्ञान में पाया, 'कनकनन्दी' भी ऐसा ही पाया।। (3)

❑❑❑

असंक्लेशित भाव से विश्व कल्याण की भावना भाऊँ

– आचार्य कनकनन्दी

विश्व हित की तो भावना भाऊँ, अन्य के कारण न संक्लेश करूँ।
रोगी का उपचार सुवैद्य करे, रोगी के कारण रोगी न बने।।
मैत्री, प्रमोद व कारुण्य माध्यस्थ, चारों/(इन्हीं) भावों से सहित बनूँ।
द्वादश अनुप्रेक्षा व षोडश भावना, इन्हीं भावों से भावित बनूँ।।
सत्य-तथ्य को सर्वथा जानूँ, दोष-गुणों को सर्वथा मानूँ।
दोषी-निर्दोषी को यथार्थ जानूँ, गुण-ग्रहण करूँ दोषों को हनूँ।।
अनन्त जीव हैं व अनन्त संसार, पृथक्-पृथक् होते हैं भाव-व्यवहार।
सभी का सही होना नहीं संभव, स्वयं को ही सही बनाना संभव।।

स्व को ही सही बनाने में करूँ प्रयत्न, इसी हेतु सर्वथा मैं करूँ प्रयत्न।
प्रकाशित बनकर मैं प्रकाश करूँ, आत्महित से परहित मैं करूँ।।
ऐसा ही तीर्थंकर देव ने किया, राग-द्वेष मोह सर्वथा त्यागा।
इसी सें अनंत सुख उन्होंने पाया, 'कनकनन्दी' को भी यह ही भाया।।

(विविध राग-1. कौन परदेशी तेरा ... 4. शत शत वन्दन ...
2. रघुपति राघव ... 5. सायोनारा ...
3. तेरे प्यार का आसरा ... 6. छोटी-छोटी गैया ...)

❑❑❑

मैं आगे आगे ही चला

- आचार्य कनकनन्दी

(रागः 1.शत शत वन्दन..., 2. क्या मिलिये...,)
मैं तो चला उस पार चला, बुद्धि से परे सम्वेदना में।
सम्वेदना सहित अनुभव से, चला मैं आध्यात्मिक प्राप्ति में।। (1)
पाप से परे मैं पुण्य में चला, शुद्ध प्राप्ति के लक्ष्य में।
नैतिक पाया अनैतिक त्यागा, धर्म व सत्य प्राप्ति में ।। (2)
संविधान व कानून छोड़ा, आत्मानुशासन प्राप्ति में।
अभिमान त्यागा स्वाभिमान पाया, सोऽहं भाव की प्राप्ति में।। (3)
परंपरा रूढ़ि को गौण किया, आध्यात्मिक साधना हेतु में।
बाह्य प्रभावना मैं कम किया, अंतरंग प्रभावना हेतु में।। (4)
तर्क-पूर्वाग्रह परे मैं चला, अनेकांत अनुभव प्राप्ति में।
वाद-विवाद परे मैं चला, संवाद-समन्वय हेतु में।। (5)
प्रसिद्धि प्रतिष्ठा परे मैं चला, समता सिद्धि प्राप्ति में।
भेदभाव से परे मैं चला, भेद विज्ञान प्राप्ति में।। (6)
पंथ-मत से परे मैं चला, सम्यक् पथ में आगे मैं।
भीड़ प्रदर्शन परे मैं चला, मौलिक दर्शन प्राप्ति मैं।। (7)
सीमा बंधन मैं तोड़ चला, स्वतंत्रता की प्राप्ति में।
उत्श्रृंखलता परशासन त्यागा, आत्म-संगम की प्राप्ति में।। (8)
सत्ता-सम्पत्ति से पार चला, आत्म-वैभव प्राप्ति हेतु।
आगे-आगे ही आगे चला, 'कनक' शुद्धात्म प्राप्ति में/(हेतु) (9)

❑❑❑

मेरे सकारात्मक सोच कथन एवं चारित्र व्यवहार

– आचार्य कनकनन्दी

(रागः 1.यमुना किनारे..., 2. छोटी छोटी गैया..., 3. सायोनारा...,)

सकारात्मक सोच मैं किया ही करूँ... सकारात्मक काम मैं किया ही करूँ।
सकारात्मक हित-मित-सत्य मैं कहूँ... सकारात्मक समीक्षा किया मैं करूँ।। स्थायी।।
मेरे लिए आध्यात्मिक सकारात्मक, भाव विशुद्धि व अनेकांत युक्त।
स्व पर विश्व हित से युक्त, संकीर्ण स्वार्थ व कषाय रिक्त।।
सत्य समता व शान्ति मैं चाहूँ, वाद-विवाद-कुतर्क नहीं चाहूँ।
पर अहित बिन मैं स्व-हित करूँ, स्व-अनुभव से आगे ही बढ़ूँ।।
कमल के सम मैं निर्लिप्त रहूँ, अज्ञानी-मोही से मैं अलिप्त रहूँ।
प्रतिस्पर्द्धा बिन मैं आगे ही बढ़ूँ, दूसरों से संघर्ष बिन मैं बढ़ूँ।।
सबसे शिक्षा लूँ कुछ न बोलूँ, निंदा-अपमान रूप नहीं बोलूँ।
सुयोग्य को ही स्पष्ट अनुभव बताऊँ, हित-मित-प्रिय से अन्य को कहूँ।।
समय-शक्ति का सदुपयोग मैं करूँ, अन्य हेतु इन्हीं का अपव्यय न करूँ।
अन्य हेतु राग-द्वेष मोह न करूँ, अन्य हेतु स्वयं को पापी न करूँ।।
स्व-शोध-बोध-परीक्षण मैं करूँ, आध्यात्मिक आदर्श स्वयं मैं बनूँ।
आत्मदीप सह परदीप मैं बनूँ, 'कनक' सच्चिदानंद रूप मैं बनूँ।।
(खमनोर, दिनांक 1.12.2013, रात्रि 10.48)

❑❑❑

मैं सर्वोदय चाहता हूँ

(परम सर्वोदय के उपाय)

– आचार्य कनकनन्दी

(रागः शत शत वन्दन..., सायोनारा...,)

आगे से आगे मैं जाना चाहता हूँ, परम सर्वोदयी होना चाहता हूँ।
भौतिक तन मन अक्ष से परे, आत्मिक शुद्धता/(उच्चता/शान्ति) पाना चाहता हूँ।। 1
संकीर्ण पंथ मत जाति भाषा से, कानून राजनीति संविधान से।
काला-गोरा धनी व गरीब से परे, मानवीय संकीर्ण सीमा से परे।। 2
इतिहास पुराण व नीति-नियम से, तर्क-वितर्क व वाद-विवाद से।
भौतिक विज्ञान नय अनुमान से, परे मैं होता हूँ मनोविज्ञान से।। 3

तेरा मेरा भेदभाव परे चाहता हूँ, आकर्षण विकर्षण शून्य चाहता हूँ।।
अपेक्षा-उपेक्षा-प्रतीक्षा से परे, सत्य समता व शांति चाहता हूँ।। 4
ख्याति पूजा लाभ व संकल्प विकल्प, राग द्वेष मोह काम विभाव।
ईर्ष्या तृष्णा घृणा निंदक भाव, दीनहीन अहंकार भाव कुभाव।। 5
क्रूर, कठोर व संकीर्ण भाव, असंतोष वृत्ति व संग्रह भाव।
क्षोभ अधर्म व आलस्य प्रमाद, त्याग के पाऊँ चिदानंद भाव।। 6
पाऊँ मैं अनंत अक्षय भाव, ज्ञान-दर्शन-सुख वीर्य स्वभाव।
अव्यय अव्याबाध अमृत भाव, पाऊँ मैं निज शुद्ध बुद्ध स्वभाव।। 7
परम सर्वोदय यह ही मेरा, अस्त से युक्त अन्य उदय सारा।
राजा महाराजा या सेठ श्रीमान्, सभी का विकास है नाश सम्पन्न।। 8
परम उदय करे समस्त जीव, अन्य उदय /(सभी) स्वतः होना संभव।
इसी से नहीं होती क्षति अन्य की, 'कनकनंदी' चाहे आत्मिक-शान्ति।। 9
(गाँवगुडा, दिनांक 13.12.2013, रात्रि 08.01)

❑❑❑

समता एवं मौन से मुझे प्राप्त लाभ

-आचार्य कनकनन्दी

(चालः नगरी नगरी...)

बड़ा सुख पाता आनंद होता, जब समता-मौन में रहता।
संक्लेश न होता समय न नशता, राग द्वेष कलह नहीं होता।। ।।1।।
स्वाध्याय भी होता मनन भी होता, शोध-बोध व लेखन होता।
तन मन अक्ष भी नहीं थकते, शांत व स्वस्थ तीनों ही होते।। ।।2।।
पाप न बंधता पुण्य बंधता, प्राचीन पाप भी नष्ट होता।
अंतरंग तपस्या की वृद्धि होती, आत्मविशुद्धि की वृद्धि होती।। 3।।
गम्भीरता आती गरिमा बढ़ती, आत्मा की साधना सतत होती।
गला न सूखता मुँह न दुखता, शब्द-प्रदूषण भी नही होता।। 4।।
मेमोरी भी बढ़ती प्रज्ञा भी बढ़ती, समीक्षा-शक्ति भी बढ़ती।
भीड़ प्रसिद्धि चाह न होती, एकांत शांत शान्ति भली।।5।।
नकल न करता डींग न हाँकता, दिखावा आडंबर भी नहीं होता।।
दोष/(सत्य) को जान निंदा न करता, तटस्थ निरपेक्ष ज्ञाता बनता।। 6।।
वाचनिक दोषों से मुक्त हो जाता, अप्रिय कटुक अति नहीं बोलता।
वाक्-सिद्धि होती निस्पृहता आती, 'कनक' को आत्म-सिद्धि भाती।। 7।।

अलौकिक गणित-आध्यात्मिक कविता

"मेरी भावना परम ज्ञान हेतु मुझे चाहिये स्व-ज्ञान"

-आचार्य कनकनन्दी

(चालः तेरे प्यार का आसरा...)

परम सत्य को मैं जानना चाहता हूँ।
इन्द्रिय मनातीत (मैं) जानना चाहता हूँ।।
अल्पज्ञ से परे (मैं) जानना चाहता हूँ।
भौतिक से परे (मैं) जानना चाहता हूँ।। (1)

यंत्र से परे का ज्ञान चाहता हूँ।
भौतिक विज्ञानी से भी परे चाहता हूँ।।
जीनोम से परे जानना चाहता हूँ।
डार्क-एनर्जी मैटर से परे चाहता हूँ।। (2)

सामान्य मानव ज्ञात ज्ञान विज्ञान से।
नीति नियम न्याय संविधान ज्ञान से।
रीति-रिवाज परम्परा की सीमा से।
संकीर्ण पंथ-मत भाषा विधान से।। (3)

जानना चाहता हूँ परम सत्य को।
सत्य को जानने वाला परम ज्ञान को।।
ज्ञान के आधारभूत स्व-आत्मतत्त्व को।
(परम) सत्य के ज्ञात हेतु 'कनक' जानो हे! स्व को। (4)

स्व क़ो जानने हेतु भी अनंतज्ञान चाहिये।
परम सत्य हेतु भी अनंतज्ञान चाहिये।।
अतएव तीर्थंकर पहले जानते स्वयं को।
सर्वज्ञ बनकर जानते परम सत्य को।। (5)

❑❑❑

"अनंत बिन कहाँ सुख पावे?"
परम स्वतंत्रता में ही सुख
नवीन वर्ष की महत्वाकांक्षी योजना

– आचार्य कनकनन्दी

मेरा भाव... अनंत बिन... कहाँ सुख ... पावे रे ऽऽऽ
संख्यात .... असंख्यात... समाप्त होते (हैं), पुनः पतन हो जावेऽऽऽ
अनंत है निज आत्मिक (स्व) भाव ... कर्म नष्ट से प्रगटावेऽऽऽ
अक्षय अविनाशी चिदानंद मय ... सत्य शिव सुंदर होयऽऽऽ(2)
कर्म जनित तो संख्यात असंख्यात ... उपलब्धि मात्र होयऽऽऽ
मानव विद्याधर भोगभूमिज ... स्वर्ग वैभव तक होय ऽऽऽ(3)
क्षायोपशमिक भाव/(आदि) होने से... (पूर्ण)/शुद्ध रूप न प्रगटाय/(होय)ऽऽऽ
जिससे न अनंत गुण उद्भवे (प्रगटे) ... कर्म पराभूत होयऽऽऽ (4)
कर्माधीन से स्वतंत्र (ता) कहाँ, परतंत्र/(दास/गुलाम) सम वृत्ति होय ऽऽऽ
स्वामी/(मालिक) जो देता, वह ही मिलता/(गुलाम भोगता)...
बासी या जूठन होयऽऽऽ (5)
इसी हेतु ही संग्राम छेड़ा हूँ..पूर्ण स्वतंत्र (ता)/(स्वराज/सुराज्य) हेतु ऽऽऽ
सत्य समता व शान्ति (के) द्वारा ... कर्म विनाश के हेतु ऽऽऽ (6)
इसी से कुछ भी न कम चाहिये... स्वर्ग तक के वैभव ऽऽऽ
ख्याति पूजा लाभ ... ईर्ष्या तृष्णा काम.. मोहभाव भौतिक वैभव ऽऽऽ (7)
मुझे तो चाहिये स्वयं का वैभव ... जो है स्वतंत्र(सम्पूर्ण) स्वरूप ऽऽऽ
सार्वभौम व सर्वोदयमय ... 'कनक' का निज स्वरूप ऽऽऽ(8)
(बेदला, दि 21 जनवरी 2014, रात्रि 10.20)

❑❑❑

"क्षुद्रता से भी शिक्षा लेकर महान् बनूँ"
क्षुद्रता से मैं शिक्षा लूँ किंतु क्षुद्र न बनूँ

– आचार्य कनकनन्दी

(राग : दुनिया हँसे..., शत शत वन्दन ..., छोटी छोटी गैया...)

छोटा-छोटा भाव व्यवहार करता नहीं,
छोटा-छोटा पद /(शब्द) वाक्य बोलता /(लिखता)नहीं।
यह मेरा स्वभाव साधना-फल,
अन्य लोग इसे सही जानते /(मानते) नहीं ।।1।।
निंदा चुगली अपमान दूसरों की नहीं,
जिससे अन्य लोग मुझे जानते नहीं।
दोष जानकर भी मैं साम्य रखता, गुण-ग्रहण करता दोषों को नहीं ।।2।।
मेरे भावादि से मुझे लाभ मिलते, ज्ञान-ध्यान अनुभव मेरे बढ़ते।
समता शान्ति विशुद्धि मेरी बढ़ती, अन्य की क्षुद्रता से शिक्षा मिलती।। 3।।
नाना जीव नाना कर्म उपलब्धि भी नाना, नाना भाव व्यवहार लक्ष्य भी नाना।
स्व-क्षुद्रता की सीमा में आबद्ध होते, महानता को वे नहीं समझ पाते।।4।।
कूपमण्डूकता में वे जीवन जीते, उसमें ही रचे-पचे जीवन जीते।
विशाल विश्व को वे नहीं जानते, अतएव कूप को ही बड़ा मानते।। 5।।
देश-विदेशों के साहित्यों में यह वर्णन आते, महापुरुष पहले उपेक्षित होते।
मारन-ताड़न-अपमान सहते, क्षुद्र मानव उन्हें मृत्युदण्ड भी देते।। 6।।
अनंतर पूजनीय वे महापुरुष होते, पूजा पाठ स्तुति पाठ अधिक होते।
बाह्य आडम्बर तो बहुत होते, सद्गुण ग्रहण तो कम करते।। 7।।
इसी से शिक्षा मुझे मिलती अधिक, सद्गुण वृद्धि मैं करूँ अधिक।
उच्च (लक्ष्य) भाव व्यवहार करूँ मैं सदा, ईर्ष्या द्वेष घृणा निंदा करूँ न कदा।। 8।।
अन्य की क्षुद्रता से शिक्षा मैं लहूँ, क्षुद्र जीव प्रति भी द्रोह न करूँ।
विष को विष जानूँ विष न पीऊँ, दुर्गुणों को जानकर दुर्गुण छोड़ू /(त्यागूँ)/(हनूँ)।।9।।
सिद्ध जीव न बनते संसारी सम, कमल न बनता है कीचड़ सम।
सज्जन न बनते हैं दुर्जन सम, आकाश न बनता है बादल सम ।।10।।
अनंत जीव तो होते हैं संसारी, तथाहि क्षुद्रता से युक्त होते भी।
कमल के समान मैं निर्लिप्त रहकर, 'कनक' बनना है मुझे निर्विकार ।।11।।

❑❑❑

पात्रता के अनुसार होता है सत्य व हित ग्रहण

– आचार्य कनकनन्दी

(चाल : रघुपति..., सायोनारा)

स्व-पात्रता से ही ग्रहण होता, पात्र अनुसार ही पानी भरता।
बीज अनुसार ही वृक्ष बनता, भाव अनुसार ही भावी/(भाग्य/कार्य) बनता।।
अनंत आकाश कक्ष में न समाता, जुगनू में सूर्य प्रकाश न होता।
गागर में कहाँ/(नहीं) सागर समाता, अल्पज्ञ न ज्ञान सागर/(भौतिक पार) जानता।।
कूपमण्डूक समान जो होते, कूप को ब्रह्माण्डमय जानते।
कूप से परे वे नहीं जानते, कूप से परे वे नहीं मानते।
स्व-स्व योग्यता से अक्ष जानती, योग्यता से परे नहीं जानती।
तथापि सत्य न असत्य होता, इन्द्रिय मन से परे सत्य होता।
जो जितना अल्पज्ञ होता, उसके अनुसार (न) सत्य मानता।
अधिक अज्ञानी अधिक न जानता, दूषित भाव से भी /(सत्य) नहीं मानता।
अज्ञान मोह राग द्वेष सहित, जीव न जानता/(मानता/स्वीकारता) सत्य व हित।
तदनुसार वह काम करता, कलह निंदा पक्षपात करता।।
संक्लेश व विषमता सहित होता, अशांति द्वंद्व से सहित होता।
विनम्र सत्यग्राही नहीं बनता, विवाद विसंवाद सहित होता।।
सनम्र सत्यग्राही सज्जन होते, सत्य तथ्य को शीघ्र मानते।
स्व कमियों को शीघ्र हटाते, सत्य समता शान्ति को पाते।।
अधभरी गगरी छलकत जाये, भरी गगरी चुपकत जाये।
रिक्त चना बाजे घना अतः कहते, दुर्विदग्ध को न सत्य भाते।।
गुणग्राही सज्जन विनम्र बनो, सत्य व हित को ग्रहण करो।
विकास के ये ही मूल उपाय, 'कनक' मान्य करे ये उपाय।।

❑❑❑

आध्यात्मिक दृष्टि होने पर

–आचार्य कनकनन्दी

(राग : पायोजी मैंने...,)

पायोजी मैंने आध्यात्म दृष्टि पायो।
जिस दृष्टि से भिन्न दिखता है, जो इन्द्रियों से देख पायो।।

यथा कैमरा व एक्सरे में, बाह्य अंतः (अंदर) फोटो आयो।
तथा इन्द्रिय व आत्मदृष्टि से, बाह्य अंदर देख पायो।।

इन्द्रिय देखती स्थूल-भौतिक ही, तन-धनादि जो होय।
आत्मिक दृष्टि तो चैतन्य देखती, जो अमूर्तिकमय होय।
बाह्य दृष्टि से भेदभाव/(छोटे-बड़े) दिखते, कोई छोटा बड़ा कोंय।
अंतःदृष्टि तो वीतराग होय, सभी जीव सम होय।

मानव ही नहीं पशु-पक्षी सभी, चिदानंदमय होय।
शत्रु मित्र व अपना-पराया, भेद-भाव नहीं कोई।।
सत्ता सम्पत्ति प्रसिद्धि आदि (में) को, बाह्यदृष्टि माने श्रेष्ठ।
अंतःदृष्टि इसे बंधन देखती, निष्पृहता को माने श्रेष्ठ।।

स्पर्श गंध वर्ण आकार से, इन्द्रियाँ होती मोहित।
अंतःदृष्टि इसे पर ही (बंधन) मानती, उससे होती विरक्त।।
बाह्य दृष्टि की शक्ति तो सीमित, न होती विकृति बाधित।
अंतःदृष्टि की शक्ति तो अनंत, न होती विकृत बाधित।।

अंतःदृष्टि में (से) साधर्मी विधर्मी, अधर्मी में नहीं भेद।
यह भेद तो कर्माधीन है, कर्म है भौतिक प्रभेद।
आध्यात्मिक दृष्टि बिना यह सब, कभी न देख पाता।
तथाहि अन्य कोई नहीं देख पाता, जब लो न अंतःदृष्टि पाता।

इन्द्रिय मन व यंत्रों से परे है, आध्यात्मिक दिव्य दृष्टि।
इसी दृष्टि से भी 'कनकनंदी', देखता है सर्व सृष्टि।।

(उदयपुर पायडा, दिनांक 20 मार्च 2014, रात्रि 10.30)

❑❑❑

मेरे आनंद एवं दुःख के कारण

-आचार्य कनकनन्दी

(राग : तुम दिल की धड़कन... सायोनारा)

गहन/(सूक्ष्म) आध्यात्मिक चिंतन से, वैज्ञानिक अनुसंधान से।
कार्य-कारण बोध से, आनंद होता/(आता) अनेकांत से।।(स्थायी)

सनम्र सत्यग्राही होने से, समता शान्ति सह होने से।
वात्सल्य संगठन होने से, आनंद होता मैत्री भाव से।।
स्वाध्याय-चिंतन होने से, शंका-समाधान होने से।
समीक्षा-समन्वय होने से, आनंद होता अनुभव से।।
नवीन ज्ञान के होने से, कल्पना सत्य होने से।
साहित्य सृजन होने से, आनंद होता ज्ञान दान से।।
मौन एकांत निवास से, निष्पृह-निराडम्बर होने से।
सरल-सहज होने से, आनंद होता क्षमा भाव से।।
आकर्षण-विकर्षण शून्य से, अपेक्षा-उपेक्षा शून्य से।
प्रतीक्षा रहित कामों से, आनंद आता स्वावलंबन से।।
उदार पावन भावों से, स्व-पर-विश्व हित से।
निःस्वार्थ परोपकार से, आनंद आता सभी सुखी से।।
प्रमोद प्रशस्त भावों से, निंदा अपमान शून्य से।
कलह संक्लेश शून्य से, आनंद आता सौम्यता से।।
एकाग्र मन के होने से, संतोष धैर्य भाव से।
संकल्प विकल्प शून्य से, आनंद आता आत्मध्यान से।।
महान् लक्ष्य होने से, भेदभाव शून्य होने से।
ईर्ष्या घृणा तृष्णा त्याग से, आनंद आता स्वानुभव से।।
इसी से भिन्न कारकों से, असत्य भाव-व्यवहारों से।
होता है दुःख अनात्म से, 'कनक' आनन्दित आत्मा से।।
(आयड़ (उदयपुर), दिनांक 6 अप्रैल 2014, रात्रि 10.42)

❑❑❑

समालोचना व्यक्तित्व विकास के कारण, न कि आलोचना

- आचार्य कनकनन्दी

(चाल : 1. शत शत वन्दन 2. सायोनारा, 3. छोटी छोटी गैया...)

समालोचना विधेय न कि आलोचना, भावना सुधार की हो, न निंदा भावना।
कटु-औषधि हो न कि मारक विष, समीक्षा हो न निंदा ईर्ष्या व द्वेष ।। (स्थायी)

सुयोग्य दयालु माता गुरु डॉक्टर, यथा करते हैं सुयोग्य व्यवहार।
तथाहि समालोचना होना विधेय, चोर ठगी समान नहीं विधेय।। (1)

हित मित प्रिय वचन श्रेय, अहित मधुर भी नहीं है श्रेय।
हितकारी कठोर वचन श्रेय, शल्य चिकित्सा सम न अहित श्रेय ।। (2)

समालोचना हो योग्य मात्रा में, औषधि सम न हीनाधिक में।
सरल/(मधुर) सहज व दृढ़/(धैर्य) शान्ति रहित।
करुणा भाव से हो न क्रुरता युक्त ।। (3)

उपगूहण स्थितिकरण सह वात्सल्य, प्रभावना सह हो न दुष्ट विचार।
गुप्त रोगों का होता यथोपचार, समालोचना तथा दोषोपचार।। (4)

पृष्ठमाँस भक्षण होती है निंदा, पाप-ताप-संताप करे है निंदा।
स्व-पर-अहितकारी होती है निंदा, इहपरलोक अहितकारी है निंदा ।। (5)

प्रेम (प्रशंसा) प्रेरणा से होता विकास, ईर्ष्या घृणा निंदा से होता विद्वेष।
अंधेरे से न होता अंधेरा विनाश, साधन-साध्य शुचि से होता विकास।। (6)

न निंदक बनो, न निंदक संगति करो, सकारात्मक व्यवहार सदा ही करो।
स्वपर उपकारी सदा ही बनो, आशीष "कनक" का विकास करो।। (7)

(पायडा, 24 मार्च 2014, रात्रि 8.25)

❑❑❑

भेड़-भेडिया चाल के होते हैं अधिकांश लोग

- आचार्य कनकनन्दी

(राग : तुम दिल की धड़कन..., रघुपति राघव...)

लोकानुगतिक जन अधिक होते, परम सत्य को वे नहीं जानते।
भेड़ (व) भेड़िया चाल से चलते, अंधानुकरण व शोषण करते।।

यथा वृक्ष कीटादिक असंज्ञी होते, मन के बिना भी जीवन जीते।
जन्म विकास व आहार करते, मैथुन प्रजनन मरण करते।।

तथाहि मोही अज्ञानी (जो) मानव होते, मनसह भी असंज्ञी सम होते।
असंज्ञी सम व काम करते, कषाय लेश्या/(संज्ञा) से प्रेरित होते।।

सत्य विश्वास व विवेक रहित, आत्म विश्वास व संयम रहित।
स्वतंत्र मौलिक चिंतन रहित, कार्य कारण बिना होते प्रवृत्त।।
आकाश को नीला (वे) यथा मानते, शरीर को ही वे जीव मानते।
भौतिक वस्तु को ही स्व मानते, आत्मा परमात्मा को नहीं जानते।
भूख मिटाने हेतु खाना वे खाते, भूख के कार्य कारण नहीं जानते।
मैथुन निद्रादि में प्रवृत्त होते, कार्य कारण संबंध नहीं जानते।
धर्म व शिक्षा व जीवन जीना, प्रवृत्त होते हैं विवेक बिना।
कार्य कारण वे सुज्ञान बिना, असंज्ञी सम आचरण लक्ष्य के बिना।।
नदी स्रोत में यथा घास बहती, पवन वेग में यथा धूलि चलती।
वृक्ष में यथा फूल फल लगते, अज्ञानी मोही यदृच्छा कार्य करते।।
इनसे न होता है महान् कार्य, स्व पर विश्व के निःस्वार्थ कार्य।
काम व अर्थ ही कार्य करते, नकलची शोषणकारी बनते।।
सुज्ञान हेतु न करते प्रयास, तथाहि आचरण व आत्मविश्वास।
रुढ़ि परंपरा व स्वार्थ से जीते, सत्ता सम्पत्ति भोग में ही रमते।।
आत्मविश्वास से (वे) वंचित होते, निम्न श्रेणीय जीव सम वे होते।
आत्म जागृति से होता आत्म विकास, कनकनंदी करे यही प्रयास।।
(आयड (उदयपुर), 7 अप्रैल 2014, रात्रि 10.12)

❑❑❑

उपलब्धियों के सदुपयोग से विकास तो दुरुपयोग से विनाश

– आचार्य कनकनन्दी

(चाल : 1. छोटी छोटी गैया..., 2. सायोनारा...)

सत्ता व सम्पत्ति बुद्धि प्राप्त कर, करो हे! स्व पर उपकार है।
इसी से होगा स्व पर विकास, इह पर लोक विकास है।। (1)
सदुपयोग से होता है विकास, दुरुपयोग से विनाश है।
जीर्ण भोजन तो स्वास्थ्य कारक है, अजीर्ण अस्वास्थ्य कारक है।। (2)
सत्ता से अन्य की रक्षा करो हे!, सम्पत्ति से करो दान है।
बुद्धि से करो हे! शुभ चिंतन, सुफल मिलेगा अपार है।। (3)

सत्ता प्राप्त कर करो न शोषण, अन्याय अत्याचार दमन है।
यथा रावण कंस हिटलर सम, रोमन अंग्रेज समान है।। (4)
सम्पत्ति प्राप्त कर न करो तृष्णा, शोषण मिलावट ठगी है।
फैशन व्यसन घमंड आडम्बर, भ्रष्टाचार गरीब से दुर्व्यवहार है। (5)
बृद्धि से न करो अहित चिंतन, न करो ईर्ष्या द्वेष घृणा है।
पर निंदा अपमान अनादर, स्व पर विनाशक काम है।। (6)
सर्व अनर्थ का मूल है कुबुद्धि, सत्ता-सम्पत्ति सहयोगी है।
स्व पर उपकारी भी सुबुद्धि, सत्ता-सम्पत्ति सहयोगी है।। (7)
बुद्धि से करो सत्य तथ्य ज्ञान, हित ग्रहण करो अहित परिहार।
स्व पर हित कर करो चिंतन, बुद्धि तो अमूल्य धन है।। (8)
दुरुपयोग करते तो तीनों का, अज्ञान मोहवश स्वार्थ से।
सदुपयोग तो विरले ही करते, उदार निस्वार्थी है।। (9)
जो जन सदुपयोग न करते, वे दुरुपयोग करते हैं।
सदुपयोग करो विकास हेतु, काव्य रचा "कनक" इस हेतु है।। (10)
दुरुपयोग जो जन करते, उनसे माध्यस्थ 'कनक' है।
अनुमोदना पापी की करने से, पापी होता अनुमोदक है।। (11)
पायडा, 26 मार्च 2014, रात्रि 8.36

(एक व्यक्ति द्वारा अन्य जनों की निंदा करने से दुःखी होकर मैंने इस कविता की रचना की।)

❑❑❑

कैसे हैं? आधुनिक-शिक्षित-धार्मिक
(नैतिक के बिना होती आधुनिकतादि)

-आचार्य कनकनन्दी

(राग : अच्छा सिला दिया...)

अभी के मानव आधुनिक हो रहे, सदाचार छोड़ प्रगति कर रहे।
नैतिकता छोड़ शिक्षित हो रहे, उदारता छोड़ धार्मिक हो रहे।। (1)
बीज से अंकुर तथा वृक्ष होता है, शाखा-प्रशाखा युक्त/(सहित) बड़ा होता है।
फूल फल सहित शोभा पाता है, जड़ के बिना यह नहीं होता है।। (2)

मानव न महान् सदाचारादि बिना, वृक्ष की स्थिति यथा जड़ के बिना।
यथा प्राण वायु बिना यथा प्राणों की स्थिति, सदाचारादि बिना तथा प्रगति।। (3)
दर्जी से न कोई बनता आधुनिक, सूट बूट टाई ही नहीं है आधुनिक।
साक्षरता से कोई न होता शिक्षित, परम्परा रुढ़ि से न कोई धार्मिक।।(4)
सरल सहज सादा नैतिक भाव, उच्च आदर्श व उदार भाव।
सत्य समता युक्त ज्ञान-विज्ञान सहित, न होते वे आधुनिक महान्।। (5)
इन से युक्त व साक्षरता सहित, वे ही यथार्थ से होते शिक्षित।
फैशन व्यसन न उद्दण्डता सहित, वे न आधुनिक तथा शिक्षित।। (6)
रुढ़ि परम्परा युक्त अंध श्रद्धान, कट्टर संकीर्ण युक्त धर्माचरण।
धर्म नहीं यह है कुधर्म जानो, सत्य समता शांति सुधर्म जानों।। (7)
शाश्वत मूल्य न होते विभिन्न, भले परिवर्तन हो, न होते हैं शून्य।
नैतिक सदाचार व उदारभाव, आधुनिकतादि के कारण न होते अभाव।। (8)
सत्य समता व अहिंसा सुशील, दान दया सेवा व परोपकार।
क्षमा सहिष्णुता धैर्य अनुशासन, 'कनक' सदा पालनीय सद्गुण।। (9)
(आयड (उदयपुर), 29 मार्च 2014, रात्रि 10.14)

❑❑❑

अन्तरात्मा के द्वारा मन को संबोधन

– आचार्य कनकनन्दी

मन रे... तू काहे न धीर धरे...
चञ्चल यथा तेरा स्वभाव... लोग भी वैसा करें...
मन रे... (ध्रुवपद)...
मोही रागी द्वेषी स्वार्थी (जन) से, काहे तू नेह करे ऽऽऽ
निस्पृह बन तू शांति पायेगा ऽऽऽ, स्थिरता तुझे वरेऽऽऽ
समता/(धैर्य) भाव धरेऽऽऽ मन रे ऽऽऽ (1)
मोही जन तो स्वयं (ही) अस्थिरऽऽऽ, संतोष नहीं धरे ऽऽऽ
अतः तुझे क्या संतोष देंगे ऽऽऽ, शिला से क्या (न) जल झरे ऽऽऽ
आत्मा से शान्ति झरे ऽऽऽ मन रे ऽऽऽ (2)
कृतघ्न दगाबाज लोभी जनों से ऽऽऽ, क्यों तू अपेक्षा करे ऽऽऽ

विवेक जगाओ स्व को समझाओ ऽऽऽ, ऐसा ही आदेश तोरे ऽऽऽ
निष्पक्ष भाव धर रे ऽऽऽ मन रे ऽऽऽ (3)
बहिरातम पन त्यागकर तू ऽऽऽ, अंतर आतम तू बनोऽऽऽ
अंतर से परमातम बननेऽऽऽ, हेतु तू (मेरा) सहयोगी बनो ऽऽऽ
अंतर आतम रे ऽऽऽ मन रेऽऽऽ (4)
अपेक्षा-उपेक्षा प्रतीक्षारहित ऽऽऽ ,मुझ में रमण करो ऽऽऽ
मैं ही अनंत सुख आगार ऽऽऽ, मुझ से सुख को वरो ऽऽऽ (5)
अनंत सुख वर रे ऽऽऽ मन रे ऽऽऽ (6)
मेरे अनुभव तू कार्य करोऽऽऽ, होगा मेरा सर्वोदय ऽऽऽ
इसी हेतु ही 'कनकनंदी' ऽऽऽ, करता सदा प्रयास ऽऽऽ
चरम लक्ष्य वर रे ऽऽऽ मन रे ऽऽऽ (7)
(आयड (उदयपुर), 8 अप्रैल 2014, रात्रि 1.23)

❑❑❑

व्यक्तित्व विकास में बाधक भोजन पेय
(साफ्ट ड्रिंक्स चाय कॉफी मांसादि होते हैं हानिकारक)

– आचार्य कनकनन्दी

(रागः तुम दिल की धड़कन..., 2 सायोनारा ...)

तन मन आत्मा के स्वास्थ्य के लिए IQ,EQ, SQ के लिए।
तन-मन-धन की रक्षा के लिए, व्यसनों को त्यागो धर्म के लिए ।।(1)।। स्थायी
पेप्सी कोकाकोला चाय व कॉफी, मद्य माँस व तम्बाकू बीडी।
पानमसाला सिगरेट, गुटका, तन मन धन के शत्रु ये पक्का।। (2)
साफ्टड्रिंक्स (पेप्सी आदि) में स्थित फॉस्फोरिक एसिड, कैफीन शुगर(व) कैरेमल केमिकल।
इससे मोटापा व रक्त चाप होते, थकान व डिहाइड्रेशन भी होते।। (3)
दो लाख लोग हर साल मरते, कोकाकोलादि से पृथ्वी के मरते।
विदेशों में पीना हो रहा है कम, भारत में बढ़ रहा है प्रमाण।। (4)
चाय कॉफी में होता है कैफीन टैनिन, जिससे होते हैं रोग विभिन्न।
गठिया हृदय व गुर्दे के रोग, जिससे एसिडिटी कब्ज व पेट के रोग।। (5)

पेट फूलना व बदहजमी रोग, नींद न आना व दंत रोग।
मानसिक रोग भी होते इससे, मीठा जहर यह त्यागो अभी से।। (6)

तम्बाकू है मानो साक्षात् यम, तीन हजार होते विष रसायन।
निकोटिन, अमोनिया, कार्बन, टार, मोनोआक्साइड तथा मेथेनॉल।। (7)

रेडियो एक्टिव तत्त्व आदि होते इसमें, अनेक विध कैंसर होते इसी से।
साठ लाख लोग मरते हैं (हर वर्ष) पृथ्वी में, नौ लाख मरते हैं भारत में।। (8)

तम्बाकू सेवन से जो रोग होते हैं, निकटस्थ को भी वे रोग होते हैं।
प्रभाव रहता इसका महीना तीन, जहाँ पर होता है धूम्रपान।। (9)

उस स्थान में जो भी लोग जाते हैं, उन्हें भी होते है ये रोग।
स्मोकर्स और पैस्सिव स्मोकर्स, रोगी होते थर्ड हैंड स्मोकर्स।। (10)

अंडा, मछली, मांस में होता है केलोस्ट्रोल, जिससे रोग होता है प्रचुर।
हिंसा व प्रदूषण भी होते अनेक, बीमारी दुर्घटना भी होती अनेक।। (11)

मद्य में रहता है विष एल्कोहल, जिससे तन मन होते बीमार।
अनेक कुकार्य भी मद्यपी करते, अकाल दुर्घटना से भी मरते।। (12)

सेवन इन का जो भी करते, उत्पादन विक्रय जो भी करते।
होते हैं वे सभी दोषों के भागी, 'कनक' आशीष दे त्यागो सभी।। (13)
(उदयपुर पायडा, दिनांक 22 मार्च 2014, रात्रि 11.21)

❑❑❑

मेरे आनंद एवं दुःख के कारण

–आचार्य कनकनन्दी

(रागः तुम दिल की धड़कन..., 2 सायोनारा ...)

गहन/(सूक्ष्म) आध्यात्मिक चिंतन से, वैज्ञानिक अनुसंधान से।
कार्य कारण शोध–बोध से, आनंद होता /(आता) अनेकांत से ।। (स्थायी)

सनम्र सत्यग्राही होने से, समता शान्ति सह होने से।
वात्सल्य संगठन होने से, आनंद होता मैत्री भाव से।।

स्वाध्याय चिंतन होने से, शंका समाधान होने से।
समीक्षा समन्वय होने से, आनंद होता अनुभव से।।

नवीन ज्ञान के होने से, कल्पना सत्य होने से।
साहित्य सृजन होने से, आनंद होता ज्ञान दान से।।
मौन एकांत निवास से, निष्पृह निराडम्बर होने से।
सरल-सहज होने से, आनंद होता क्षमा भाव से।।
आकर्षण विकर्षण शून्य से, अपेक्षा-उपेक्षा शून्य से।
प्रतीक्षा रहित कामों से, आनंद आता स्वावलम्बन से।।
उदार पावन भावों से, स्व पर विश्व हित से।
निःस्वार्थ परोपकार से, आनंद आता सभी सुखी से।।
प्रमोद प्रशस्त भावों से, निंदा अपमान शून्य से।
कलह संक्लेश शून्य से, आनंद आता सौम्यता से।।
एकाग्र मन के होने से, संतोष धैर्य भाव से।
संकल्प विकल्प शून्य से, आनंद आता आत्मध्यान से।।
महान् लक्ष्य होने से, भेदभाव शून्य होने से।
ईर्ष्या घृणा तृष्णा त्याग से, आनंद आता स्वानुभाव से।।
इसी से भिन्न कारकों से, असत्य भाव व्यवहारों से।
होता है दुःख अनात्म से, 'कनक' आनन्दित आत्मा से।।
(आयड़ (उदयपुर), दिनांक 6 अप्रैल 2014, रात्रि 10.42)

❑❑❑

मेरे लिए सुखद एवं दुःखद कारक

– आचार्य कनकनन्दी

(चाल : 1. शत शत वंदन 2, छोटी छोटी गैया, 3. सायोराना)

अन्य की निंदा मुझे नहीं सुहाती, गुणी की प्रशंसा मुझे सुहाती।
अपमान अनादर मुझे भाता नहीं, गुणेषु-प्रमोद भाव भाता सही।। (स्थायी)
ग्राह्य न कर पाता संकीर्ण मिथ्या को, त्याग न कर पाता उदार सत्य को।
ईर्ष्या द्वेष घृणा मुझे नहीं भाते, सरल सहज मैत्री पावन भाते।।
ढोंग पाखंड आडम्बर नहीं भाते, मुझे सीधा सादा शुचि गुण भाते।
कलह विद्वेष विघटन न भाते, वात्सल्य समन्वय संघटन ही भाते।।

निर्दोषी के दुःख से (मैं) कष्ट पाता, उसके सुख से सुखी मैं होता।
शक्ति/(समय) का अपव्यय मुझे न सुहाता, महान् कार्य में शक्ति मैं लगाता।।

आध्यात्मिक मुझे सब से ही प्रिय, संकीर्ण कट्टर धर्मान्ध न प्रिय।
सर्वोच्च लक्ष्य मेरा आत्मोपलब्धि, आनुशांगिक अन्य सर्वोपलब्धि।।

अन्य के भाव लक्ष्य मुझसे भिन्न, अतः न समझते मुझे संपूर्ण।
अतः मौन व निस्पृह मैं रहता, "कनक" निज शुद्ध स्वरूप चाहता।।

(पायडा, 25 मार्च 2014 रात्रि, 12.00)

(एक व्यक्ति द्वारा अन्यजनों की निंदा से दुःखी होकर मैंने इस कविता की रचना की।)

❑❑❑

क्यों है भारतीय प्रतिभा कुंद-अविकसित?

-आचार्य कनकनन्दी

(चाल : 1. शत शत वंदन 2, रघुपति राघव, 3. सायोराना)

विश्वगुरु भारत की संतान, आज क्यों हो रही है दीन-हीन।
अविकसित प्रतिभा सहित, फैशन व्यसनों में लवलीन ।।स्थायी।।

गमला में उगे हुए वटवृक्ष सम, कक्ष के अंदर जो स्थित है।
नहीं बन पाता है विशालवृक्ष, तथाहि भारतीय प्रतिभा है।।
इसके अनेक कारक होते हैं, कर्म सिद्धांत जिनोम भी।
संकीर्ण स्वार्थ व अनुदार भाव, क्षुद्र उद्देश्य व व्यवहार भी।। (1)

नैतिक व्यवहार रहित शिक्षा, रटंत अनुपयोगी संकीर्ण भी।
नम्बर आधारित दिखावा सहित, श्रम रिक्त नौकरी उद्देश्य भी।।
धर्म भी संकीर्ण भेदभाव सहित, दिखावा आडंबर ढोंग भी।
रुढ़ि परम्परा शोध-बोध रहित, पावन भाव-व्यवहार रिक्त भी।। (2)

प्रवचन में न होता है सूक्ष्म व्यापक धर्म, विज्ञान सहित आध्यात्म धर्म।
कथा कहानी चुटकुला मनोरंजन, खाना-पीना, आडंबर तुच्छ के कर्म।।
व्यापार राजनीति कानून भी, संकीर्ण स्वार्थ से सहित भी।
भ्रष्टाचार व शोषण से युक्त, नैतिक राष्ट्रीयता रहित भी ।। (3)

सिनेमा टीवी प्रोग्राम आदि भी, सदाचार शिक्षा रहित भी।
संगति परिवार समाज राष्ट्र भी, रहित नैतिक सदाचार भी।।
फैशन व्यसन अहंकार युक्त, दिखावा नकलची जीवन भी।
उद्दंण्ड, उत्श्रृंखल अनुशासनहीन, आलस प्रमाद सहित भी।। (4)

आत्मविश्वास व सद्ज्ञान रहित, निस्वार्थ नम्रता रहित भी।
संस्कृति संस्कार सदाचार रहित, धैर्य शालीनता रहित भी।।
दान-दया व परोपकार रिक्त, सहयोग समन्वय रिक्त भी।
सूक्ष्य व्यापक चिंतन रहित, आध्यात्मिक लक्ष्य रहित भी।। (5)

दीर्घकालीन गुलाम की आदत, अभी भी व्याप्त है भारत में।
जिससे स्वतंत्र स्वावलम्बन से, प्रतिभा न विकसित होती भारत में।।
आत्म गौरव व स्वावलम्बन से, स्वतंत्र मौलिक चिंतन से।
शोधबोध व प्रयोग करण से, प्रतिभा विकसित होगी श्रम से।। (6)

महान् उद्देश्य सदाचार सहित, नम्रता अनुशासन युक्त से।
व्यापक ज्ञान अनुभव सहित, प्रतिभा विकसित होगी ध्यान से।।
प्रतिभा विकसित करो हे! स्वयं की, सहयोगी बनो अन्यं के भी।
स्वपर विश्व उपकारी भी बनो, ऐसी भावना है 'कनक' की।। (7)

(आयड, 3 अप्रैल 2014 रात्रि, 10.42)

❑❑❑

संकीर्ण स्वार्थी होते प्रायः-मानव

(मेरी निष्पृहता के कारण)

– आचार्य कनकनन्दी

(चाल : शत शत वंदन)

संकीर्ण स्वार्थ ही प्रायः सभी चाहते, सत्ता परिवर्तन डिग्री इत्यादि चाहते।
इसी हेतु ही प्रायः काम भी करते, स्वपर कल्याण प्रायः नहीं करते।।
पढ़ाई व्यापार नौकरी धर्म से, सत्तादि चाहते अंतरंग भाव से।
ज्ञान वैराग्य समता न चाहते, आत्म विशुद्धि न निस्पृहता चाहते।।
स्व पर कल्याण सदा मैं चाहता, अतएव मैं सत्तादि न चाहता।
मेरा लक्ष्य तो अन्य से विपरीत, अतएव मैं अन्य से विपरीत।

सत्तादि मुझे लगते हैं हेय, इसी से होते हैं राग-द्वेष मोह।
जिससे संकल्प विकल्प होते हैं, जिससे संक्लेश कर्मबंध होते हैं।।
ढोंग पाखंड व प्रसिद्धि, न चाहता हूँ, ईर्ष्या द्वेष घृणा तृष्णा न चाहता हूँ।
दिखावा-आडम्बर द्वन्द न चाहता हूँ, वाद-विवाद व क्लेश न चाहता हूँ।।
संसार भ्रमण इसी से होता है, अनंत दुःख भोगना होता है।
आध्यात्म सुख अतः न मिलता है, 'कनक' अतः निष्पृह रहता है।
(पायडा (उदयपुर), दिनांक 28 मार्च 2014, रात्रि 1.10)

❑❑❑

सार्वभौम संविधान न्याय एवं राजनीति
अहिंसा अपरिग्रह का सार्वभौम नियम

- आचार्य कनकनन्दी

(मालिक-गुलाम-शोषक-शोषित भाव-व्यवहार है अप्राकृतिक)
(चाल : 1. छोटी-छोटी गैया, 2. क्यूँ कर कर भक्ति करूँ प्रभु तेरी)

कोई किसी का मालिक नहीं (है), स्वयं स्वयं का ही मालिक।
कर्त्ता धर्त्ता व स्वयं ही भोक्ता, ये नियम हैं सार्वभौमिक।। टेक।।

हर द्रव्य स्वतंत्र है मौलिक, स्वयंभू सनातन स्वयंपूर्ण।
अनंत शक्ति गुण पर्याय सह, शुद्ध रूप से स्वयंपूर्ण ।। (1)

सत्ता सम्पत्ति व बुद्धि युक्त, मानव मालिक जो बनता।
नियम सार्वभौम को लांघकर, वह न शुद्ध काम करता।। (2)

इसी से ही बनती है धरती खंडित, आक्रमण युद्ध तथा संहार।
ऊँच-नीच भेदभाव धनी गरीब, शोषक शोषित शिकारी शिकार। (3)

इसी के समाधान हेतु बनते, न्याय राजनीति व संविधान।
इसी से पुनः जन्म लेते हैं, शोषक शोषित आदि व्यापार।। (4)

भले दुर्बल व असहाय रोगी, मानव-पशु की भी रक्षा करे।
उनका भरण व पोषण करे, रक्षण करे व भक्षण करे।। (5)

प्रत्युपकार भले उनसे पाये, कृतज्ञता भी ग्रहण करे।
मालिक गुलाम शोषक शोषित, ये भाव-व्यवहार न करे।। (6)

बहुत आरम्भ जो परिग्रह करता, वह मरकर नरक में जाता।
राजेश्वरी सो है नरकेश्वरी, ऐसा जैनागम कहता।। (7)

परस्पर उपग्रह करे सभी जीव, नहीं किसी का कर अपकार।
अहिंसा अपरिग्रह को माने, 'कनकनन्दी' का यह विचार।। (8)

(खमनोर, दिनांक 4 दिसंबर 2013 रात्रि, 11.38)

❑❑❑

सार्वभौम सर्वोदयी संविधान तथा न्याय

– आचार्य कनकनन्दी

(चाल : क्या मिलिये ऐसे लोगों से... तुम दिल की धड़कन...)

देश-विदेशों के संविधान समाहित, पंचव्रतों के आचरण में।
सप्त-व्यसन चतुः कषाय त्याग, नवकोटि के आचरण में ।।ध्रु.।।

संविधान के उल्लंघन से जो, अविधेय काम होता है।
उसी के परिमार्जन हेतु, दंड विधान विधेय है।।
अहिंसा सत्य अचौर्य, ब्रह्मचर्य अपरिग्रह का पालन है।
मद्य मांस जुआ शिकार चोरी, परस्त्री गमन वेश्या वर्जन है। (1)

क्रोध मान माया लोभ का त्याग, तथाहि सप्त व्यसन है।
मन वचन काय कृत कारित व अनुमत से वर्जन है।।
यह ही सार्वभौम संविधान, विधेय देश-विदेशों के।
राष्ट्रीय अंतर्राष्ट्रीय सहित, संयुक्त राष्ट्र संघ के।। (2)

कोई व्यक्ति या समाज राष्ट्रादि, संकीर्ण स्वार्थ धर्मादि से।
यदि इसी में विकृत करते, अमान्य हो संविधान से (में)।
जो व्यक्ति से राष्ट्र तक करते, इसी का उल्लंघन है।
उसी के परिमार्जन हेतु, विधेय दण्ड विधान है।। (3)

यथा दयालु सुयोग्य डाक्टर, निरोगी करता रोगी को।
तथा न्यायाधीश न्यायप्रक्रिया से, निर्दोष करे दोषी को।।
इसी की ही विस्तार हो धारा, उपधारा माध्यम से।
अनावश्यक जटिल प्रक्रिया, न हो स्वार्थ कुटिल से।। (4)

न्यायाधीश हो तीर्थंकर सम, या गणधर आचार्य सम।
यथायोग्य काल में विक्रमादित्य, या जयकुमार मंत्री सम।।
यह ही सार्वभौम (व) सर्वोदयी, संविधान तथाहि न्याय विधान।
'कनकनन्दी' इसे ही यथार्थ मानता, अन्य को न देता सम्मान।। (5)

❑❑❑

सर्वोदय के उपाय

– आचार्य कनकनन्दी

(तर्ज : झिलमिल सितारों का ..., सायोनारा...)

कब-तब ये मानव महान् होगा, सर्वोदय हेतु काम करेगा।
अंत्योदय हेतु संलग्न होगा, प्रकृति-संरक्षण पूर्ण करेगा।
संकीर्ण-पंथ-मत-जाति से परे, सर्वहित हेतु काम करेगा।
राष्ट्रीय भाषागत सीमा से परे, वैश्विक शान्ति हेतु कार्य करेगा।।
धनी गरीब व काला गोरा परे, वैश्विक समता का भाव धरेगा।
दया दान व परोपकार हेतु, स्वैच्छिक सहयोग सदा करेगा।। (1)
भौतिक परे भी नैतिक होगा, नैतिक परे भी आत्मिक होगा।
तन मन तथा इन्द्रिय परे, चैतन्य भाव को भी स्वस्थ करेगा।।
चैतन्य शक्ति के विकास हेतु, शोध बोध व शिक्षा भी लेगा।
गणित-विज्ञान कला न्याय सह, आत्मिक विज्ञान पाठ पढ़ेगा।। (2)
कानून संविधान नीति नियम आदि, सर्वोदय हेतु काम में लेगा।
शोषक शोषित मालिक मजदूर, ऊँच-नीच भेदभाव न होगा।।
सत्य समता व समन्वय सह, सर्वोदय हेतु संलग्न होगा।
अन्याय अत्याचार भ्रष्टाचार शून्य, सरल सहज काम करेगा।। (3)
हिंसा चोरी व बलात्कार शून्य, जीवन यापन पूर्ण करेगा।
न्याय से उपार्जित धन के द्वारा, भरण पोषण दान करेगा।।
ईर्ष्या तृष्णा व बैरत्व त्याग कर, शान्ति संतोष से आगे बढ़ेगा।
मोह माया को सम्पूर्ण त्याग कर, आत्मशुद्धि से मोक्ष पाएगा।। (4)
मोक्ष ही परम सर्वोदय है, सच्चिदानंदमय निज धाम है।
यह ही सत्यशिव सुंदरमय है, कनकनंदी का निजात्मधाम है। (5)

(गांवगुडा, 13 दिसंबर 2013 रात्रि, 3.00 से 3.53)

कानून से परे नीति सत्य आध्यात्मिक

(आध्यात्मिक सब से परे है–मानवकृत कानून सबसे परे नहीं)

– आचार्य कनकनन्दी

(चाल : यमुना किनारे..., 2. शत शत वन्दन...)

सब से परे कानून नहीं होता, कानून से परे नैतिक होता।
नैतिक से परे सत्य भी होता, आध्यात्मिक सब से परे होता।। टेक।।
कानून निर्माता जो लोग होते, राजा मंत्री सांसद आदि होते।
वे न सर्वज्ञ वीतरागी होते, राग द्वेष मोह से युक्त होते।। (1)
संकीर्ण स्वार्थी व अल्पज्ञ होते, भेदभाव पक्षपात युक्त होते।
आलस्य प्रमाद से भी युक्त होते, फैशन व्यसनों से भी युक्त होते।। (2)
ईर्ष्या तृष्णा काम से भी युक्त होते, दबाव प्रलोभन से भी युक्त होते।
अहंकार भय से भी सहित होते, पूर्णतः निर्दोष कोई नहीं होते।। (3)
(यथा) ग्रीक आदि देश की दास प्रथा, पाश्चात्य देश की रंग भेद प्रथा।
आक्रमणकारियों के यथा कानून, शोषणकारी उपनिवेश कानून।। (4)
तानाशाहियों के क्रूर कानून, धर्म द्वेषी जंजिया कर कानून।
वधशाला योग्य हिंस्र कानून, मत्स्य न्याय आदि सम सर्व कानून।। (5)
अयोग्य कानून को जो तोड़ते, वे जन मानवों के हितैषी होते।
तीर्थंकर बुद्ध गांधी सुभाष, राजाराम मोहन राय मण्डेला नेलसन।। (6)
अब्राहम लिंकन व कार्ल मार्क्स, समाज सुधारक वैज्ञानिक संत।
इसी से समाज का विकास होता, नैतिक सत्य व आध्यात्मिक।। (7)
दया दान सेवा व परोपकार, संवेदनशीलता हित विचार।
स्वेच्छा से जो अच्छे काम होते, कानून से परे वे काम होते।। (8)
कानून संविधान प्रतिशोध बिना, लोभ प्रलोभन भय के बिना।
नैतिक भाव व्यवहार होते, कानून से ये न संभव होते।। (9)
सत्य है सनातन अकृत्रिम, कानून संविधान ये नहीं कृत।
सत्य है सर्वव्यापी द्रव्य स्वभाव, सत्य शिव सुंदर शाश्वत भाव।। (10)
वाद–विवाद व साक्षी से परे, तर्क–वितर्क व इन्द्रिय परे।
विज्ञान से भी अज्ञात पूर्ण सत्य, न्यायाधीश से भी परे सत्य।। (11)
आध्यात्मिक है शुद्ध चैतन्य, ज्ञान–दर्शन वीर्य आनंद घन।
सच्चिदानंदमय अमृत भाव, राग द्वेष मोह रहित भाव।। (12)

मन-तन इन्द्रिय परे ये भाव, सता-सम्पत्ति से परे ये भाव।
जन्म जरा मरण रहित भाव, शत्रु मित्र परे समता भाव।। (13)
अन्याय-अत्याचार पापों से रिक्त, सप्त-व्यसन व कषाय रिक्त।
आधि-व्याधि-उपाधि रहित, द्रव्य-भाव नोकर्म रहित।। (14)
इसी हेतु राजा महाराजा, विद्वान्, सर्व संन्यास लेकर करते ध्यान।
चक्रवर्ती भी इन्हें करते नमन, विश्व वंदनीय सर्वश्रेष्ठ महान्।। (15)
कानून होता दुष्ट दुर्जन हेतु, यथा औषधि रोगी के हेतु।
स्वस्थ सबल जो होते प्रसन्न, उन्हें न चाहिए वैद्य महान्।। (16)
मानव हित हेतु होता है न्याय, अमान्य योग्य जो होता कुन्याय।
कानून से परे होते सज्जन, औषधि परे होते निरोगी जन।। (17)
कानून से भय खाता है दोषी, निर्भय शांत होता निर्दोषी।
सज्जन पापों से होते हैं भीत, दुर्जन पापों से न होते भीत।। (18)
विश्वमानवों को आह्वान मेरा, सत्य न्याय को जानो हे! खरा।
आध्यात्मिक हेतु करो प्रयास, 'कनकनंदी' का तुम्हें आशीष।

(गांवगुढ़ा, 17 दिसंबर 2013 रात्रि, 7.42 से 10.48)

❑❑❑

आध्यात्मिक एक लाभ अनेक

– आचार्य कनकनन्दी

(चाल : 1. छोटी छोटी गैया..., 2. शत शत वंदन...,
3. सायोनारा..., जिंदगी इक सफर...)

आध्यात्मिक एक लाभ अनेक होते
लौकिक जीवन से मोक्ष तक के।
स्वस्थ होते तन मन आत्मा,
अभ्युदय व मोक्ष तक भी मिले।। टेक।।
करोड़पति तो लाखपति भी होते, आकाश में यथा अन्य द्रव्य समाते।
आध्यात्मिक में अनेक लाभ समाते, नीति-नियम व सदाचार समाते।। (1)
प्रकाश से यथा अंधकार नशता, अंधकार का नया प्रवेश न होता।
उपकरण आदि भी दिखायी देते, अध्ययन-गमनादि कार्य भी होते।। (2)
तथा आध्यात्मिक जब प्रारंभ होता, सत्यासत्य का परिज्ञान भी होता।
हेय-उपादेय का ज्ञान भी होता, ग्रहणीय-त्यजनीय का ज्ञान होता।। (3)

अनात्म ज्ञेय का परिज्ञान भी होता, आत्मा-परमात्मा का ज्ञान भी होता।
शुभाशुभ शुद्ध का ज्ञान भी होता, पुण्य-पाप-मोक्ष का ज्ञान भी होता है।। (4)
महान् लक्ष्य उदारभाव जन्मते, धैर्य क्षमा सहिष्णुता भाव जगते।
समता शान्ति व संतुष्टी आती, शत्रु-मित्र भेदभाव दृष्टि नशती। (5)
तन मन आत्मा स्वस्थ भी होते, कार्य करने में दक्ष भी होते।
कार्य संपादन सही भी होते, स्व-पर हित के कार्य भी होते।। (6)
सुख दुःख हानि लाभ न सताते, विघ्न-बाधा भी परास्त होते।
ईर्ष्या घृणा तृष्णा नहीं सताती, दीन हीन अहंवृत्ति क्षय होती।। (7)
प्रतिस्पर्द्धा बिन विकास होता, भय चिंता बिना विकास होता।
शान्ति रूपी सफलता श्रेष्ठ मिलती, 'कनकनंदी' को यह ही भाती।। (8)

(खमनोर, दिनाँक 2 दिसंबर 2013, रात्रि 10.18)

❑❑❑

"सर्व अनुशासन के मूल-आत्मानुशासन"

-आचार्य कनकनन्दी

(आत्म अनुशासन महा अनुशासन)

(रागः (मराठी) देहाची तिजोरी..., उघड़ दार देवा..आता...उघड़)

आत्म-अनुशासन महा अनुशासन,जो सर्व शासन का मूल होता है।
व्यक्ति को लेकर वैश्विक स्तर के, लौकिक से आत्मिक स्तर के होता।। ध्रु.।।
यथा मूल से वृक्ष की वृद्धि होती, फूल फल सह वृक्ष की स्थिति होती।
अनुशासनों की तथा ही स्थितिवृद्धि, आत्मानुशासन से ही संभव होती।।
महानुशासन से आत्मानुशासन होता, इन्द्रिय व कषाय संयम युक्त होता।
शरीर समय व साधन संयम होता, जिससे सर्व शासन भी संभव होता।। (1)
आत्मानुशासन से शक्ति प्रगट होती, कार्यक्षमता में भी तीव्रता आती।
अन्य भी प्रभावित सहज से होते, समता शान्ति में तीव्रता आती।
तीर्थंकर बुद्ध राम मसीह गांधी, आत्मानुशासन से पायी प्रसिद्धि।
उनसे प्रभावित अन्य सहज होते, पशु भी तीर्थंकर के भक्त बनते।। (2)
तथाहि जो शासक राजा व्यक्ति, आचार्य शिक्षक संघनायक आदि।
आत्मानुशासन से जो युक्त रहते, उनके प्रभाव भी उत्तम होते।।

जो तानाशाही (व) उद्दण्ड क्रूर होते, अव्यवस्थित असंयमी भी होते।
वे स्व पर विश्व के अपकारी ही होते, स्व पर विश्व के नाशक होते।। (3)
संयमित अग्नि, वायु, नदी, जो होती, उपकार युक्त प्रवाहित भी होती।
असंयमी होते है बहु अपकारी, धन जन प्रकृति के नाशनकारी।।
तथाहि अनुशासन व उद्दण्डता में जानो, विकास नाशक क्रमशः मानो।
अनुशासन ही सदा पालनीय, 'कनकनंदी' द्वारा सदा ग्रहणीय है।। (4)

❑❑❑

"कोई भी कार्य अचानक (अकारण) नहीं होता"

– आचार्य कनकनन्दी

(असंतुलित भाव से होती है दुर्घटनाएं)

(रागः तुम दिल की धड़कन...)

भाव के अनुसार भावी होता है, यह सर्वत्र सिद्धांत है।
यह मुख्य कार्य कारण नियम, अन्य सब होते है गौण (बाह्य) नियम।।
दुर्घटना या असफल हो जाना, अचानक नहीं हो जाते हैं।
कारण के बिना कार्य कभी भी, संभव ही नहीं हो पाता है। (1)
चिंता तनाव व नशा के कारण, जब मन अस्थिर होता है।
काम भी व्यवस्थित नहीं हो पाता, बार बार दोष हो जाता है।।
हर कार्य के होते अनेक कारण, कोई समझ पाये या न पाये।
माने या न माने कोई भी, कारण शृंखला सभी की होती है।। (2)
राम वनवास या सीता हरण, सुग्रीव मित्रता या रावण मरण।
सीता के अपवाद या वनगमन, सबके होते हैं कार्य कारण।।
अंजना सती का जो हुआ अपमान, श्रीपाल को हुआ कुष्ठ (व) अपमान।
उपसर्ग हुआ जो पार्श्वनाथ पर, कारण शृंखला का हैं अंतिम परिणाम।। (3)
रोग–शोक या संयोग वियोग, जन्म मरण या हो अपमरण।
आत्महत्या या दुर्घटना आदि, सभी होते हैं सहित कारण।।

❑❑❑

"सभी के लिए नैतिकाचार"

धार्मिक या अधार्मिक सबके लिए करणीय

–आचार्य कनकनन्दी

(सुख प्राप्ति के लिए धार्मिक या अधार्मिक के लिए करणीय)

(तर्ज : परदेशियों से न अखियाँ मिलाना...)

मानव चाहो यदि सुख है पाना, नैतिक मार्ग पे सदा ही चलना
किसी भी धर्म पंथ मानो न मानो, नैतिक सदाचार सदा ही पालना।। टेक।।

क्रोध मान माया लोभ न करना...2, हित मित प्रिय वचन बोलना...2।
हत्या व चोरी ठगी जुआ को त्यागना, परायी स्त्री से भोग न करना।।1।।

नशीली वस्तुओं का सेवन त्यागना...2, मछली मांस व अंडा को छोड़ना...2।
निरीह पशुओं की हत्या न करना, पर्यावरण की रक्षा भी करना।।2।।

विनम्र सदाचारी गुणग्राही बनना...2, सत्य तथ्य को स्वीकार करना...2।
रोगी गरीबों की सहायता करना, माता पिता की सेवा भी करना।।3।।

मिलावट शोषण कभी न करना...2, भ्रष्टाचारी व आतंकी न बनना...2।
दीन हीनों को कभी न सताना, विधर्मियों से भी द्रोह न करना।। 4।।

अधर्मी–विधर्मी–कुधर्मी जनों से...2, किसी भी राजनीतिक जनों से...2।
किसी भी भाषा भाषी राष्ट्र जनों से, वैरत्व भाव भी कभी न रखना।। 5।।

सरल सहज व प्रसन्न रहना...2, सुख व शान्तिमय जीवन बिताना...2।
इसलिए तो सदा नैतिक रहना, उक्त विषयों को पालन करना।।6।।

क्रिया की प्रतिक्रिया होती है सभी में ...2, सुख हेतु सुख अन्य को देना...2।
विषमता से ही विषम उपजे हैं, समता भाव से समता को पाना।।7।।

जल व वायु सम ये सब नियम...2, सुख व शान्ति के जीने के नियम...2।
देशी व विदेशी राजा व रंक के, धर्मी व अधर्मी सभी के हित के ।।8।।

विभिन्न धर्म व विज्ञान पढ़ के...2, राजनीतिक तथा कानून पढ़ के...2।
नीति–नियम व स्व–अनुभव से, सर्वहित हेतु "कनक" रचा ये।। 9।।

❑❑❑

''सामान्यज्ञान एवं सदाचार''

– आचार्य कनकनन्दी

(राग : रघुपति राघव..., सायोनारा...)

प्राथमिक ज्ञान सच्चा कीजिए...प्राथमिक ज्ञान पक्का कीजिए।
महल हेतु नींव सही कीजिए...फसल हेतु बीज अच्छा बोइये।।
ग्रंथ अध्ययन हेतु साक्षर बनिए... गणित हेतु अंकज्ञान कीजिए।
भाषा के लिए व्याकरण सीखिये... स्वास्थ्य के लिए आयुर्वेद सीखिये।। (1)
सदाचार हेतु नीतिज्ञान चाहिए...हित मित प्रिय बोली चाहिए।
दया दान सेवा सदा कीजिए...अनुशासन भंग मत कीजिए।।
सनम्र सत्यग्राही सदा बनिये...उदार सहिष्णु भाव धरिए।
दीन हीन अहंकार भाव त्यजीये... व्यर्थ के काम मत कीजिए।।(2)
कार्यकारण का ज्ञान कीजिए...अनेकांतमय भाव कीजिए।
कर्म सिद्धांत को सही जानिए...गुणस्थानों का भाव जानिए।।
फैशन व्यसनों से दूर रहिए...आलस्य प्रमाद मत कीजिए।
वाद विवाद मत कीजिए...शालीनता पूर्ण व्यवहार कीजिए।।(3)
सरल सहज व मृदु बनिए...गुणग्रहण का भाव धरिए।
ईर्ष्या तृष्णा व घृणा त्यजीये... अहिंसा क्षमामय भाव धरिए।।
चोरी मिलावट ठगी त्यजीये... कुशील (व) तुच्छता का भाव त्यजीये।
मैत्री प्रमोद भाव धरिए...दुर्जन संगति मत कीजिए।।(4)
व्यायाम–प्राणायाम ध्यान कीजिए...भ्रमण योगासन श्रम कीजिए।
अध्ययन–चिंतन चर्चा कीजिए...आत्म विश्लेषण सदा कीजिए।।
तनाव संक्लेश चिंता त्यजीये... महान् उद्देश्य पूर्ण काम कीजिए।
आदर्शमय शांत जीवन जीये... 'कनकनंदी' को आदर्श भाये।।(5)

❑❑❑

''प्राचीन या अद्यतनः जो श्रेष्ठ है वह ग्रहणीय''

– आचार्य कनकनन्दी

(प्राचीन में भी कुछ अच्छे–बुरे थे, अभी भी कुछ अच्छे–बुरे हैं)

(राग : छोटी छोटी गैया...)

प्राचीन मात्र से ही न होता है श्रेष्ठ (कनिष्ठ/निकृष्ट)।

आधुनिक मात्र से ही न होता निकृष्ट/(कनिष्ठ/निकृष्ट)।
जो सच्चा-अच्छा वह ग्रहण योग्य,
किसी काल के भी रोग न ग्रहण योग्य/(हर काल की भी शान्ति योग्य) ।।ध्रु.।।
सुषमादि काल भोग प्रधान होते, जीविका निर्वाह हेतु श्रम न होते।
प्राकृतिक प्रकोप व रोग (शोक) न होते, मोक्षमार्ग व मोक्ष लाभ न होते।
चतुर्थकाल तो कर्म प्रधान होता, मोक्ष मार्ग व मोक्ष लाभ भी होते।
महान् पाप भी होते उसकाल में, सातों ही नरक जाते उस काल में ।।(1)
पंचमकाल आया वीर निर्वाण बाद, मोक्षबंद भी अनुबद्ध केवली के बाद
उच्चतम स्वर्ग भी कोई नहीं जाता, सप्तम नरक भी कोई नहीं आता (तीसरे नर्क से भी नीचे नहीं जाता)।।
चतुर्थकाल सम धर्म नहीं होता, उसकाल सम पाप भी न होता।
तीर्थंकर गणधरादि भी न महान् होते, रावण कंस सम पापी भी होते।। (2)
दास प्रथा अभी कानूनतः बंद, बंधुआ महामारी दुष्काल युद्ध भी कम।
बहु विवाह बलि प्रथा भी अभी कम, महामारी दुष्काल युद्ध भी कम।।
पहले से अभी है प्रदूषण भारी, जिससे उत्पन्न भी समस्या भारी।
आतंकवाद व भ्रष्टाचार भी बढ़े, मिलावट फैशन व्यसन भी बढ़े।। (3)
मोटापा तनाव मधुमेह भी बढ़े, रक्तचाप हृदयघात भी बढ़े।
आत्महत्या व भ्रूण (कन्या) हत्या भी बढ़ी, भौतिकवाद की समस्यायें बढ़ीं।।
संयुक्त परिवार सम पृथिवी बनी, संचार क्रांति भी निमित्त बनी।
परिवार समाज भी बिखर गये, सगा संबंधी मित्र (भी) दूर हो गये।। (4)
अद्यतन युग में कुछ क्रांति हो रही, पाश्चात्य देशों से शुरु हो रही।
वैज्ञानिक शोधों से यह हो रही, आध्यात्मिकता की उदय हो रही।।
पर्यावरण सुरक्षा के काम हो रहे, आध्यात्मिकता की उदय हो रही।
वैश्विक शांति हेतु आगे आ रहे, नये नये शोध बोध काम हो रहे।। (5)
प्रकृति की ओर पुनः आ रहे, उदार भाव से आगे आ रहे।
संकीर्ण भेदभाद पीछे छोड़ रहे, वैश्विक कुटुंब के भाव आ रहे।।
भारतीय संस्कृति को मान दे रहे, शाकाहार ज्ञान-ध्यान ले रहे।
हमें बढ़ना है उन्हें बढ़ाना है, 'कनकनन्दी' की यह सदा भावना है।।(6)

❑❑❑

"विभिन्न विषय ज्ञान से विविध लाभ"

(राग : छोटी छोटी गैया..., यमुना किनारे...)

बहुविध/(विभिन्न विषय) ज्ञान से नाना/(बहु) लाभ होता है, चिंतन का क्षेत्र बड़ा होता है।
समन्वय समीक्षा शक्ति आती है, विचारों विनिमय की युक्ति आती है।।

बहुविध भाषा का ज्ञान होने से, बहुविध संस्कृति का ज्ञान भी होता है।
भाव विनिमय सरल होता है, प्रेम संगठन की वृद्धि होती है।।

अज्ञान अंधकार दूर होता है, हठग्राह दुराग्रह दूर होता है।
संकीर्णता जड़ता दूर होती है, उदारता-व्यापकता की वृद्धि होती है।।

उत्तरोतर जब ज्ञान होता है, पूर्व की अज्ञानता का भान होता है।
अंधकार प्रकाश से यथा मिटता, ज्ञान बढ़ने से अज्ञान मिटता।।

दुर्विदग्ध अल्पज्ञानी घमंडी होते, हठग्राही संकीर्ण व कुतर्की होते।
हिताहित विवेक से रहित होते, स्व पर अहितकारी काम करते।।

ज्ञान से अनुभव जब बढ़ता, कूपमण्डूकता का ज्ञान भी होता।
स्व-अज्ञानता का नाश भी होता ज्ञानार्जन हेतु भाव बढ़ता।।

नीति सदाचार का ज्ञान होने से, नैतिक सदाचारी जीव बनता।
आयुर्वेद ऋतुओं का ज्ञान होने से, स्वास्थ्य रक्षा नियम भी सही पलते।।

सभ्यता संस्कृति का ज्ञान होने से, सुसभ्य सांस्कृतिक जीव बनते।
जिससे समाज राष्ट्र श्रेष्ठ बनते, विविध प्रकार के विकास होते।।

पर्यावरण व अहिंसा के ज्ञान से, पर्यावरण जीवों की सुरक्षा होती।
जिससे तन मन स्वस्थ भी होते, विश्व में विविध विकास होते।।

आध्यात्मिक ज्ञान तो महान् ज्ञान, जिससे जीवन होता महान्।
मानव इसी से महा मानव होता, इसी से ही अमृतत्त्व को पाता।।

बहुविध ज्ञान अतः करो हे! मानव, सदुपयोग से बनो महामानव।
दुरुपयोग ज्ञान का कभी न करो, कनकनन्दी का मत (राय) स्वीकार करो।।

❑❑❑

"वैश्विक राज्य व विश्व नागरिकता"

(मेरी दृष्टि में वैश्विकरण व विश्व नागरिकता)

(राग : झिलमिल सितारों का...)

कब ये मानव उदार होगा, वैश्विक राज्य स्थापन करेगा?
छोड़के राग द्वेष मोह, समत्व धरेगा।
जाति पंथ मत भाषा राष्ट्र (व), काला गोरा से परे बनेगा।। (1)

शोषण आक्रमण विवाद युद्ध छोड़, मैत्री भाव से जिया करेगा।
अनेकांत से समन्वयकर, भेदभाव से परे बनेगा।
अपरिग्रह का भाव धारणकर, परम साम्यवादी बनेगा।। (2) छोड़के...।

स्व पर विश्व के सर्वोदय हेतु, उदार पावन भाव धरेगा।
आदर्श जीवन जीने के हेतु, हर जीव को जीने भी देगा।
चारों आश्रम पुरुषार्थ युत, समग्रता से आगे बढ़ेगा।। (3) छोड़के...।

अन्याय अत्याचार भ्रष्टाचार छोड़, समता शान्ति से सुखी बनेगा।
कृत्रिम सीमा व भेदभाव छोड़, सरल सहज भाव करेगा।
सूर्य किरण व वायु के समान, हर वस्तु सहभोग करेगा।। (4) छोड़के...।

प्रकृति शोषण संग्रह वृत्ति छोड़, समवंटन से उपयोग करेगा।
ईर्ष्या घृणा तृष्णा संकीर्णता त्याग, वैश्विक नागरिक भाव धरेगा।
तन मन धन नाम (सत्ता) से परे, स्वयं को चैतन्यमय मानेगा।। (5) छोड़के...।

इस दृष्टि से परे हर जीव को, चैतन्य सम मानेगा।
अहं दीन हीन रहित समता सह बढ़ेगा।
परोपजीवी व परावलंबन छोड़, स्वाधीन संप्रभु भाव धरेगा।। (6) छोड़के...।

परम आत्म विकास हेतु, सर्वोदय करेगा।
उत्थान पतन परे, शाश्वत सुख पायेगा।
इसी हेतु 'कनक', सदा प्रयासरत।। (7) छोड़के...।

❑❑❑

बुद्धि संवेदना आध्यात्म

(बुद्धि से श्रेष्ठ संवेदना, संवेदना से श्रेष्ठ आध्यात्म)

(राग : आत्मशक्ति से ओतप्रोत...)

बुद्धि (आईक्यू) व संवेदना (ईक्यू) आध्यात्मिक (एसक्यू) जानो,
बुद्धि से उत्तरोतर दोनों महान्।
बुद्धि मतिज्ञान पदार्थ को जानती, संवेदना शून्य स्वार्थपर (जो) होती।।
सत्ता-सम्पत्ति भोग को चाहती, इसी के लिए अन्याय भी करती।
दया दान सेवा रहित भी होती, श्रद्धा वात्सल्य स्नेह न करती।।
संवेदना रहित जो बुद्धि होती, आध्यात्मिक विकास में बाधक होती।
बुद्धि से श्रेष्ठ संवेदना होती, दया दान सेवा से सहित होती।।
संकीर्ण स्वार्थ परे ही होती, अन्य को क्षति नहीं पहुँचाती।
परदुःखकातर दयालु भी होती, हिताहित विवेक सहित भी होता।।
इससे (भी) श्रेष्ठ आध्यात्मिक होता, बुद्धि (व) संवेदना सहित भी होता।
सत्ता-सम्पत्ति व भोग न चाहता, ज्ञान वैराग्य सह साम्य भी होता।।
राग-द्वेष-मोह परे भी होता, शम दम सहिष्णु पावन होता।
परोपजीवी तो बुद्धिजीवी होते, स्वार्थी संकीर्ण क्रूर भी होते।।
होते परोपकारी संवेदनशील, दान सेवायुक्त करुणाशील।
आध्यात्मिक परायण होते वैरागी, हर अवस्था में होते समभावी।।
ईर्ष्या घृणा तृष्णा से रहित होते, सरल सहज शुची ध्यानी होते।
बुद्धि सहित व संवेदनशील, अध्यात्मवादी होना विरल।
संवेदनशील जो जीव होते, अल्पबुद्धि से भी महान् होते।
परमात्मा बनते आध्यात्मिक जन, 'कनकनन्दी' चाहता है आत्मकल्याण।।

❑❑❑

नीति-सुनीति-कुनीति

(राग : तुल दिल की धड़कन में...)

नीति-सुनीति-कुनीति का कर रहा हूँ वर्णन।
स्व पर विश्व कल्याण हिते कर रहा हूँ विवेचन।। ध्रु.।।
जो लोक व्यवस्था हेतु, बनती सो है नीति।
सुराजनीति संविधान कानून लौकिक-नीति।।

इह परलोक हित में, बनती सो सुनीति।
पंचव्रत दशधर्म व, रत्नत्रय आत्मिक-नीति।। (1)

जो स्वार्थ साधन हेतु, बनती सो है कुनीति।
कुराजनीति संविधान, कानून संकीर्ण (लौकिक)नीति।।
साम दाम दंड भेद, क्रय विक्रय विनिमय।
असि मसि कृषि शिल्प वाणिज्य, सेवा विवादमय।। (2)

व्यक्ति परिवार समाज, विश्व की व्यवस्था नीति।
परोपरोग्रहो युक्त, एकता समन्वय की नीति।।
अविरोध धर्म अर्थ काममय, होती है गृहस्थ नीति।
परस्पर प्रेम सहयोगमय, अपर पीड़क नीति।। (3)

इससे परे मोक्ष पुरुषार्थ, सहित होती है सुनीति।
हर जीव की रक्षा सहित, होती आध्यात्मिक नीति।
आत्मानुशासन संयम दम, तप त्याग ब्रह्मचर्य।
ध्यान अध्ययनं आत्मविशुद्धि समस्त मोक्ष के कर्म।। (4)

नीति सुनीति रहित सर्व, होती है नीति कुनीति।
क्रूर कठोर स्वार्थपरक, जो कुछ मानव नीति।।
सत्य समता शान्ति रहित, उदार सहिष्णु रिक्त।।
वे सब नीति हैं कुनीति, भले लिखित हो अलिखित।। (5)

व्यक्तिगत सामाजिक, राजनीतिक या राष्ट्रीय।
अंतर्राष्ट्रीय या धार्मिक, हो सकती कुनीतिमय।।
बलिप्रथा दासप्रथा शोषण, आक्रमण व युद्ध।
औपनिवेशकवाद व तानाशाही व आतंकवाद (भी)।। (6)

विधर्मी प्रति विद्वेष व, क्रूर कपट की नीति।
तथाहि अन्य जाति भाषा, राष्ट्र की नीति।।
नीति द्वारा कुनीति त्यागो, धारण करो सुनीति।
सुनीति से मोक्ष वरो, 'कनक' मान्य सुनीति।। (78)

❑❑❑

''सरल रेखा के सम होता है सत्य-न्याय''

(नवकोटी के पाँच पापों को चार कषायों से करना अन्याय, इससे भिन्न न्याय)

(वैश्विक सत्य-न्याय का सार)

(राग : दे दी हमें आजादी बिना खड्ग बिना...)

मानव ने कानून (न्याय) को जटिल बना दिया,
संकीर्ण स्वार्थ हेतु बेईमान (अन्याय) बना दिया।।
न्याय तो सीधा सादा सत्य व समता है,
जीओ व जीनो दो, वैश्विक न्याय है।।
स्वयं भी सुखी रहो, अन्य भी सुखी रहे,
आत्मानि प्रतिकूलानि परेषां न समाचरे।।
मन वचन काय व कृत कारित,
अनुमत से कुकृत्य जो होते वे अन्याय।।
कुकृत्य है हिंसा असत्य चौर्य मैथुन,
परिग्रह संचय सहित अन्य शोषण।।
क्रोध मान माया व लोभ के कृत कर्म,
स्व पर हानिकर सर्व अन्याय कर्म।।
इसी से विपरीत सर्व ही न्याय कर्म,
अन्याय संशोधन सर्व न्यायिक कर्म।।
कुकृत्य परिहार करते न्यायाधीश।
सर्वोच्च न्यायाधीश होते केवली (शास्ता)
निर्दोष समदर्शी आप्त व सर्वज्ञाता।
अनाप्त जन द्वारा बनाए जाते जो न्याय,
पक्षपात व दोष पूर्ण वे होते न्याय।।
तानाशाही व लूटेरे राजा से बने जो न्याय,
औपनिवेशक न्याय न होते सही वे न्याय।।
यथा रावण कंस हिटलर के जो न्याय,
ब्रिटेन द्वारा बनाए गए औपनिवेशिक न्याय।।
ऐसे न्याय के द्वारा किए जाते जो न्याय,
वे तो बंदर न्याय व अन्यायपूर्ण न्याय।।

न्याय तो सरल रेखा के समान होता,
कुटिल जटिल व कृत्रिम नहीं धोखा।।
असत्य न्याय ही इसी से भिन्न भी होता,
बन्दर-न्याय व शकुनि-न्याय सम होता।।
लिखित न्याय से ही न्याय न सही होता,
कालाकोट टाई से कोई न जज होता।।
साक्षी मात्र से न्याय पूर्ण न सत्य होता,
दलालों वकील से न्याय न पूर्ण होता।।
सम्यग्ज्ञान ही प्रमाण जो सम सत्य होता,
निर्दोष प्रामाणिक निष्पक्ष न्याय होता।।
इसी से ही निर्णय शीघ्र व सत्य होता,
सुयोग्य वैद्य यथा रोग को दूर करता।।
राजा विक्रमादित्य अभयकुमार सम,
होते जो न्यायाधीश देते हैं न्याय साम्य।।
न्याय न व्यापार है नहीं प्रतिशोध,
चिकित्सा समान न्याय तो करता संशोधन।।
सर्वोच्च है दण्डदाता होता है कर्म,
'जैसी करनी वैसी भरनी' देता है कर्म।।
दोष परिमार्जन ही न्याय का कर्म,
जिससे मिलता जीवों को समता धर्म (शर्म)।।
प्रामाणिक जीव स्वयं (का) होता न्यायाधीश,
दण्डनीय होता वह जो है होता सदोष।।
आत्म-विश्लेषण ही यथार्थ अभिवक्ता (वकील),
दोष परिशोधन ही न्याय सकल।
सर्वोच्च न्याय व्यवस्था दिया था भारत,
आर्थिक सामाजिक से आध्यात्मिक तक।।
वह देश आज न्याय में पिछड़ा हुआ,
सत्यानवें (97) देशों में अठहत्तर (78) स्थान में रहा।
रुल ऑफ ला इंडेक्स (2012) जो रिपोर्ट आया

वर्ल्ड जस्टिस प्रोजेक्ट द्वारा जो रिसर्च हुआ।।
उसमें यह स्थान मान भारत पाया,
श्रीलंका से भी पिछड़ भारत गया।
करोड़ों केसों का अभी तक न हुआ निर्णय,
निर्णय में लगेगा और भी सैकड़ों साल।।
धन जन समय का होता है दुरुपयोग,
सुख शान्ति समृद्धि का होता वियोग।।
जहाँ हो राग द्वेष मोह व पक्षपात,
भय व प्रलोभन न होता न्याय सत्य।।
इन्हीं दोषो से रहित होता है सत्य न्याय
'कनकनन्दी' को प्रिय है जो सत्य न्याय।।

❑❑❑

"लोक एवं सरकारी मान्यता से न मिले - सत्य-शान्ति मोक्ष"

(राग : छोटी छोटी गैया...)

लोकमान्यता से न मिले सत्य...तथाहि सरकारी मान्यता से।
सुख शान्ति वं न मिले मोक्ष ... मिले हैं आत्मिक साधना से।।ध्रु.।।

सत्य तो सार्वभौम शाश्वत है...अकृत्रिम व सर्वाधार है।
सुख शान्ति व मोक्ष तो... आत्मा के निज स्वभाव है।।

वस्तु स्वभाव तो स्वयं सिद्ध है..आकाश सम अविनाशी है।
कोई माने या न माने भी...आकाश होता शून्य है।। (1)

मन्यमाना क्या मान्यता से...सत्य न होता असत्य।
उल्लू न देखे सूर्य को तो...सूर्य न होता है असत्य।।

गतानुगतिक लोक होते...लोक न होते परमार्थ।
तथाहि होते हैं सरकार भी... सत्ता-सम्पत्ति के नौकर।। (2)

भीड़ में न होता सत्य है... भीड़ तो भेड़चाल चले।
मनोविज्ञान भीड़ का भी...भेड़-भेड़िया चाल होती।।

स्वार्थी मोही व अज्ञ जन...तथाहि राजा व सरकार।
सत्य समता शक्ति रिक्त...कहाँ से देंगे ये सर्व।। (3)

इन्हीं के मान्य से न होते संत...आचार्य गणधर तीर्थंकर।
बुद्ध दार्शनिक ईसा मसीह... लेखक चिंतक कविवर।।

सदा सर्वदा व सर्वत्र भी...इनसे अमान्य होते महान्।
तिरस्कार बहिष्कार हत्या भी...इनसे होते हैं गुणी महान्।। (4)

तीर्थंकर बुद्ध ईसा मसीह...सुकरात मीरा व वैज्ञानिक।
इनके द्वारा हुए दंडित...इतिहास पुराणों में वर्णित।।

सत्य शान्ति मोक्ष के इच्छुक...अलौकिक वृत्ति सहित होते।
'कनक' भी इनके हैं अभिलाषी... अपेक्षा प्रतीक्षा रहित चले।।(5)

❑❑❑

"वैश्विक एकता एवं सर्वोदय"

(राग : तुम दिल की धड़कन में...)

आओ मानव आओ हे विश्व!, विश्व कल्याण हेतु हमारे साथ।
संकीर्ण स्वार्थ भेदभाव छोड़, उदार सहिष्णु भाव के साथ।। (1)
संगठन में है शक्ति निहित, विघटन में है नाश निहित (निश्चित)।
प्रेम सहयोग में (से) होता है संगठन, स्वार्थ विद्वेष में (से) होता है विघटन।। (2)
चींटी दीमक से सीखो संगठन, वृक्ष बादल से सीखो विसर्जन।।
रस्सी में होती रेशा की शक्ति, संगठन में है विकास शक्ति।। (3)
बिन्दु से सिंधु होता निर्माण, अणु से ब्रह्माण्ड होता निर्माण।।
परस्पर प्रेम सहयोग सहित (युक्त), व्यक्ति सम्पूर्ण (सकल) होता समाज।। (4)
विश्व मानव है एक समाज, मानव गति सम एक समाज।।
औदारिक शरीर व त्रस पर्याय (मनुष्यलोक), गति आयु कर्म एक समान।। (5)
जाति धर्म क्षेत्र सीमा सह भी, भाव से बनो हे! उदारभावी!
मैत्री प्रमोद कारुण्य साम्य, जिससे मिटेंगे सभी वैषम्य।।(6)
हर देह के हर अंग भी, समान न होते हर दृष्टि से।
तथापि सहयोगी होते सभी हैं, तथाहि मानवों में समन्वय है। (7)

प्रेम सहयोग व संगठन से (में), द्वेष विद्रोह न होगा मानव से/(में)।
शान्ति सौहार्द्र व होगा सर्वोदय, कलह युद्धों का न होगा भय।। (8)
जिससे धन जन समय साधन, दुरुपयोग न होगा विज्ञान।
विकास में होंगे सभी विनिमय, ज्ञान विज्ञान का होगा सर्वोदय।। (9)
प्रगति होगी सभ्यता संस्कृति, नीति सदाचार कला व विभूति (सम्पत्ति)।
आत्मिक शान्ति मिलेगी सभी को, 'कनकनन्दी' का आशीष सभी को।। (10)

❑❑❑

"आदर्शमय जीवन हो"

(चाल : 1. आत्मशक्ति..., 2. शत शत वंदन..., 3. सायोनारा...)

आदर्शमय जीवन हो! ...नैतिकमय जीवन हो।...
सादा जीवन उच्च विचार से, जन गण मन पावन हो... (धत्ता)
स्वावलम्बन व स्वानुशासन से, जीवन संयममय हो...
आत्म विश्वास व विवेक सहित, सदाचार सहित हो...
हिंसा झूठ व कुशील त्याग से, जीवन सहज सरल हो...
संयममय जीवन हो... (1)

शोषण मिलावट भ्रष्टाचार रहित सभी का जीवन हो...
ईर्ष्या घृणा तृष्णा से रहित, जीवन सरल सहज हो...
भेदभाव वादविवाद शून्य, सहयोगमयजीवन हो...
समतामय जीवन हो... (2)

जाति-पंथ-मत-भाषा-राष्ट्र परे, वैश्विक भाव हो...
सहअस्तित्व सहजीवन सह, उदारमय भाव हो...
सप्त-व्यसन व अष्टमद रिक्त, सुखमय जीवन हो...
पावनमय जीवन हो... (3)

नैतिकता युक्त धार्मिकता से, आध्यात्मिक हो लक्ष्य...
प्रामाणिकता व कर्तव्यनिष्ठ सह, धार्मिकता हो प्रत्यक्ष...
आचरण भी उपदेश बने, सनम्र सत्यग्राही पक्ष...
निर्मलमय जीवन हो... (4)

क्षमा सहिष्णुता सेवा त्यागमय, एकतामय हो जीवन....
शौर्य-वीर्यमय अहिंसा पूर्ण, गौरवयुक्त हो जीवन...
'कनक' चिदानंद जीवन हो, सफलता हो जीवन...
पूर्णसफल जीवन हो... (5)

(कोशीवाड़ा (जैन श्वेत. तेरापंथ भवन) दिनांक 19 दिसंबर 2013 रात्रि 9.35)

❑❑❑

महान् लक्ष्यादि बिना सत्तादि से होता विनाश

(चाल : 1. छोटी छोटी गैया... 2. सायोनारा...)

महान् कार्य हेतु लक्ष्य चाहिए, उदार भावना पुरुषार्थ चाहिए।
केवल सत्ता सम्पत्ति बुद्धि डिग्री से, महान् कार्य न होता बिना प्रज्ञा से ।।स्थायी।।
रावण कंस हिटलर तानाशाहों से, महान् कार्य न हुए सत्ता आदि से।
महान् लक्ष्यादि बिना सत्ता आदि का, होता है दुरुपयोग सभी लोगों का।।
यथा सुयोग्य दयालु डाक्टर द्वारा, अस्त्रादि का प्रयोग होता विवेक द्वारा।
क्रूर डाकू द्वारा होता अस्त्रादि प्रयोग, हत्या लूटपाट हेतु होता नियोग।।
तथाहि सत्तादि का होता प्रयोग, लक्ष्यादि के अनुसार होता नियोग।
अधिक हानिकर होती सत्तादि, अधिक से अधिक विध्वंसकारी।।
महान् लक्ष्यादि आद्य विधेय, सत्ता आदि तदनुकूल विधेय।
अन्यथा अनर्थ होता निश्चय, विश्व इतिहास है इसी के साक्ष्य।।
परम विकास न होता सत्ता से, चक्री भी निवृत्त होते सत्ता से।
आत्म साधना से पाते वे मोक्ष, 'कनकनन्दी' का यह परम लक्ष्य।।

(खमनौर, दिनाँक 3 दिसंबर 2013, मध्याह्न 2.40)

❑❑❑

सत्ता-सम्पत्ति-शक्तिवान् करते हैं पाप अधिक

(अधिकांश रक्षक भक्षक बनते हैं)

(चाल : 1. शत शत वंदन..., 2. जहाँ डाल डाल पर...)

रक्षक बनकर भक्षक बनते हैं मानव अधिकतर।
सत्ता-सम्पत्ति शक्ति को पाकर करते हैं पापाचार।। 1

सत्ता पाकर गर्व करते, करते हैं अत्याचार।
फैशन व्यसन दिखावा करते-करते है भ्रष्टाचार।। 2
सत्तादि पाकर संतोषी न होते न करते दयादान।
और भी सत्ता के हेतु करते हैं अयोग्य काम।। 3
आक्रमण युद्ध हत्या लूट करते हैं भ्रष्टाचार।
चोरी डकैती मिलावट करते-करते हैं कुशीलाचार।। 4
इन्हीं कुकृत्य को अयोग्य न मानते करते महिमा मंडित।
दिग्विजय या राज्य विस्तार को मानते राष्ट्र समृद्ध।। 5
व्यापारिक कला या सत्तादि वृद्धि मानते शान व मान।
स्वयं का विकास शत्रु का विनाश मानते दुष्ट मानव।। 6
सत्तादि हीन मानव से अधिक पाप करते सत्तादिवान्।
इसी के लिए उदाहरण/(साक्षी) हैं रावण कंसादि ग्रेट ब्रिटेन।। 7
पर्यावरण का प्रदूषण भी होता है इनसे अधिक।
इसके कारण असंतुलित होता सामाजिक अधिक।। 8
बहु आरंभ परिग्रह वाले जाते हैं अतः नरक।
'राजेश्वरी सो नरकेश्वरी' इसी से बना अतः सुक्त।। 9
सत्ता को प्राप्त करके मानव करों है! परोपकार।
इसी हेतु ही 'कनकनन्दी' आह्वान करे बहुवार।। 10

❑❑❑

अच्छे या बुरे भाव व्यवहार के प्रमुख कारण

(बाह्य शिक्षा वातावरण कानून आदि भाव व्यवहार के मुख्य कारण नहीं)

(चाल : 1. शत शत वंदन...)

बिना भी शिक्षा प्रशिक्षण से, होते हैं भाव अनेक।
दबाव प्रलोभन भय बिना, होते हैं भाव अनेक ।। टेक।।
भूख-प्यास व सुख दुःख, क्रोध मान माया लोभ।
हंसना रोना कामुकता भय निंद्रा चिंता क्षोभ।।
पूर्व जन्मों के कर्म जब/(संस्कार से), उदय में आते जीवों में।
द्रव्य क्षेत्र काल भाव पाकर, परिणाम/(भाव) होते जीवों में।। (1)

यह सब भाव यथायोग्य, अनुभव आते जीवों में।
मानव पशु पक्षी कीट पतंग, वनस्पति आदि जीवों में।।
भले शिक्षादि के कारण कुछ, भाव होते न्यूनाधिक।
प्रमुख कारण कर्म हैं जिससे भाव होते अधिक।। (2)
आत्म ज्ञान व ध्यान संयम, महान् लक्ष्य पुरुषार्थ।
धैर्य समता तप त्याग द्वारा, होते हैं भाव यथार्थ।।
केवल वातावरण या देखादेखी, शिक्षा या कानून द्वारा।
धार्मिक क्रियाकांड से नहीं, होते विचार सारा।। (3)
वे सब बाह्य कारण हैं, यथा वृक्ष हेतु पानी।
बीज तो मूल/(प्रमुख) कारण है, बीज बिना क्या करे पानी।।
सत्य-तथ्य को जाने मानव, तथाहि करे आचरण।
इसी हेतु ही 'कनकनन्दी' गूँथा है सूत्र महान्।। (4)
(झालों की मदार, दिनांक 18 दिसंबर 2013 रात्रि 4.28 से 5.15 बजे।)

❑❑❑

किशोर भी होते हैं धर्मात्मा या पापत्मा

(आयु से नहीं पड़ता है अन्तर पाप-पुण्यादि में)
(चाल : 1. आत्मशक्ति..., 2. आओ बच्चों...)

कम आयु में भी होती भावना अच्छे या बुरे काम की।
परिपक्व भी होती मानसिकता, होती निर्णय क्षमता भी।।
लक्ष्य भी होते छोटे या महान्, तथाहि खोटे या पावन के।
तदनुकूल भी होती योग्यता, अठारह वर्ष से छोटी आयु की।।
आठ वर्ष व अन्तर्मुहूर्त में, तीर्थंकर बन सकते हैं।
इतने काल में साधु बनकर, आचार्य उपाध्याय बनते हैं।।
इतने काल में सम्यक्त्वी बनकर, आहारदान भी दे सकते हैं।
पूजा आराधना स्वाध्याय करके, श्रेष्ठ बालक बनते हैं।।
भद्रबाहु स्वामी जिनसेन स्वामी, बाल्यकाल में साधु बने।
शकुंतला पुत्र वीर भरत भी, सिंह के साथ खेल खेले।।

शंकराचार्य भी आठवें वर्ष में, चारों वेद के ज्ञानी बने।
बारहवें वर्ष में सर्व शास्त्र पढ़े, सोलहवें वर्ष में भाष्य लिखे।।
गुरुनानक भी नवमें वर्ष में, आध्यात्मिक प्रेमी बने।
ज्ञानेश्वर भी सोहलवें वर्ष में, ज्ञानेश्वरी लेखन किए।।
स्वामी दयानंद सरस्वती भी, चौदहवें वर्ष में विरक्त हुए।
चौदहवें वर्ष में वीर शिवाजी भी, राज्य शासन प्रारंभ किए।।
विवेकानंद/(दयानंद) भी अल्प आयु में, सत्य जिज्ञासु ज्ञानी बने/विदेशों/(धर्मसंसद) में भाषण दिए।
खुदीराम बोस भगत सिंह व चंद्रशेखर क्रान्तिवीर हुए।।
चौदहवें में सावरकर भी, क्रान्तिकारी वीर बने।
दसवें वर्ष में लेखक बनकर, आजादी हेतु कार्य किये।।
सुभाषचंद्र बोस भी बाल्यकाल से, बुद्धिमान व वीर बने।
स्वतन्त्रता हेतु देश-विदेशों में, आजाद हिन्द फौज गढ़े।।
वीर अभिमन्यु बाल्यकाल से ही, वीर साहसी योद्धा बने।
चक्रव्यूह की भेदन विद्या भी, माता के गर्भ से ही पढ़े।।
कुसंस्कार से अल्प आयु में (भी), अनेक पापी दुष्ट भी होते (हैं)।
अन्याय अत्याचार व हिंसा, चोरी डकैती व्यभिचार करते।।
पुराण इतिहास कथा चरित्र में, अभी भी देश-विदेशों में।
देखने, सुनने, पढ़ने में आते, फैशनी व्यसनी व पापी है।।
तदनुकूल भी पाप बांधते, मरकर के नरक में जाते।
सर्वज्ञ देव ने ऐसा बताया, आगम में ऐसा वर्णन हुआ।।
कोई माने या न माने इसे भी, कानून संविधान या राष्ट्र।
सत्य असत्य न होता कभी भी, परम सत्य तो होता अकाट्य।।
किशोर मुनि भी पूज्य होते, कम आयु में न होते अपूज्य।
गुणी-अगुणी से होता अन्तर, 'कनक' मान्य हैं भावानुसार।।
(खमनोर, दिनांक 3 दिसंबर 2013, रात्रि 9.52)

❑❑❑

भोग-भूमिजों से प्राप्त शिक्षायें

(राग : 1. छोटी छोटी गैया..., 2. सायोनारा...)

भोग-भूमिजों से (मुझे) मिलती है शिक्षा, सरल जीवन की नैतिक शिक्षा।
प्राकृतिक जीवन व निर्द्वद्व भाव, असंग्रह वृत्ति व अद्रोह भाव।। (1)
बुद्धि शक्ति व कला संपन्न, निरोग तथा अति सुन्दर वदन।
अस्थि भी होती वज्र समान तथापि जीते वे शान्त जीवन।। (2)
जीवन जीते वे सुदीर्घ काल, भोलाभाला व मृदु सरल।
अन्याय अत्याचार कुशील रिक्त, कलह विसंवाद तनाव रिक्त।। (3)
शोषक शोषित नहीं मालिक, भृत्य, धनी गरीब व उच्च व नीच।
अपना-पराया रिक्त स्वतन्त्र-भाव, नहीं सामाजिक बन्धन भाव।। (4)
मुक्त परिवार व राष्ट्र बन्धन, नहीं क्षेत्र की सीमा बन्धन।
एकाधिकार का न कोई बन्धन, आवास-निवास-भोजन-भूषण।। (5)
नहीं आक्रमण सीमा लंघन, युद्ध हत्या या अपहरण।
नहीं है बलात्कार शीलहरण, चोरी डकैती व दुराचरण।। (6)
प्रकृति का नहीं करते शोषण, पशु पक्षिओं का न करते हनन।
होते हैं भद्र व मंद कषायी, शुभ लेश्या युक्त सहज विनयी।। (7)
कानून संविधान शिक्षा के बिना, प्रलोभन दबाव भय के बिना।
इन गुणों से वे होते (हैं) संपन्न, शिक्षादि से युक्त हमें होना विधेय।। (8)
मिथ्यादृष्टि भी जब (वे) होते हैं,मरकर के वे स्वर्ग जाते हैं।
जो मानव पशु दान देते हैं, मरकर वे आर्य बनते हैं।। (9)
इन सब गुणों को मुझे पाना है, उपलब्धि का न गर्व करना है।
रत्नत्रय से भी मोक्ष पाना है, 'कनक' को निज भाव पाना है।। (10)

(कदमाल 7 दिसंबर 2013 रात्रि 9.25)

❑❑❑

ग्रामीण संस्कृति एवं प्रवृत्ति

(चाल : 1. आत्मशक्ति..., 2. जय हनुमान..., 3. सायोनारा...,
4. चंदा मामा...)

ग्रामीण संस्कृति भोली भाली/(प्यारी वाली), सेवा सहायता करने वाली

प्रकृति संरक्षण करने वाली, सबके भरण-पोषण वाली।। स्थायी।।
खेती खलिहान वृक्ष वाली, पशु पक्षी गाय भैंस वाली।
हरियाल (चादर) ओढ़नी ओढ़ने वाली, प्राकृतिक गीत गाने/(सुनाने वाली)।। (1)
भारतीय संस्कृति रक्षण वाली, सादा सहज जीवन वाली।
प्रायोगिक संस्कार शिक्षा वाली, प्रदूषणों से रहित वाली।। (2)
जिस की गोद में बच्चे पलते, उछल कूद व खेल खेलते।
भेदभाव से रहित होते, जाति धर्म का भेद न करते।। (3)
पशु पक्षी से प्यार है करते, प्रकृति से नेह धरते।
नदी नाल में स्नान करते, वन उपवन में भ्रमण करते।। (4)
अनेक जाति के लोग हैं रहते, बढ़ई कुम्भार धोबी रहते।
अन्नदाता कृषक रहते, दूध प्रदाता ग्वाले रहते।। (5)
आत्मनिर्भर ग्रामीण होते, परिश्रमी व साहसी होते।
धर्म प्रेमी विनम्र होते, त्याग दया से सहित होते।। (6)
कागजी डिग्री रहित होते, अनुभव ज्ञान से सहित होते।
भाषणबाजी से रहित होते, आत्मिक संवाद सहित होते।। (7)
शुद्ध ताजा भोजन करते, दूध घी व छाछ पीते।
ताजे फल सब्जी खाते, शुद्ध पानी व श्वास लेते।।(8)
बाजारवाद से रहित होते, खाते खिलाते व नेह/(प्रेम) देते।
उदार हृदयी निश्छल होते, 'कनकनन्दी' को अच्छे लगते।(9)
प्यारे ग्रामीण तुम सभी सुनो, ग्रामीण संस्कृति को हेय न (महान्) मानो।
स्व संस्कृति को त्याग न करो, अप संस्कृति को हिये न धरो।।

सगरुन, दिनाँक 5 दिसंबर 2013, रात्रि 7.18 (रात्रि विश्राम में)
मगरा प्रांत की ग्रामीण संस्कृति से प्रभावित यह कविता।

❑❑❑

"दशविध शक्ति की जागृति"

(राग : सायोनारा..., तुल दिल की धड़कन में...)
जागो जागो महाशक्ति.. जागो मेरी आत्मशक्ति।
जागो मेरी श्रद्धा शक्ति... जागो मेरी प्रज्ञाशक्ति।।
जागो मेरी क्षमा शक्ति ... नष्ट करो क्रोध शक्ति।

नम्रता शक्ति भी जागो ... नष्ट करो मान शक्ति।। (1)
आर्जव शक्ति भी जागो ... कुटिलता नाश करो।
सत्य शक्ति तू भी जागो ... मिथ्या मोह नाश करो।।
जागो जागो शुचि शक्ति ... नाश करो तृष्णा शक्ति।
सनम्र सत्यग्राही बनूँ ... क्षमाशील शुचि बनूँ।। (2)
संयम शक्ति भी जागो ... असंयम नाश करो।
आत्मानुशासी मैं बनूँ... मनेन्द्रिय वश करूँ।।
धैर्य शक्ति तू भी जागो ... अधीरता दूर करो।
धीर वीर मैं भी बनूँ ... गंभीर अचल बनूँ।। (3)
जागो मम ध्यान शक्ति ... कर्म शक्ति नष्ट करो।
आत्म स्थिरता को पाऊँ ... ज्ञायक भाव मैं पाऊँ।।
जागो मेरी ब्रह्म शक्ति ... अनात्म भाव को नाशो।
विस्तार करूँ स्वभाव ... अनन्त अक्षय भाव।। (4)
जागो जागो सुख शक्ति... सर्व दुःख का विनाश।
सच्चिदानंद मैं बनूँ ... शुद्ध बुद्ध शिव बनूँ।।
तेरी जागृति हेतु मैं.. समता की साधना करूँ।
स्वाध्याय व त्याग करूँ... निस्पृहता व तप करूँ।। (5)
आप ही परम शक्ति ... भौतिक शक्ति से परे।
अविनाशी हो अविकारी ... ब्रह्माण्ड की परा शक्ति।।
मुझमें ही मेरे द्वारा ... प्रगट हो सर्व शक्ति।
आह्वान जागृत करूँ... 'कनक' तुझे मैं पाऊँ।।(6)

❑❑❑

उत्तम भाव बिना शिक्षादि से भी न होते श्रेष्ठ काम

(राग : शत शत वन्दन ...)

जब तक भाव उत्तम न होता, शिक्षा धर्म कानून से (भी) अच्छा न होगा।
भाव से ही प्रेरित होते समस्त कर्म, उत्तम मध्यम (अथवा) जघन्य कर्म।। (1)
शरीर इन्द्रिय मन साधन यंत्र, शिक्षा धर्म न्याय राजनीति विज्ञान।
ये भी सब संचालित होते भाव से, विद्युत् चालित यंत्र यथा विद्युत् से।। (2)

हीटर कूलर पंखा टीवी मोबाइल, काम तो पृथक्-पृथक् शक्ति बिजली।
भाव ही शुभ अशुभ शुद्ध भी होता, यथा भाव तथा कार्य घटित होता।। (3)
भाव को उत्तम करना आद्य कर्तव्य, इसी हेतु शिक्षा कानून धर्म माध्यम।
उदार सहिष्णु क्षमा मृदुता शौच/(दम), दया दान सेवा सत्य होते उत्तम।।(4)
श्रेष्ठ भाव बिना न धर्म उत्तम, श्रेष्ठ भाव बिना न शिक्षा उत्तम।
तथाहि कानून राजनीति संविधान, उच्च भाव बिना न होते उत्तम।।(5)
संकीर्ण स्वार्थी मोही अज्ञानी मानव, उच्च भाव को न करे उद्भव।
केवल शिक्षा कानून/(धर्मादि) धनादि द्वारा, श्रेष्ठ बनने का कर्म करता सारा।। (6)
रावण कंस समान ही करता कर्म, महान् बनने का भी पालता भ्रम।
विपरीत दिशा में ही करता गमन, लक्ष्य प्राप्त करने का पालता भ्रम।। (7)
अच्छा भाव हेतु करो समस्त कर्म, अच्छा भाव से ही करो उत्तम कर्म।
इसी से ही सर्वांगीण होगा विकास, 'कनकनन्दी' का लक्ष्य आत्म विकास।। (8)
(मचीन्द, दिनाँक 10 दिसंबर 2013, रात्रि 10.20)

❑❑❑

नैतिक<धार्मिक<आध्यात्मिक

(राग : 1. शत शत वन्दन ..., 2. है अपना दिल तो ...)
नैतिक धार्मिक आध्यात्मिक, उत्तरोत्तर होते हैं श्रेष्ठ।
सामाजिक नियम भौतिक होते, धार्मिक होते विवेकवान्।।
आत्मानुभवी होते आध्यात्मिक, जो विवेकयुक्त नीति पालते।
रुढ़िगत नीति नहीं पालते, कुछ धार्मिक नीति से परे होते।।
मर्यादित नियम व संविधान, सामाजिक नियम व कानून।
रीति रिवाज परम्परा मान्य, सामान्य नैतिक जन करते मान्य।।
सही नीति को मानते धार्मिक जन, नीति से परे भी करें सत्य ज्ञान।
आत्मा अनात्मा भी करते ज्ञान, आत्म विकास हेतु होते यत्नवान्।।
धर्म रहित रीति को न करते मान्य, अन्धविश्वास सहित नीति नियम।
जो स्व पर अहितकारी क्रूर कानून, विश्वास न करते जो अप्रमाण।।
इनसे परे भी होते आध्यात्मिक, उदार व्यापक व आत्मनिष्ट।
भेदभाव परे वे होते संत, ज्ञान ध्यान तप में होते रक्त।।

सत्ता सम्पत्ति प्रसिद्धि से परे होते, भौतिक सीमा से परे होते।
जाति पंथ मत से भी परे होते, सच्चिदानंदमय होना चाहते।।
राग द्वेष मोह को नाश करते, सत्य समता व शान्ति चाहते।
वैर विरोध से रहित होते, अहं दीन परे सोऽहं को ध्याते।।
आत्मा परमात्मा को वे जानते, आत्मा से परमात्मा होना चाहते।
प्रयत्न इसी हेतु ही वे करते, परमात्मा स्वरूप वे बनते।।
सच्चे नैतिक से बनो हे! धार्मिक, धार्मिक से बनो आध्यात्मिक
इसी से ही होगा परम विकास, 'कनक' का लक्ष्य है आत्म विकास।।

❑❑❑

समस्त सांसारिकता से परे है आध्यात्मिकता

(राग : छोटी छोटी गैया...)

लौकिक से परे है आध्यात्मिक, भौतिक से परे है आध्यात्मिक।।
संसार से परे हैं मोक्षतत्त्व, कर्म रहित है आत्मतत्त्व।। (1)

धर्म अर्थ काम परे मोक्ष तत्त्व, चारों गति से भिन्न मोक्ष तत्त्व।।
तन मन अक्ष परे आत्म तत्त्व, समत्व बन्धन रिक्त मोक्ष तत्त्व।। (2)

अभ्युदय सुख परे मोक्ष सुख, जन्म जरा मृत्यु परे मोक्ष सुख।
भोग उपभोग शून्य आत्म सुख, अक्षय अनन्त है आत्म सुख।। (3)

पुण्य पाप रहित है आध्यात्मिक, सामाजिकता से परे आध्यात्मिक।
कानून संविधान राजनीति रीति रिवाज रहित/(शून्य/रिक्त) आध्यात्मिक।। (4)

अपना पराया भेद भाव रिक्त, जीवन समास गुणस्थान रिक्त।
निश्चय व्यवहार नय रिक्त, औदयिक उपशमादि भाव रिक्त।। (5)

संकल्प-विकल्प व संक्लेश रहित, अपेक्षा उपेक्षा प्रतीक्षा रहित।
पंथ मत जाति राष्ट्र सीमा रहित, अनन्त ज्ञान दर्शन सुख सहित।। (6)

इसी हेतु ही सभी धर्म साधना, तीर्थंकर (भी) इसी हेतु करते साधना।
यह ही परम लक्ष्य, परम विकास, 'कनकनन्दी' के हैं सह सर्वस्व।। (7)

❑❑❑

''अलौकिक वृत्ति युक्त होते हैं आध्यात्मिक सन्त''

(राग :तुम दिल की धड़कन... , आत्मशक्ति से...)

***'आर्किंचन्य'** होते हैं सन्त ... नहीं होते हैं भिखारी।*
विश्व को ज्ञान देने वाले ... होते हैं सबके हितकारी।। ध्रु.।।
***'अहिंसा क्षमा'** पालने वाले ... नहीं होते हैं कायर।*
'वीर अतिवीर' होने से ... किसी से भी न लगता डर।।
*'वैश्विक **कुटुम्बी'** होने से ... नहीं होता स्व परिवार।*
***'आत्मवैभव'** होने से ... नहीं होता धन दरकार।। (1)*
***'आध्यात्मिक नियम'** पालते .. करते **'आत्मानुशासन'**।*
इसलिये न पालन करते .. लौकिक राजनीति कानून।।
***'आरम्भ परिग्रह'** 'अर्थकाम' से ... रहित होते हैं सन्त।*
***'ध्यान अध्ययन'** धर्म मोक्ष में ... तत्पर रहते हैं सन्त।। (2)*
***'सत्ता सम्पत्ति प्रसिद्धि'** रहित ... 'सच्चिदानंद' सहित।*
'लौकिकवृत्ति' रहित होकर ... 'अलौकिक वृत्ति' सहित।।
***'सत्य समता शान्ति'** सहित... **'संकल्प विकल्प'** रहित।*
***'कनकनन्दी'** भी साधना रत... ऐसा ही लक्ष्य सहित।। (3)*

❑❑❑

सुख प्राप्ति के उपाय

(चाल : शत शत वन्दन...)

सभी जीव चाहते हैं सुख .. सुख से वे होते हैं खुश।
इसका कारण है आध्यात्मिक .. आत्म स्वभाव है अनन्त सुख ।। ध्रु.।।
स्वभाव कभी न नष्ट होता... भले उसमें विकार होता।
पानी का स्वभाव यथा शीतल ... गर्म के बाद भी हो जाता शीतल।।
तथाहि हर अवस्था में जीव ... सुख के लिए करते प्रयास।
सही उपायों से मिलता है सुख ... अन्यथा न मिलता सही सुख ।। (1)
सुख प्राप्ति के सही उपाय है ... पावन भावना पावन काम।
सुख देने से सुख ही मिलता ... यथा बोते तथाहि पकता।।
प्रेम/(अहिंसा) देने से प्रेम ही मिलता ... प्रेम होता है आत्मा का गुण।

आत्मिक गुणों से सुख मिलता ... अनन्त होते हैं आत्मिक गुण।। (2)
दान दया व परोपकार ... वात्सल्य सहयोग सदाचार।
क्षमा सहिष्णुता मिलनसार ... संयम धैर्य व शिष्टाचार।
सत्य समता से मिलता है सुख ... शान्ति संतोष से मिलता है सुख।
इनसे विपरीत जो भाव काम ... उनसे मिलता है दुःख निदान।। (3)
अन्याय अत्याचार शोषण द्वारा ... फैशन व्यसन पापों के द्वारा।
पर अपकार व दुःख के द्वारा ... दुःख ही सही मिलता संक्लेश द्वारा।।
अनुभव से यह ज्ञात भी होता ... महापुरुषों से भी ज्ञान मिलता।
विज्ञान से भी यह सिद्ध होता ... 'कनक' आत्मिक सुख चाहता।। (4)

❑❑❑

स्वागत हो! नवीन वर्ष

(तर्ज : शत शत वन्दन... सायोनारा)

हर रोज ही नया वर्ष है हर रोज ही वर्ष प्राचीन।
नित्य नूतन नित्य प्राचीन परिणमन है हर दिन (क्षण)
खगोलीय परिणमन से ऐसा होता है परिणमन।
नवीन उच्च भाव उदय से, होता अन्तरंग परिणमन/(परिवर्तन)
अनन्त दिन हुए नवीन, तथाहि हुए वर्ष अनन्त।
अनन्त जन्म मरण हुए तथापि न हुए दुःखों का अनन्त।
दुःख नाशक भाव उदय से, होता है रोज नवीन दिन/(क्षण)
(जब होता है जिस जीव के)
उस (ही) समय से नवीन वर्ष प्रारम्भ होता उस जीव के।
(होता है जीवन धन्य-धन्य)
दुःख नाशक भाव होते हैं, उदार उदात्त भाव पावन।
दयादान व परोपकार, क्षमा सहिष्णु धैर्य संयम।।
इसी से आनन्द उत्सव होता, होता है जीवन ज्योतिर्मय।
तन मन आत्मा पुलकित होते, जीवन होता सुखमय।।
अन्यथा सभी वृथा होते, यथाहि शव के श्रृंगार।
धार्मिक क्रियाकाण्ड, अथवा तामझाम व आडम्बर।।

निवास करते जहाँ उत्तम भाव, वह होता नव संवत्सर।
ऐसे संवत्सर के द्वारा, नवीन वर्ष का हो सत्कार।।
उत्तम भाव व्यवहार बिना, कोई भी दिन न होता उत्तम (नवीन)
उत्तम भाव व्यवहार द्वारा 'कनक' का हर रोज नवीन (उत्तम)
('कनक' करे नव वर्ष आह्वान)

(ईसवाल जै.श्वे. मूर्तिपूजक प्राचीन क्षेत्र, 29 दिसंबर 2013, रात्रि 8.55 से प्रातः 7.15 बजे)

❑❑❑

नवीन वर्ष में स्व मूल्यांकन (हिसाब)

(तर्ज : शत शत वन्दन... 2. आत्मशक्ति...)

नवीन वर्ष की पूर्व सन्ध्या पर, कर रहा हूँ मैं आत्मचिन्तन।
क्या खोया मैं, क्या पाया मैं, और क्या पाना है करूँ चिंतन।। (स्थायी)।।
परिवार त्यागा विश्व अपनाया, उदारता का करूँ चिन्तन।
ममत्व त्यागा समत्व पाया, भेदभाव परे करूँ चिन्तन।।
भौतिक त्यागा आध्यात्मिक पाया आत्मोलब्धि हेतु करूँ मैं ध्यान।
रूढ़ि संकीर्णता नहीं भाती है, उसी से परे मैं करूँ चिन्तन।। (2)
सीमातीत मैं होना चाहता हूँ, उसी हेतु मैं करूँ प्रयाण।
राग द्वेष मोह वैभाविक परे, स्व-स्वरूप का मैं करूँ ध्यान।
द्रव्य क्षेत्र काल भाव न सुयोग्य, अतएव न पाया लक्ष्य महान्।। (3)
ख्याति पूजा लाभ प्रसिद्धि से परे/(न चाहूँ), सत्य समता शान्ति मैं चाहूँ।
इसकी उपलब्धि पूर्ण न हुई, इसी हेतु मैं साधना चाहूँ।।
वाद-विवाद-मत-पंथ परे, परम सत्य का अनुभव मैं चाहूँ।
इन्द्रिय तर्क मन यंत्र परे, परम सत्य का अनुभव मैं चाहूँ।। (4)
सत्यग्राही व उदारभाव से, विनम्रता से यह सब चाहूँ।
दबाव प्रलोभन भय स्वार्थ परे, आत्महित हेतु सब चाहूँ।।
नवीन वर्ष में इसी हेतु मैं, प्रबल पुरुषार्थ करना चाहूँ।
दिखावा आडम्बर क्रियाकाण्ड परे, आत्म विशुद्धि से यह मैं चाहूँ।। (5)
अपेक्षा उपेक्षा प्रतीक्षा रहित, नकल व प्रतिस्पर्द्धा से परे।

सहज सरल सादा सीधा से, यह सब चाहूँ रुढ़ि से परे।।
मेरा मूल्यांकन सतत करूँ (मैं), आत्मिक प्रगति करने हेतु।
छोड़ के लन्द-फन्द परप्रपंच, 'कनक' आत्म सुधार हेतु।। (6)
(लोयरा, दिनांक 31 दिसंबर 2013, रात्रि. 7.35 बजे)

❑❑❑

धन्य हे ! वे...

(तर्ज : शत शत वन्दन...)

धन्य हे! तीर्थंकरों समभाव, जो सोलह भाव भाते हैं।
स्व-पर-विश्व हित के हेतु, सहज प्रवृत्त होते हैं। ...स्थायी
धन्य हे! माता सम के वे हाथ, जो लालन पालन करते हैं।
सेवा (सुश्रुषा) दान प्यार दुलार सह सुधार हेतु डांटते हैं।।
दया से द्रवित धन्य हे! चक्षु, जीव रक्षा हेतु देखती हैं।
देव शास्त्र गुरु दर्शन करती, सुदृष्टि से देखती है।। (1)
धन्य थे कर्ण! जो सदा सुनते, हितोपदेश वचनों को।
पर निंदा विकथा न सुनते, सत्य सुनते ग्रहण को।।
धन्य थे मन! जो नमन करते, हिताहित गुण दोषों को।
स्मरण अनुप्रेक्षण ध्यान करते आत्म विकास को।। (2)
धन्य थे शिर! जो नम्र होते हैं, गुणी व गुण के समक्ष में।
नहीं झुकते असत्य समक्ष उच्च न उठते घमण्ड में।।
धन्य थे उदर! जो ग्रहण करते, सात्विक पौष्टिक शाकाहार।
ग्रहण न करते मद्य मांस नशा, अन्याय अर्जित शाकाहार।। (3)
धन्य थे पैर! जो गमन करते, स्व पर हित हेतु स्वास्थ्यकर।
जीवों को बचाकर आगे बढ़ते, नहीं भटकते इधर-उधर।
धन्य थे धन! जो न्याय उपार्जित, त्याग व दान हेतु हो विसर्जित।
तृष्णा आसक्ति शोषण रहित, आत्म कल्याण में न बाधक।। (4)
धन्य हे! यह शिक्षा जो सर्वोदयी, तन मन आत्मा हितकारी।
हिताहित विवेक उत्पादक, संवेदनशील स्वाबलम्बी।।
तथापि सत्ता शक्ति प्रसिद्धि, बुद्धि डिग्री व अधिकार।

स्व पर हितकारी जो होते, धन्य होते वे, अन्य को धिक्कार।। (5)
विकास होता है सदुपयोग से, दुरुपयोग से होता विनाश।
मोक्ष मिलता है आत्मिक गुणों से, 'कनकनन्दी' चाहे आत्म विकास।। (6)

❑❑❑

महान् कार्यों में बाधक-साधक कारण

(चाल : हल्दीघाटी में समर..., 2. शत शत वन्दन...)

दीर्घ अनुभव में पायो हैऽऽऽ, जो महानज्ञानियों ने गायो हैऽऽऽ
महान् कार्य में बाधक है..., संकीर्ण भाव-व्यवहार सभी ऽऽऽ(ध्रु.)
संकीर्ण स्वार्थ या क्रोध मान ... ईर्ष्या घृणा या कम ज्ञान...
विद्वेष कलह व भेदभाव ... वैर विरोध या नीचभाव ...
अनुभव हीन व दीनभाव ... परनिन्दा चुगली व अपमान... महान् कार्य में (1)
आलस्य प्रमाद व मिथ्यादान ... किंकर्तव्य मूढ़ भ्रम भाव...
पर अपेक्षा उपेक्षा प्रतीक्षा ... परावलम्बन व कुशिक्षा ...
आत्म विश्वास हीन क्षुद्र भाव ... अन्धानुकरण व कुण्ठाभाव महान् कार्य में (2)
कुद्रव्य क्षेत्र काल भाव काम ... समायोजन रिक्त सभी काम...
सुनिमित्त उपादान रिक्त काम ... पापोदय व क्षीण पुण्य ...
नहीं हो पाते हैं कार्य महान् ... यह आगम अनुभव प्रमाण ... महान् कार्य में (3)
इसी से विपरीत कारणों से... महान् भाव व्यवहारों से...
सहयोग समन्वय पुण्य से ... निमित्त उपादान योगों से...
होते हैं महान् काम सभी ... 'कनकनन्दी' चाहे योग्य सभी... महान् कार्य में (4)
(मोलेला, दिनांक 25 दिसंबर 2013, प्रातः 7.05)

❑❑❑

नीति सुमनाञ्जली

(तर्ज : छोटे छोटे शिष्य हैं लेकिन....)

छोटे ही छोटे होते आकार से नहीं, क्षुद्रता से क्षुब्ध होते उम्र से नहीं।
विवेकी ही ज्ञानी होते साक्षरी नहीं, सुभाव से धर्मी होते क्रिया से नहीं।
तृष्णा से दरिद्री होते अपरिग्रही नहीं, समता से साधु होते वेश से नहीं।
अकषायी अहिंसक है कायर नहीं, आत्मजयी विश्वजयी दिग्विजयी नहीं।

सत्य ही परमेश्वर वचन के नहीं, निर्लोभ ही शुचिता स्नान से नहीं।
सुगुणों से सुंदरता फैशन से नहीं, नम्रता से महानता घमंड से नहीं।
समता से क्षमाधर्म क्षमावाणी नहीं, सहज ही सरलता जड़ता (अज्ञता) नहीं।
मनजयी संयमी है आलसी नहीं, तृष्णात्यागी तपस्वी है निराहारी नही।
आत्मजयी वीर होते बर्बर (क्रूर) नहीं, रक्षक ही शासक है पीड़क नहीं।
संतोष से ही सम्पन्नता सम्पत्ति से नहीं, भाव में संसार है ब्रह्माण्ड नहीं।
सत्य से न्याय है साक्षी से नहीं, सच्चा ज्ञान प्रमाण है फैसला नहीं।
अच्छी भावना प्रभावना है प्रसिद्धि नहीं, आत्मशान्ति धर्म है पंथ में नहीं।
पाप से पतन है त्याग से नहीं, भोगी से प्रदूषण है योगी से नहीं।
आप्त से आगम है परम्परा से नहीं, सच्चाई से आम्नाय है झूठ से नहीं।
आत्मनिष्ठ अनुयायी भीड़तंत्र नहीं, पुरुषार्थी प्राप्त करे धोखेबाज नहीं।
स्वविश्वासी धैर्यशाली बलशाली नहीं, सत्यनिष्ठ नम्रभावी चापलूस नहीं।
अनजान शंकालू प्रज्ञावान् नहीं, अल्पज्ञान से आश्चर्य है पूर्ण ज्ञान से नहीं।
आकार से नहीं महान् गुणवत्ता से सही, छोटे दीपक से भी अंधेरा भागता सही।

❑❑❑

छोटे छोटे सदाचार नित्य ही पालो

(तर्ज : 1. अच्छा सिला दिया.. 2. छोटी छोटी गैया...)

छोटे छोटे सदाचार नित्य ही पालो, श्वास क्रिया सम इसे नित्य ही करो
छोटे छोटे बच्चों को प्यार करो, बड़े बड़े व्यक्ति का आदर करो,
दुर्गुणी दुर्जनों से दूर ही रहो, सुगुणी सज्जनों की संगति करो,
प्यास दूर करने हेतु पानी तो पियो, प्यास दूर करने हेतु विष न पियो।।
छोटे छोटे सदाचार .... (1)

साक्षर बनो किन्तु राक्षस नहीं, सभ्यता संस्कृति त्याग भी नहीं,
आधुनिक बनो किन्तु उद्दण्ड नहीं, फैशनी व्यसनी मूढ़ बनो नहीं,
धार्मिक बनो किन्तु संकीर्ण नहीं, अन्धविश्वासी बनो भी नही।
छोटे छोटे सदाचार .... (2)

भोजन करो किन्तु सात्विक करो, शाकाहार मिताहार हित भी करो,
बाते भी करो किन्तु सत्य भी बोलो, हित मित प्रिय वच (बोल) सदा ही बोलो,

कार्य भी करो किन्तु उचित करो, प्रामाणिक अहिन्सक समय पे करो।
छोटे छोटे सदाचार .... (3)

कृषि व्यापार सेवा शिल्पादि करो, धर्म नीति सदाचार कभी न भूलो,
नेता न्यायाधीश शासक पुलिस बनो, राष्ट्रहित मर्यादा दया न भूलो,
शिक्षक बनो ज्ञानी अनुभवी भी बनो, वात्सल्य ज्ञानदाता गुण भी बनो।
छोटे छोटे सदाचार .... (4)

विद्यार्थी बनो किन्तु जिज्ञासु बनो, गुणग्राही सदाचारी विनम्र बनो,
स्वाध्यायी बनो अनुप्रेक्षा भी करो, अनुभवी आत्माकांक्षी व्यापक बनो,
छोटे छोटे सदाचार महत्व के हैं, 'कनकनन्दी' को ये गुण सदा भाते हैं।
छोटे छोटे सदाचार .... (5)

□□□

होना चाहिये

सत्य समता का सम्मान होना चाहिए
शान्ति प्राप्ति हेतु प्रयास होना चाहिए।। (1)
धर्म न रुढ़ि से बना, न देश मिट्टी से।
इसके लिए तो सत्य शान्ति होना चाहिए।। (2)
न डिग्री में ही योग्यता, न मंदिर में ही धर्म है।
इसके लिए ज्ञान और दया होना चाहिए।। (3)
न संसद में ही विधान, न कोर्ट में न्याय है।
इसके लिए तो समता सत्य होना चाहिए।। (4)
सत्ता व सम्पत्ति से न होता है कोई बड़ा।
इसके लिए श्रेष्ठ ध्येय होना चाहिए।। (5)
बंगला व साधन से न होता कोई सुखी।
इसके लिए तो संतोष और शान्ति होनी चाहिए।। (6)
प्रसिद्धि व भीड़ से न कोई आधुनिक होता।
इसके लिए आत्मिक शान्ति होना चाहिए।। (7)
फैशन व व्यसन से सन्त न होता महान्।
इसके लिए तो उदार सोच होना चाहिए।। (8)

धन के संग्रह से न कोई सच्चा श्रीमान्।
इसके लिए तो धन का सदुपयोग चाहिए।। (9)
'कनकनन्दी' की भावना का सम्मान होना चाहिए।
विश्वगुरु बनने का अभियान होना चाहिए।। (10)

❑❑❑

अनुशासन से बने जीव महान्

(तर्ज : यमुना किनारे श्याम...)

अनुशासन भंग किया न करो, विपत्ति को नियंत्रण दिया न करो।
अनुशासन से धीरे धीरे होता विकास, अनुशासन भंग से होता विनाश।।
आत्मानुशासन सर्व विकास मूल, अनुशासन विहीनता विनाश मूल।। (1)

अनुशासन है संयम नीति नियम, अनुशासन है ध्यान सदाचरण।
अनुशासन है इन्द्रिय मन संयम, क्रोध मान माया लोभ काम संयम।।
शालीनता विनम्रता आज्ञापालन, समय पे कर्तव्यों का परिपालन।। अनुशासन... (2)

अनुशासन से बनते तीर्थेश बुद्ध, ऋषि गणधर महात्मा सिद्ध।
व्यक्ति परिवार समाज संघ राष्ट्र का विकास होता है सदा विश्व का।।
अनुशासन से सही काम होते हैं, अनुशासन से सम्मान शान्ति मिले है।। (3)

अनुशासन भंग से होता अनर्थ, दुर्घटना अपमृत्यु कार्य विनाश।
अनुशासन भंगकारी होता दुर्जन, मान मर्यादा नाशक होता कुजन।।
धन जन समय का करे विनाश, स्व पर के विनाशक दुष्ट राक्षस।। (4)

अनुशासन भंगकारी कंस रावण, दुर्योधन हिटलर बिन लादेन।
अनुशासन हीनता का फल पाया है, स्व पर दुष्टता का फल चखा है।।
स्व स्व दुष्कर्म का फल पाते हैं, पाप के अनुसार पीड़ा पाते हैं।। (5)

अनुशासन है प्राण शिक्षा धर्म का, अनुशासन है प्राण सदाचार का।
न्याय राजनीति प्रशासन का प्राण है, विकास का प्राण है अनुशासन।
"कनकनन्दी" के प्रिय अनुशासन, अनुशासन से बने जीव महान्।। (6)

❑❑❑

नैतिक नियम का पालन न कर सको तो

(चालः शत शत वन्दन...)

व्यायाम यदि न कर सको तो, शारीरिक श्रम तो सदा करना।
प्राणायाम यदि न कर सको तो, पैदल चलना मत भूलना।। (1)
ध्यान यदि न कर सको तो, टेंशन कभी भी मत करना।
अध्ययन यदि न कर सको तो गुणग्राही भी सदा बनना।। (2)
पूजा यदि न कर सको तो, पूज्यों प्रति भक्ति सदा रखना।
तपस्या यदि न कर सको तो, तृष्णा भाव को नहीं करना।। (3)
साधना यदि न कर सको तो, समता भाव सदा रखना।
पुण्य यदि न कर सको तो, पाप भाव भी नहीं करना। (4)
सही नेता यदि न बन सको तो, राष्ट्रद्रोही भी मत बनना।
न्यायपति यदि न बन सको तो, अन्याय कभी भी मत करना।। (5)
गाय सम यदि बन न सको तो, सर्प सम भी मत बनना।
फूल यदि तुम बिछा न सको तो, काँटा कभी न बिछाना।। (6)
प्रेम यदि तुम दे न सको तो, घृणा भाव भी मत रखना।
प्रशंसा किसी की कर न सको तो, निंदा कभी भी मत करना।। (7)
अपना यदि न बना सको तो, भेदभाव भी मत करना।
ब्रह्मचर्य नहीं रख सको तो, कुशीलाचार भी मत करना।। (8)
गाना यदि न गा सको तो, गाली कभी भी मत देना।
प्रसन्न कभी न कर सको तो, दुःखी कभी भी मत करना।। (9)
मोक्ष की इच्छा यदि नहीं तो, क्षोभित भी मत करना।
निर्वाण की इच्छा यदि नहीं तो, निर्मम भी मत बनना।। (10)
सत्यमार्ग में न चल सको तो, असत्य मार्ग में मत जाना।
नदी पार न कर सको तो, नदी में भी मत डूबना।। (11)
सत्यासत्य का विवेक नहीं तो, विवेकी की आज्ञा पालन।
विष मारने की विद्या नहीं तो, विषहर की आज्ञा मानना।। (12)
रक्षा यदि न कर सको तो, कभी जीवों को मत मारना।
दान यदि न कर सको तो, दम्भ कभी भी मत करना।। (13)

धर्म यदि न कर सको तो, आडम्बर भी मत करना।
पानी यदि वर्षा न सको तो, बवन्डर भी मत करना।। (14)
ज्ञान यदि न कर सको तो, ज्ञानी से भी मत चिढ़ना।
शान्त यदि न रह सको तो, शान्त को भी न सताना।। (15)
मौन यदि न रह सको तो, झूठ भी कभी मत बोलना।
उपवास भी न कर सको तो, कुखाद्य कभी भी मत खाना।। (16)
उपकार यदि कर न सको तो, अपकार भी मत करना।
पिला न सको यदि पानी तो, जहर कभी भी मत पिलाना।। (17)
बोल न सको हित बोल तो, कटु बोल भी मत बोलना।
पैर न यदि दबा सको तो, गला कभी भी मत दबाना।। (18)
क्षमादान न कर सको तो, विद्वेष कभी भी मत रखना।
दान यदि न कर सको तो, शोषण कभी भी मत करना।। (19)
औषधि दान न कर सको तो, प्रदूषण भी मत फैलाना।
पर्यावरण रक्षा न करो तो, वृक्षों को भी मत काटना।। (20)

❑❑❑

सभी के लिए नैतिकाचार

(धार्मिक या अधार्मिक सबके लिए करणीय)

(सुख प्राप्ति के लिए धार्मिक या अधार्मिक के लिए करणीय)

(तर्ज : परदेशियों से न अंखियाँ मिलाना ...)

मानव चाहो यदि सुख है पाना, नैतिक कार्य पे सदा ही चलना।
किसी भी धर्म पंथ/(रूढ़ि) को मानो या न मानो, नैतिक सदाचार सदा ही पालना।। (टेक)
क्रोध मान माया लोभ न करना[2]... हित मित वचन बोलना...[2]।
हत्या व चोरी ठगी जूआ को त्यागना, पराई स्त्री से भोग न करना ।।1।।
नशीली वस्तुओं का सेवन त्यागना...[2], मछली मांस व अंडा को छोड़ना...[2]।
निरीह पशुओं की हत्या न करना, पर्यावरण की रक्षा भी करना।।2।।
विनम्र सदाचारी गुणग्राही बनना...[2], सत्य तथ्य को स्वीकार करना...[2]।
रोगी गरीबों की सहायता करना, माता पिता की सेवा भी करना।।3।।
मिलावट शोषण कभी न करना...[2], भ्रष्टाचारी व आतंकी न बनना...[2]।

दीन हीनों को कभी न सताना, विधर्मियों से भी द्रोह न करना।।4।।
अधर्मी विधर्मी कुधर्मी जनों से...², सुख व शान्तिमय जीवन बिताना...²।
किसी भी भाषा भाषी राष्ट्रों के जनों से, वैरत्व भाव भी कभी न रखना।।5।।
सरल सहज व प्रसन्न रहना...², सुख व शान्तिमय जीवन बिताना...²।
इसलिए तो सदा नैतिक रहना, उक्त विषयों को पालन करना।।6।।
क्रिया की प्रतिक्रिया होती है सभी में...², सुख हेतु सुख अन्य को देना...²।
विषमता से विषम उपजे हैं, समता भाव से समता को पाना।।7।।
जल व वायु सम ये सब नियम ...², सुख व शान्ति से जीने के नियम...²।
देशी व विदेशी राजा व रंक के, धर्मी व अधर्मी सभी के हित के।।8।।
विभिन्न धर्म व विज्ञान पढ़ के...², राजनीति तथा कानून पढ़ के,...²।
नीति नियम व स्व अनुभव से, सर्व हित हेतु "कनक" रचा ये।।9।।

❑❑❑

'सुभाव-कुभाव का स्वरूप एवं फल"

(तर्ज : दुनिया में रहना है तो...)

भावना करो जिया! भावना करो, कुभाव छोड़ कर सुभाव करो।
इसके हेतु धन नहीं चाहिये, इसके लिए जन नहीं चाहिये।।1।।
धन जन श्रम बिना सुभाव होता, धन जन श्रम बिना कुभाव होता।
सुभाव से अनेक सुफल मिले, कुभाव से अनेक कुफल मिले।।2।।
राग-द्वेष मोह ईर्ष्या घृणा कुभाव, पाप रोग दुःखादि जनक भाव।
सत्य निष्ठा समता शान्ति सुभाव, पुण्य आरोग्य सुख जनक भाव।।3।।
कुभाव से टेंशन फोबिया होते, शरीरदर्द व सिरदर्द भी होते।
व्यग्रता कुंठा दुश्चिन्ता अशान्ति होती, विभिन्न रोग व आत्महत्या भी होती।।4।।
सुभाव से प्रसन्नता शान्ति मिलती, तन मन आत्मा की बीमारी जाती।
प्रेम संगठन सहयोग बढ़ते, इह परलोक सुखमय बनते।।5।।
तथापि जिया! क्यों कुभाव करो, अनावश्यक अनेक दुःखों को वरो।
दृढ़ संकल्प से जिया! सुभाव करो, अनेक सुखद सुफल वरो।।6।।
सुभाव से तीर्थंकर सिद्ध बनते, कुभाव से रावण कंस बनते।

भाव से भावी भाग्य निर्माण होते, भाव से ही स्वर्ग व निर्वाण पाते।।7।।
केवल धन कमाना मात्र, न हो तेरा परम लक्ष्य।
चार आश्रम पुरुषार्थ तेरा, होना चाहिए परम लक्ष्य।। (6)
आवश्यक यदि न हो तेरा, न करो नौकरी फैशन हेतु।
आधुनिकता का अन्धानुकरण, न करो जो होता स्ट्रेस हेतु।।
जिससे तुझे न मिले शान्ति, जिससे मिले तुझे दुर्गति।
ऐसा भी कोई काम न करो, करो वो काम मिले सुगति। (7)
नारी ही कोई अबला न होती, न होती केवल भोग सामग्री।
धन कमाने की नहीं मशीन, नारी में भी होती आत्मिक शक्ति।।
ब्राह्मी सुन्दरी व चन्दनबाला, सीता गार्गी सम बनो महान्।
इसलिए ही कनकनन्दी तुम्हें, करता है सदा आह्वान।। (8)

❑❑❑

"प्रायश्चित्त रूपी औषधि से तन मन आत्मा स्वस्थ"

(राग : दुनिया में रहना है तो..., 2. मीठो मीठो बोल...)

प्रायश्चित्त करो भाई प्रायश्चित्त... इससे शुद्ध होता है चित्त।
मन वचन काय से जो होता पाप... प्रायश्चित्त से होता निष्पाप ।। ध्रु.।।
यथा ही मलिन वस्त्र शुद्ध होता... पानी साबुन से मल हटता।
प्रायश्चित्त से मन शुद्ध होता... उससे ही पाप दूर होता।। (1)
पाप आलोचना करो गुरु समक्ष.... मानमायादि हो विमुक्त।
स्वकृत दोषों को माना गलत... पुनः न करने का करो संकल्प।। (2)
इसी से मन का बोझ दूर होगा...मानसिक रोग भी नाश होगा।
टेंशन डिप्रेशन फोबिया आदि.. हेडेक अनिन्दा से होंगे निरोगी।।(3)
इसी से शरीरदर्द दूर होगा... पाचनतन्त्र भी दुरुस्त होगा।
वातपित्तकफ दोष दूर होगा... जिससे शरीर स्वस्थ सबल होगा।। (4)
अन्य लोग भी प्रामाणिक मानेंगे... विश्वास योग्य भी अन्य मानेंगे।
स्नेह सहयोग भी जन करें... स्नेह सन्मान भी विशेष देंगे।। (5)
इससे भय उद्वेग दूर भी होंगे... तन मन भी शक्तिशाली बनेंगे।
विविध अच्छे कार्य सम्पन्न होंगे.. धर्म कर्म सम्पादन अधिक होंगे।।(6)

इससे पाप नशेगा पुण्य बढ़ेगा...आत्मिक बल का विकास होगा।
जिससे आत्मा का विकास होगा.. अन्त में मोक्ष का सुख मिलेगा।। (7)

प्रायश्चित्त एक है लाभ अनेक ... तन मन आत्मा को मिलता सुख।
अतएव प्रायश्चित्त महा औषधि ... 'कनक' सेवन करे यह औषधि।। (8)

❑❑❑

"त्यजनीय सर्व मानवकृत विकृतियाँ एवं कुरीतियाँ"

(सामाजिक राजनीति कानूनी धार्मिक शिक्षादि की विकृतियाँ एवं कुनीतियाँ)

(राग : बंगला..., सायोनारा... कल फिर...)

वरणीय ही करणीय, अन्य सर्व कार्य त्यजनीय
भक्ष्य भोजन ही भक्षणीय, विष भक्षण त्यजनीय...(1)

स्व-पर हित ही करणीय, स्व-पर अहित त्यजनीय।
मानवीय नीति भी त्यजनीय, अहितकार यदि करणीय...(2)

स्वार्थपूर्ण विषम नीति, शोषणकारी जो भेद नीति
हिंसामय असत्य नीति, त्यजनीय सर्व अयोग्य नीति...(3)

धार्मिक सामाजिक राजनीति, कानूनी व व्यवहार नीति
प्राचीन आधुनिक नीति, देश विदेश की सर्वनीति...(4)

लिखित अलिखित लोक नीति, शिक्षा से लेकर कूटनीति
सत्य साम्य से रिक्त नीति, त्यजनीय है अशांत नीति...(5)

(यथा) दासप्रथा बलिप्रथा सतीदाह प्रथा द्यूतप्रथा/(सट्टाप्रथा)
आक्रमण युद्ध हिंसाचोरी, झूठ परिग्रह ठगनीति...(6)

वेश्यावृत्ति या बलात्कार, बाल विवाह हो या शिकार
अश्लीलता या मद्यपान, नशा द्रव्य विक्रय उत्पाद...(7)

वधशाला मधुशाला कानून, उपनिवेशवाद कानून
क्रूर तानाशाही शासन अग्राह्य विषम कानून (शासन)...(8)

पशु पक्षी क्रय विक्रय वध बंद संत्रासन
काम लेना या विनिमय स्वतंत्र हरण आदि काम...(9)

बाल वृद्ध या नारी जाति, असहाय गरीब निम्न जाति
दुर्बल विकलांग मन्दमति, इनसे न हो भेदनीति...(10)

शिक्षा में अग्राह्य क्रूर नीति, शोषणकारी या भेद नीति
कृषक अन्नदाता महान्, करणीय नहीं अपमान...(11)

शोषण उनका सदा होता, ग्राह्य नहीं यह क्रूर प्रथा।
अपना माल का करें दाम, अग्राह्य/(अन्याय) अन्य का मूल्य न...(12)
धर्म में अग्राह्य राजनीति, राजनीति में हो धर्मनीति/(धर्म में न हो क्रूरनीति)।
आध्यात्मिक हो धर्मनीति, अर्थ स्वार्थ परे नीति..(13)

सामाजिक कुरीति ग्राह्य नहीं, असहयोग भी श्रेय नहीं।
जाति कुल मद ग्राह्य नहीं, परस्पर उपग्रहों भाव सहीं...(14)
दहेज प्रथा व भ्रूण हत्या मातृजाति की हीनदशा।
अनादर अपमान ग्राह्य नहीं, कलह विषमता प्रिय नहीं...(15)

धर्म साधना में बाधक जो, अच्छे कार्य में रोधक जो
मोक्षमार्ग में बाधक जो, ग्राह्य नहीं सर्व रोधक जो...(16)
सत्ता सम्पत्ति बुद्धि वाले, स्वार्थपूर्ण जो काम करे
(उनका) सहयोग हो सदाकाले, साम्यभाव हो महीतले...(17)

कनकनन्दी यह भाव भावे, सर्वोदय हो सर्व जीवे।
सत्य शिव सुन्दर सदा होवे, विषम विष सदा दूर होवे...(18)

❑❑❑

अन्याय का प्रतिकार विधेय

(राग : छोटी छोटी गैया... छुप गया कोई रे...)

अन्याय का प्रतिकार होना चाहिए... अन्याय का अस्वीकार होना चाहिए
स्वयं से प्रारम्भ इसका होना चाहिए... स्वयं को न्यायवन्त होना चाहिए।। ध्रु.।।
मन-वचन-काय से होना चाहिए... कृतकारित अनुमत (से) होना चाहिए
अन्याय न करो और न कराओ कभी ... मन वचन काय से दूर हो सभी।। (1)
यदि कोई करता है तो न करो सहयोग...प्रशंसा अनुमोदना अथवा प्रयोग
प्रतिकार भी यथायोग्य करना विधेय...साम-दाम-दण्ड-भेद सम्यग्विधेय।। (2)
तीर्थंकर बुद्ध ईसा मसीह...समता से नकारे सब अन्याय।

स्वयं न अन्याय करते न मानते सही...उपदेश से निरसन करते सही।। (3)
प्रायश्चित्त विधान करते सही...दोष निवारण हेतु उपाय सही।
समाज राष्ट्र का उपाय भिन्न भी होता...साम-दाम-दण्ड-भेद से प्रयोग होता।।(4)
दोषानुसार प्रयोग बढ़ता जाता...मृदु से कठोर तक प्रयोग होता।
इसे ही कहते हैं न्याय प्रणाली...रोग दूर हेतु यथा वैद्य-प्रणाली।। (5)
अन्यथा महामारी यथा रोग फैलता...यथा ही अन्यायपूर्ण कार्य फैलता।
ईंधन संयोग से यथा अग्नि फैलती...तथाही अन्यायवृत्ति शीघ्र फैलती।। (6)
इसे दूर करना विधेय काम... अन्यथा मत्स्यन्याय सम होगा काम।
अन्याय बढ़ने से होते भय विद्वेष... कलह क्रांति व युद्ध विनाश।। (7)
अतएव अन्याय के बीज न बोओ...अंकुर से वृक्ष तथा फल न पाओ।
अन्याय से नाश हुए कंस रावण... दुर्योधन जरासंध अहिरावण।। (8)
कष्ट देने वाला होता निश्चय नष्ट.. न्यायवन्त जन ही अवश्य श्रेष्ठ।
'यथा बोया तथा पाया' अवश्य सत्य... सुख हेतु त्याग अन्याय पथ।। (9)
इसी हेतु 'कनक' भी प्रयासरत... विश्व मानव करे सत् प्रयत्न।। (10)

❑❑❑

"स्वीकार्य अस्वीकार्य"

(तर्ज: कभी प्यासे को पानी पिलाना नहीं.. 2. आसरा इस जहाँ)

जिस वचन से सत्य व शान्ति न हो, उस वचन को ग्रहण कभी न कीजिए।
जिस भोजन में सात्विक सत्व न हो, उस भोजन को ग्रहण न कभी कीजिए।
जिस धर्म में सत्य व समता नहीं, उस धर्म को स्वीकार मत कीजिए।
जिस वचन.....।।
जिस गुरु में आध्यात्म का भाव नहीं, उनसे आत्मा का ज्ञान नहीं लीजिए।
जिस साहित्य से विश्व हित भी न हो, उस साहित्य को कभी मत पढ़िये।
जिस वचन.....।।
जिस निर्णय में न्याय का पक्ष न हो, उस निर्णय को कानून मत मानिये।
उस राजनीति को भी मत मानिए, जिससे प्रजा को कभी भी सुख न मिले।
जिस वचन.....।।

उसे शिष्य रूप में न स्वीकारिये, जिसमें नम्रता सत्यग्राहिता न हो।
वह बन्धु भी सच्चा बन्धु नहीं, जो विपत्ति में सहयोगी न बने।
वह पिता भी सच्चा पिता नहीं, जो सन्तान को पाप से न बचाए।
वह माता भी सच्ची माता नहीं, जो सन्तान को सत् संस्कार न दे।
जिस वचन.....।।
वह पत्नी भी सच्ची पत्नी नहीं, जो धर्म में सहयोगी न बने।
वह भाई भी सच्चा भाई नहीं, जो धर्म में सहयोगी न बने।
वह बहन भी सच्ची बहन नहीं, जो नैतिकता में सहयोग न दे।
जिस वचन.....।।
वह समाज भी क्या समाज है, जो विकास में सहयोगी न बने।
वह राष्ट्र भी कैसा सुराष्ट्र है, जो स्वयं की रक्षा कर न सके।
वह साहस भी क्या साहस है, जो संकट को सह न सके।
जिस वचन.....।।
वह नीति भी क्या सुनीति है, जो सत्य की रक्षा कर न सके।
उस पुरुषार्थ को भी मत करो, जो आत्मा को शान्ति दे न सके।
जिस वचन.....।।

❑❑❑

अनावश्यकता से जीव पाप करे अधिक

(अनर्थदण्ड (अनुत्पादक कार्य) से दुष्परिणाम)

(तर्ज: अच्छा सिला दिया तूने... 2. छोटी छोटी गैया..)

राग द्वेष मद मोह प्रमाद युत, जो भाव होता सो भाव अनर्थ।
आर्त रौद्र अशुभ परिणाम से युत, संकल्प विकल्प सो महाअनर्थ ।। टेक।।
अनावश्यक से जीव पाप करे सतत, मन वचन काय कृतकारित अनुमत।
अनर्थदण्ड इसे कहे आगम, बहुविध पापकर्म कृत निमित्त।। (1)
इस कारण से तन्दुल मत्स्य है पापी, महामत्स्य सम गया सप्तम् नरक।
इस भाव से जो होते व्यर्थ काम, लाभ तो कुछ नहीं पाता महान्।। (2)
पानी गिराना तथा भूमि खोदना, अग्नि जलाना या व्यर्थ बोलना।
आलस प्रमाद युत काल काटना, यद्वातद्वा रूप से कार्य करना।। (3)

दूसरों की निन्दा अपमान प्रवृत्ति, महत् अनर्थदण्ड पाप प्रवृत्ति।
वृथा साधन समय शक्ति धन व्यय, बुद्धि का दुरुपयोग तथा अपव्यय।। (4)
इनसे होता है पापबन्ध प्रबल, आध्यात्मिक शक्ति भी होती दुर्बल।
विविध अनर्थ काम भी होते, बहुविध जीवों के घात भी होते।। (5)
श्रीपाल को कुष्ठ रोग जो हुआ, पूर्व भव में मुनि को कोढ़ी कहा।
सात सौ मित्रों को हुआ जो कुष्ठ, अनुमोदना के फल से अनिष्ट।। (6)
मुनिसन्घ की निंदा फल से, साठ हजार व्यक्ति अग्नि से जले।
निन्दा का जिसने परिहार किया था, वह कुटिया सह जिंदा बचा था।। (7)
आरम्भ उद्योग आत्मरक्षा निमित्ते, हिंसा होती वह अल्पमात्रा प्रमाण।
संकल्प हिंसा का कटुफल प्रचुर, कृषक व धीवर मध्ये अंतर।। (8)
शेर नारी और नर की गति (स्थिति), पंचम षष्ट सप्तम नरक स्थिति।
अतएव खोटा भाव व्यवहार त्यज, कनकनन्दी का है यह भाव।। (9)

❑❑❑

दुनिया की विचित्रता

(तर्ज: दुनिया में रहना है तो काम करो प्यारे...)

दुनिया में रहते हुए साम्य रहो प्यारे, शान्त रहो आगे बढ़ो काम करो प्योर।
नहीं तो इस दुनिया में शान्ति न मिलेगी, खाना पीना सोना में अशान्ति देगी।।
टेंक।।
अक्टोपस के सम है दुनियाँ, क्षण-क्षण बदलने में सक्षम है दुनिया।।
चित पट दोनों को माने ये दुनिया, मरने जीने दोनों ही न देती ये दुनिया।....(1)
मच्छर सम गुन गुनाये (पैर पड़े) रोग भी देती है, जिंदा में कष्ट देती मरने पे रोती है।
विपत्ति में अपमान, सम्पत्ति में ईर्ष्या भी, थन से दूध पीये जोंक सम दुनिया भी।।
...(2) तीर्थेश बुद्ध ईसा को मारे भी पूजे भी, अपनी ही संतान को गर्भ मे मारे भी।
राम की पूजा करे रावण सम क्रिया भी, 'कनकनन्दी' निस्पृह रहे ऐसी दुनिया भी।। ...(3)

भ्रष्टाचार की महिमा

(व्यंगात्मक कविता रूपक अलंकार युक्त)

(तर्जः यदि भला किसी का...)

धिक् हो भ्रष्टाचार भस्मासुर तेरा आतंक अपरम्पार।
लोभ तेरा है राक्षस पिता, तृष्णा तेरी राक्षसी माता।।
बहिन तेरी सम्पत्ति आशा, पत्नी तेरी है सत्ता लालसा।
सन्तान तेरी शोषण वृत्ति, मायाचारी है दास व दासी।।
तेरा आतंक सर्वत्र व्याप्त, शिक्षा व्यापार कानूने व्याप्त।
राजनीति व उद्योग जगत्, सिनेमा संचार विभागे व्याप्त।।
नौकरशाह से चपरासी तक, तेरे आतंक से सब ग्रसित।
तुझे ही पूजे तुझे ही भजे, तेरे आतंक से संत्रस्त।।
इण्डिया तेरा प्रिय पूजा स्थल, पूजक भजक यहाँ प्रचुर।
तू रक्त बीज तू भस्मासुर, रावण सम बहुरूप धर।।
तेरी महिमा सब कोई गाये, तेरी माया से मोहित हुए।
तेरी कृपा की महिमा भारी, रंक से कुबेर भक्त है तेरे।।
तेरी महिमा रूप दूसरा, भस्म भी होता भक्त सहित।
तू मीठा जहर सम सक्षम, सेवन मीठा अन्त सहित।।

❑❑❑

"क्षुद्र मानवकृत सीमा से पार चला"

(रागः दुनिया हँसे... छोटी छोटी गैया...
रघुपति राघव ... तितली उड़ी-उड़ जा चली...)

मैं तो चला... उस पार चला... क्षुद्र मानवकृत क्षुद्र सीमा से।
शरीर भले ... सीमा में रहे.. सीमा को लाँघा भावशक्ति से ।। ध्रु.।।
क्षुद्र मानव... क्षुद्र सोचता... क्षुद्र सीमा में ही सभी बांधता।
काल बांधता... क्षेत्र बांधता... भाषा जाति व धर्म (नीति) बांधता।।
क्षुद्र सीमा में... स्वयं बंधता... पशु पक्षी प्रकृति को तथा बांधता।
बंधने वालों को... बंधु/(सही) मानता... मुक्त महान् को भी क्षुद्र मानता।
गुट बनाता... संगठन बनाता... संकीर्ण स्वार्थ हेतु दल बनाता।

अर्थ कमाता... भोग/(काम) भोगता... आध्यात्मिक मुक्ति में बाधा बनता/डालता।

स्वार्थ साधक को... मित्र मानता... इनसे परे सब को शत्रु मानता।
इनके हेतु... संक्लेश करता...द्वंद्व विद्रोह व युद्ध करता।।
भौतिकता को ... स्व मानता... आत्मकल्याण को नहीं करता।
देह अक्ष में... आसक्त होता... इसी हेतु ही हर कार्य करता।।
इन्हीं सीमा (ओं) से.. परे मैं हूँ, सच्चिदानंदमय विश्वरूप हूँ।
श्रद्धा ज्ञान व ... उद्देश्य द्वारा...'कनक' चला उस पार चला।

❑❑❑

"जीवन में आध्यात्मिकता की आवश्यकता"

(जीवन में आध्यात्मिक से लाभ)

(राग-छोटी छोटी गैया... नरेंद्र छन्द... फूलों का तारों...)

आध्यात्मिक जीवन को सुखी बनाता, जीते ही जीवन को मुक्त बनाता।
दीन-अहंग्रंथी से (भी) मुक्त बनाता, अनाकुल सुख को भोक्ता बनाता/(संकीर्ण स्वार्थ से परे बनाता)।।

संकीर्ण भौतिक दृष्टि हटाता, अपना पराया भेदभाव घटाता।
व्यापक उदार दृष्टि बनाता, लक्ष्य में परम सत्य बनाता।। (1)

भौतिक हानि-लाभ तुच्छ बनाता, जन्म-मरण को हेय बनाता।
शत्रु-मित्र भेदभाव हटाता, विश्वमैत्री का पाठ पढ़ाता।।

वैषम्यता में भी साम्य बनाता, राग द्वेष मोह परे बताता।
संक्लेश-क्लेश से परे बनाता आकर्षण-विकर्षण दूर करता।। (2)

इन्द्रियातीत भी ज्ञान कराता मन से परे भी भान कराता।
शुद्ध सोऽहं का भान कराता, मान अपमान परे कराता।।

सामाजिक कानून से परे उठाता, रीति रिवाज परे दिखाता।
धार्मिक भेद-भाव हटाता, परम साम्य भाव जगाता/(जताता)।। (3)

आत्मा को परमात्मा/(जताता) बताता, भौतिक विश्व से परे दिखाता।
सांसारिक बन्धन को क्षीण करता, देह में भी विदेही बनाता।

अलौकिक अनुभव से युक्त करता, बन्धन युक्त भी मुक्त बनाता।
सुखी जीवन की युक्ति बनाता, 'कनकनन्दी'को मुक्त बनाता।। (4)

"अधिक सत्ता-सम्पत्ति प्रसिद्धि भोग वाले होते हैं अधिक पापी-दुःखी"

(राग-आत्मशक्ति से ओतप्रोत...)

सत्ता सम्पत्ति प्रसिद्धि भोग से मिलते हैं अनेक दुःख।
इनके अर्जन संवर्द्धन सुरक्षा व भोग से (में) मिले हैं दुःख।। ध्रु.।।
जो इनसे संयुक्त होते हैं लगता वे होंगे सुखी।
मृगमरीचिका या अग्नि-पतंग सम आभास होते वे सुखी।।
इनके अर्जन करने हेतु अन्याय अत्याचार भी करते।
क्रोध-मान-माया-लोभ-मोह से युक्त अनेक पापाचार (भी) करते।। (1)
तथाहि संवर्द्धन सुरक्षा भोग में/(से) उपरोक्त पाप भी होते।
उसके नाश या ह्रास के कारण अनेक संक्लेश भी होते।।
आक्रमण युद्ध विनाश लूट-पाट शोषण मिलावट चोरी।
अन्याय अत्याचार मायाचार कामाचार करते सत्तादि धारी।। (2)
इन कारणों से वे स्वयं दुःखी होते अन्य को दुःख देते।
इसी के हेतु स्व-जन पर-जन व स्वयं की भी हत्या करते।।
देश-विदेशों के अभी के व पूर्व के उदाहरण हैं लाखों।
राजा महाराजा नेता मंत्री धनी इन कुकृत्यों में प्रसिद्ध लाखों।। (3)
सामान्य जनों से भी वे अधिक दुःखी होते किंपाक फल सम रम्य।
दूर से पहाड़ दूर से ढोल दूर से समुद्र सम वे हैं रम्य।
शारीरिक मानसिक रोगी भी होते, होते है अधिक संक्लेश।
इनके अधिक शत्रु भी होते पाते न कभी संतोष।। (4)
ईर्ष्या तृष्णा घृणा मोह विद्वेष व भय शंका पक्षपात।
फैशन व्यसन आडम्बर अनिन्द्रा से होते वे सदा पीड़ित।।
इन कारणों से प्राचीन काल के राजा महाराजा चक्री (चक्रवर्ती)
शान्ति प्राप्ति हेतु सत्तादि त्याग कर बन गए आत्मध्यानी।। (5)
सर्व त्याग जो न कर पाते वे करते थे आंशिक त्याग।
अणुव्रत रूप में स्वीकार करके मर्यादा में करते थे भोग।।
मर्यादाहीन जो सत्तादि भोगते नरक में वे जीव जाते।

'राजेश्वरी सो नरकेश्वरी' बहुआरंभी (परिग्रही) नरक जाते।। (6)
बहु आरंभ परिग्रह के कारण प्रकृति का भी होता शोषण।
ग्लोबल वार्मिंग असम्यक् दृष्टि, ग्लेशियन गलन व प्रदूषण।।
संतोष सदाचार संयम अनुशासन त्याग दान से है सुख।
आत्मसुख हेतु प्रयत्न करो है 'कनक' चाहे आत्मसुख।। (7)

❑❑❑

अन्तरंग दूषित भावों की अभिव्यक्ति सत्तादि द्वारा

(समस्त पापाचार एवं दुःखों के कारण अन्तरंग दूषित भाव एवं सत्तादि है)
(प्रमत्त योग से होते हैं समस्त पाप एवं दुःख)
(राग-आत्मशक्ति से ओतप्रोत...)

क्रोध मान माया लोभ व काम मोह की अभिव्यक्ति।
सत्ता सम्पत्ति कीर्ति भोग व अन्य श्रद्धा द्वेष से होती।।
यथा बीज की अभिव्यक्ति वृक्ष फलादि से होती है।
तथा क्रोधादि की अभिव्यक्ति सत्तादि द्वारा होती है।
बीज से वृक्षादि होने के हेतु जलादि कारण होते हैं।
क्रोधादि की अभिव्यक्ति के हेतु सत्तादि भी कारण होते हैं।।
तथा बीज के अभाव से जलादि से भी वृक्षादि न होते हैं।
तथा क्रोधादि के अभाव से सत्तादि भी हेतु न होते हैं।।
क्रोधादि के सद्भाव से ही हर क्षेत्र हर काम में।
सत्ता सम्पत्ति प्रसिद्धि आदिकी कामना होती मन में।।
इसी हेतु शिक्षा व्यापार नौकरी राजनीति सेवा कानून।
शिल्प कला संगीत धर्म का आलम्बन लेते मोही जन।।
अशुद्ध सोना से मूर्ति बने या, अलंकार कुंभ या बर्तन।
अशुद्धमंय ही सब होंगे तथा क्रोधादि कृत कर्म।।
सत्तादि से लिप्त रहने वाले निश्चय से होंगे अशुद्धभावी।
भले वे गृहस्थ सामान्य जन विद्वान राजा साधु या ज्ञानी।।
क्रोधादि के सद्भाव से सत्तादि का होता सद्भाव।
दोनों के जहाँ सद्भाव है पापाचार दुःखों का भी सद्भाव।।

इसी से ही अन्याय अत्याचार भ्रष्टाचार कामाचार युद्ध होते।
मिलावट शोषण फैशन व्यसन आतंकवाद हत्या चोरी होते।।
दोनों के सद्भाव जहाँ जितने-जितने अंश में जीव में होंगे।
उतने उतने अंश में वहाँ पापादि का प्रभाव अवश्य होंगे।।
रावण कंस हिटलर आदि से लेकर हर व्यक्ति हर क्षेत्र।
इसी के लिए है उदाहरण भूत से लेकर है अभी तक।।
इनसे निवृत्ति हेतु है आध्यात्म लक्ष्य सह ज्ञान व ध्यान।
सरल सहज संतोष क्षमा धैर्य समता शील व त्याग दान।।
अतएव तीर्थंकर साधु संत गणधर बुद्ध ऋषि मुनि।
सत्ता सम्पत्ति कीर्ति त्यागकर शान्ति हेतु बनते आत्मज्ञानी।।
शुद्धात्मा में (से) ही अनंत सुख मिलता जो क्रोधादि से रहित है।
इसी सुख की ही प्राप्ति हेतु, 'कनक' पुरुषार्थ सहित है।

❑❑❑

"साधुः सामाजिक-कानूनी सीमा से परे"

(रागः यमुना किनारे श्याम... दुनिया में जीना है...)

उदार भावनाशील साधु जो होते.. स्व पर विश्व हेतु काम करते।
किसी भी बंधन को नहीं मानते... सामाजिक कानूनी जो बंधन होते।।
राष्ट्रों की सीमा पक्षी नहीं मानते... सूर्य मेघ वायु भी कहाँ मानते।
लौकिक वृत्ति वाले संत जो होते... स्वार्थी मानवों की नीति नहीं मानते।।
विवाह सामाजिक मान्य जो होता...अथवा कानूनी मान्य क्यों न होता?
ब्रह्मचर्य महाव्रतधारी जो होते... इसी मान्यता को भी नहीं मानते।
तथाहि वस्त्रधारण परिग्रहरक्षण... राजनीतिकरण या वोट प्रदान।
क्रय-विक्रय या विवाहकरण... सरकारी आदेशों का परिपालन।
तिथि बंधन रहित अतिथि होते... सूतक पातक दोष नहीं लगते।
जन्म-मरण/(जयंती) बंधन नहीं मानते... धनी-गरीब भेद नहीं मानते।
शत्रु मित्र भेदभाव नहीं करते... अपना पराया नहीं मानते।
राष्ट्रीय वैश्विक भेद नही मानते.. वैश्विक एकता का भाव रखते।।
जाति राष्ट्र सीमा से परे वे होते... महान् सन्त विश्वसन्त ही होते।

अन्य के मनानुसार नहीं चलते...मनमाना काम भी नहीं करते।।
लोकविरुद्ध कार्य नहीं करते...विसंवाद कलह नहीं करते।
पक्ष-विपक्ष से रहित होते... सत्य साम्य शान्ति के पक्ष के होते।।
रीति रिवाज रुढ़ि से परे वे होते... ख्याति पूजा लाभ को नहीं चाहते।
शरीर को भी अपना नहीं मानते...शरीर सम्बन्धी से निस्पृह होते।।
सन्मति की साधना सदा करते... सहमति की प्रतीक्षा/(कामना) नहीं करते।
जड़ से परे आत्मिक होते... कनकनन्दी को ये गुण भाते।।

❑❑❑

"अन्य की तुलना से प्रतिस्पर्द्धा से रहित हूँ"

(रागः माता तू दया करके... होठों से छू लो तुम...)

दिन-रात मेरे स्वामी भावना मैं ये भाऊँ, दूसरों के निमित्त से संक्लेशित मैं न बनूँ
संक्लेशित होकर पाप बंध मैं क्यों करूँ, अन्य के कारण रोग दुःख मै क्यों भोगूँ।।ध्रु.।।

अन्य जीव होते अज्ञानी मोही व कुटिल, उनके अनुसार क्यों करूँ मैं व्यवहार।
उनके अनुसार नहीं सोचूँ नहीं बोलूँ, नहीं कार्यक्रम ग्रंथ व गीत लिखूँ।।(1)

निर्णय न करूँ मैं नहीं करूँ राग-द्वेष, निंदा व अपमान नहीं करूँ रोष व तोष।
स्वयंका मूल्यांकन भी नहीं करूँअन्य से मैं, स्व-मूल्यांकन करूँमैं आत्मिक दृष्टि से।।(2)

उल्लू के अनुसार क्या सूर्य का होता मूल्य, उपमा जुगनू की क्या होता है दिनकर।
सर्वज्ञ की तुलना क्या छद्मस्थ से होगी, क्षुद्र की तुलना से क्या मेरी महिमा होगी।।(3)

ख्याति-पूजा-लाभ तनाव युक्तों से, सत्ता सम्पत्ति व प्रसिद्धि युक्तों सें।
अनात्म कामों से संयुक्त जीवों से, तुलना प्रतिस्पर्द्धा न करूँ कभी मैं।। (4)

अतुलनीय हूँ मैं उपमातीत हूँ मैं, प्रतिस्पर्द्धा व द्वंद्व से मुक्त हूँ मैं।
आपका रूप मेरा भावी स्वरूप हो, यह ही लक्ष्य मेरा अन्य से रिक्त हो।। (5)

मुझे ही मेरे द्वारा मुझसे ही प्राप्त हो, विभाव भावों से पूर्ण रहित हो।
सच्चिदानंदमय मेरा स्वरूप हो, अन्य से भिन्न मेरा निज स्वरूप हो।। (6)

❑❑❑

"सद्गृहस्थ (श्रावक) के 35 गुण"

(रागः तुम दिल की धड़कन...)

सद्गृहस्थों (श्रावकों) के स्वरूप को जानो, पैंतीस (35) प्रकार लक्षणों को मानो।
गृहस्थ मोक्षामार्गी नैतिक मानो, इह पर हितकारी व्यक्तित्व जानो।। ध्रु.।।
'न्याय उपार्जित वित्त' सहित, 'शिष्टाचार प्रशंसक' युक्त।
'विवाह-विवेक' सहित गृहस्थ, 'पापभीरू' देशाचार पालक।। (1)
'पापनिन्दा रहित' 'सही गृह वास', 'सत्संगति युक्त' 'मातृ पितृ भक्त'।
'उपद्रव रहित स्थान (में) निवास', 'निंद्य प्रवृत्ति का त्याग' विशेष।। (2)
'व्यय की मर्यादा' गुण सहित, 'वित्तानुसार वेश' सहित।
'अष्ट गुण युक्त बुद्धि' सहित, 'सुश्रुता श्रवणं ग्रहण' युक्त।। (3)
'धारण तर्क अपोह' सहित, 'अर्थ विज्ञान तत्त्वज्ञान' सहित।
'प्रतिदिन धर्म श्रवण' युक्त, 'अजीर्ण व भोजी' 'सुयोग्यं भुक्त युक्त'।।(4)
'अबाधित त्रिवर्गसाधन'युक्त, 'दान-दया-दत्ति' गुण सहित।
'पद अवहेलना/(अभिनिवेश) दोष रहित, 'गुण पक्षपाती' गुण सहित।। (5)
'अयोग्य देश-काल का त्याग', 'स्व-पर बलाबल सुज्ञात'।
'ज्ञानी-गुणी-साधु पूजन' रत, 'पोष्य-पोषक'-(परिवार पोषण) गुण सहित।। (6)
'दीर्घदर्शी'-विशेषज्ञ 'कृतज्ञ', 'लोकप्रियता' 'सलज्जता' युक्त।
'दयालु' 'सौम्य' 'परोपकार' युक्त, 'अंतरंग षड्वैरियों' का त्याग।। (7)
'इन्द्रिय विजयी' सद्गृहस्थ, और भी अनेक गुण सहित।
'सप्त व्यसन' 'अष्टमद' त्याग, 'कनक' मान्य है सद्गृहस्थ।। (8)

❑❑❑

"अठारह (18) पाप स्थान"

(रागः चौपाई-जय हनुमान...)

पाप स्थान अट्ठारह को जानो, पाप बंध के कारण मानो।
नवकोटि वे परित्याग करो, परम्परा से मोक्ष को वरो।। (1)
प्राणतिपात हिंसा को कहते, नवकोटि से इसे जो करते।
पर्यावरण की क्षति करते, पाप बंध से नरक में जाते।। (2)

मृषावाद है असत्य कथन, प्रमाद सहित जो होता कथन।
सत्य विपरीत जो होता कथन, कर्कश कलहकारी जो वचन।। (3)

अदत्तादान चोरी को कहते, भ्रष्टाचार मिलावट भी होते।
कालाबाजारी व शोषण होते, चोरी के अंतर्गत ये सब आते।। (4)

अब्रह्मचर्य को मैथुन कहते, अश्लील कामुक भी मैथुन होते।
दोनों प्रकार हिंसा भी होती, समस्या बीमारी आ घेरती।। (5)

मूर्च्छा से **परिग्रह** होता, अंतरंग बहिरंग भी होता।
शोषण भ्रष्टाचार भी होते, विभिन्न प्रदूषण भी होते ।। (6)

क्रोध से विवेक नष्ट होता, क्षमा स्वभाव भी नष्ट होता।
कलह विसंवाद तनाव होते, तनमन आत्मा अस्वस्थ होते।। (7)

अष्ट प्रकार **मान** होता, सम्यग्दर्शन नाश करता।
विनय भाव नहीं उपजता संयम तप ज्ञान नाशता।। (8)

छल-कपट माया होती, सरल भाव को नाश करती।
प्रामाणिकता नही रहती, तिर्यंच आयु का बंध करती।। (9)

लोभ पाप का बाप बखाना/(कहते), अनेक पाप उत्पन्न होते।
परिग्रह संचय इससे होता, परिग्रहजन्य पाप भी होता।। (10)

लोभ माया से **राग** होता, राग तो आग समान होता।
राग से कर्म बंधन होता, संसारवर्द्धन काम करता।। (11)

क्रोध-मान से द्वेष होता, जिससे द्वंद्व उत्पन्न होता।
कलह-झगड़ा-वैर होते, अनेक अनर्थ उत्पन्न होते।। (12)

कलह से वाद-विवाद होते, द्वंद्व विग्रह उत्पन्न होते।
समता शान्ति से काम न होते, ताड़न-मारन-हनन होते।। (13)

अभ्याख्यान है दोष लगाना, दोषारोपण झूठा करना।
दोषों को उद्घाटित करना, **पैशून्य-पाप** से रहित होना।। (14)

पर-परिवाद को निंदा कहते, इससे कलह तनाव होते।
पाप स्वरूप है **रति-अरति,** धर्म में अरुचि अधर्म में रुचि।। (15)

माया मृषावाद है पाप स्वरूप झूठ बोलना है पाप स्वरूप।
मिथ्यादर्शन शल्य है पाप, विपरीत श्रद्धान सहित रूप।। (16)

दुःखमेव है पाप स्वरूप, त्याग करना सुख स्वरूप।
त्याग हेतु यह वर्णन किया, 'कनकनन्दी' को पाप न भाया।। (17)

"प्रतिक्रमण" (आध्यात्मिक दण्डप्रक्रिया)

(आत्मालोचना, आत्मविश्लेषण, आत्मविशुद्धि के उपाय)
(विभावों का परिमार्जन एवं स्वभाव के प्रगटीकरण हेतु प्रतिक्रमण)

– आचार्य कनकनन्दी

(रागः आत्मशक्ति से..., चिंगारी कोई भड़के...,)
प्रतिक्रमण करता हूँ मैं... तन-मन और काय से।
कृत-कारित और अनुमतयुत... द्रव्य और भाव से ।। ध्रु.।।

अनादिकाल से हे प्रभु!.. जो किया है विपरीत कर्म।
मिथ्यात्व अज्ञान कषायवश... वे सब नाश हो दुष्कर्म।
अनंत पंचपरिवर्तन में... चतुर्गतिरूपी संसार में।
चौरासी लाख योनियों में... जो किया है कर्म मोह में।। (1)

सबसे अधिक मैं पाप किया... मोहभाव के कारण।
अनात्म वस्तु को आत्म मानकर... न किया सत्य पहचान।।
शरीर सत्ता सम्पत्ति स्व-पर... शत्रु-मित्र स्व पर जन।
अपना मानकर इनके हेतु... किया अधिक कुकर्म।। (2)

धार्मिक अंधश्रद्धान से... संकीर्ण पंथ मत अपनाया।
हिंसा युद्ध आक्रमण व... भेदभाव घृणा को अपनाया।।
अज्ञान के कारण न जान पाया... हित-अहित के तत्त्व।
हितग्रहण व अहित त्याग... ज्ञान-ज्ञेय के तत्व।। (3)

क्रोध-मान-माया-लोभ तथा ... नोकषायों के कारण।
हिंसा-झूठ-चोरी-कुशील-परिग्रह... किया भी विविध प्रमाण।
प्रमादवश अनेक किया...अनर्थदंड अहितकर।
आवश्यक बिना ही पाप किया... नवकोटी से अनेक प्रकार।।(4)

पर के अहित चिंतन व ... वाद-विवाद कलह।
फैशन-व्यसन निंदा-चुगली... ईर्ष्या-घृणा विद्रोह।।
चलने-बैठने-सोने में या... भोजन आदान-प्रदान में।
असि-मसि-कृषि-वाणिज्य-सेवा.. शिल्पकला संगीत में।। (5)

राजनीति या कानून में... धार्मिक सामाजिक काम में।
जन्म-मरण व विवाह क्रिया... भोग-उपभोग काम में।।

सम्यग्दृष्टि अवस्था या...श्रावक ब्रह्मचारी अवस्था में।
क्षुल्लक ऐलक आर्यिका या ... साधु पाठक सूरी में।। (6)
ज्ञात-अज्ञात भाव में या.. शयन स्वप्न जागृत में।
द्रव्य-क्षेत्र-काल-भाव में... जो किया अनात्म काम में।।
वे सब मेरे कुकृत्यों का... कर रहा हूँ मैं प्रतिक्रमण/(आलोचना)।
निंदा गर्हा पश्चाताप युत... आत्मविशुद्धि के कारण।। (7)
पश्चात्ताप से फलश्च्युति... प्रतिक्रमण से पाप विनाश।
अशुभ से शुभ प्राप्त कर... शुद्ध से बनूँ अविनाश।।
मेरे द्रव्य भाव कर्मों को... कर रहा हूँ मैं विसर्जन।
सच्चिदानंद स्वभाव बिना... अन्य सबका विनाशन।। (8)
मैं ही मुझमें ही स्थिर हूँ... बनूँ ज्ञानानन्दमय।
'कनक' निजरूप को ही चाहता ... जो है विज्ञानघनमय।। (9)

❑❑❑

"तुच्छ जीव के भाव व्यवहार"

(रागः तुम दिल की धड़कन...)

जो जीव स्वयं को श्रेष्ठ मानता, श्रेष्ठता बिना भी ज्येष्ठ मानता।
विनम्र गुणग्राही न होता, विकृत प्रभुत्व गुण युक्त होता।। ध्रु.।।

अंधविश्वास व मान के कारण, विकृत होता प्रभुत्व गुण।
संकीर्ण अज्ञानी अहंकारी होता, सत्य तथ्य से रहित होता।।

जो जीव ऐसा भाव करता, अन्य जीव को तुच्छ मानता।
अन्य के गुणों को नहीं मानता, तुच्छ व्यवहार स्वयं करता। (1)

रावण स्वयं को ही महान् माना, रामा को तुच्छ वनवासी माना।
स्वयं तो तुच्छ व्यवहार किया, जिससे उसका विनाश हुआ।।

तथाहि कंस जरासन्ध्या हिटलर, सद्दाम हुसैन लादेन (आदि) क्रूर।
यथा स्वयं को श्रेष्ठ मानकर, अनेक किये हैं क्रूर व्यवहार।। (2)

स्व जाति धर्म भाषा राष्ट्र, भाव व्यवहार को मानते श्रेष्ठ।
अन्य से जीवों श्रेष्ठ मानकर, करते अन्य से नीच-व्यवहार।।

ऐसा ही अन्य पशु-पक्षी भी, करते हैं भाव-व्यवहार भी।
एक दूसरों को कष्ट भी देते, स्थान आदि हेतु संघर्ष करते।। (3)

महान् व्यक्ति अन्यथा होते, श्रेष्ठ व ज्येष्ठ भाव करते।
विनम्र सत्यग्राही भी होते, अन्य को तुच्छ नही मानते।।

महान् गुणों से ही श्रेष्ठ बनते, तुच्छ घमण्ड से श्रेष्ठ न होते।
महान् बनो अतः हे जीव!, 'कनक' को मान्य श्रेष्ठ सदैव।। (4)

❑❑❑

"मारने वाले मारे/(मर) जाते"

(रागः सायोनारा...)

और को मारता वह... स्वयं मारा (मर) जाता। विश्व इतिहास इसके लिए ... साक्ष्य है देता।।
रावण कंस हिटलर... सद्दाम व लादेन। मय सभ्यता रोमन...इसके हैं उदाहरण।।
शेर चीता अष्टापद .. नाग डायनासोर। जो औरन को मारे उनका होता है संहार।।
सत्ता सम्पन्न शक्तिशाली... दुष्ट रावण। बनवासी राम द्वारा... हुआ है मरण।।
दुष्ट कन्स मारा गया... कृष्ण के द्वारा। क्रूर हिटलर मारा गया... स्वयं के द्वारा।।
क्रूर सद्दाम हुसैन (व)... आतंकी लादेन। अमेरिका के द्वारा ... हुआ है मरण।।
क्रूरता से नष्ट हुए... मय व रोमन। अन्य भी अनेक... सभ्यता तथा मानव।।
(हिंस्रक) शिकारी पशु... डायनासोर का नाश। छह करोड़ वर्ष ... पूर्व हुआ विशेष।।
शेर चीतादि हिंस्र... पशु विशेष। शाकाहारी पशु से नहीं... संख्या विशेष।।
मांसाहारी वृक्ष की ... संख्या नहीं अधिक। अन्य वृक्ष की संख्या होती अधिक।।
क्रिया की प्रतिक्रिया भी... अधिक होती। शुभ अशुभ क्रिया में यह संभव होती।।
अतएव अच्छे काम... करणीय है। 'कनक' द्वारा अच्छा ... वरणीय है।।

❑❑❑

"सप्त भय रहित एवं भय सहित"
(अपाप भीरु के लिए दंड विधान)

(रागः जय हनुमान...., तुम दिल की धड़कन...)

सप्त भय रहित आत्मस्वभाव... जन्म जरा मृत्यु रहित भाव।
इह परलोक आकस्मिक वेदना.... मरण अरक्षा अगुप्ति रहित।। ध्रु.।।
इसी अवस्था को पाते वे जन...आत्मविश्वासी होते जो जन।
वे भी पापों से होते भयभीत...संसार भ्रमण से होते भयभीत।।
पापों से भयभीत जो नहीं होते... वह अयोग्य काम अधिक करते।
यथा रावण कंस दुर्योधन लादेन..पापभीरु न थे वे दुर्जन।। (1)
जो पापभीरु नहीं होते हैं...अन्याय अत्याचार वे करते हैं।
क्रूर कठोर हिंसक होते हैं...ईर्ष्या द्वेष घृणा करते हैं।।
इन्हीं के लिए दण्ड विधेय...सामाजिक न्याय दण्ड विधेय।
अन्यथा मत्स्यन्याय होयेगा...सर्वत्र अत्याचार फैलेगा।। (2)
रोग चिकित्सा सम दण्ड विधेय...परिशोधन हेतु दण्ड विधेय।
प्रतिशोध रहित होना चाहिए...द्वेष घृणा से रिक्त चाहिए।।
आदर सहित भय विधेय... गुरु गुणी से विनय/(भय) विधेय।
इसी से अनुशासन पलता... मर्यादित कार्य भी होता।। (3)
प्रायश्चित्त विधान साधु के लिए ... दोष परिहार के लिए।
आत्मानुशासन जो नहीं करते...उनके लिए प्रायश्चित्त होते।।
पापभीरू होते आत्मानुशासी... व दृढ़ होते आत्मविश्वासी।
आत्मानुशासन ही श्रेष्ठ शासन... 'कनक' मान्य है आत्मानुशासन।। (4)

❑❑❑

"संकल्पी हिंसा त्यागी का भाव एवं व्यवहार"

(रागः चौपाई..., आत्मशक्ति से ओतप्रोत...)

हिंसा अहिंसा के स्वरूप को जानो... द्रव्य भाव रूप से पहचानो।
हिंसा के चारों स्वरूप को जानो... संकल्पी विरोधी आदि को मानो।। ध्रु.।।
आत्मपरिणाम हिंसन है हिंसा... प्रमत्तयोगात् प्राणव्यपरोपणं हिंसा।
चार कषाय विकथा पांच इन्द्रियाँ... निद्रा प्रणय युक्त प्रमाद पन्द्रह।।

इनसे सहित जब होता परिणाम...हनन होता है आत्मपरिणाम।
जीव मरे या नहीं भी मरे... हिंसा का पाप वह ही जीव भरे।। (1)
समस्त हिंसा त्यागते श्रमण...संकल्पी विरोधी आरंभी उद्योग।
श्रावक त्यागता है संकल्पी हिंसा, इच्छापूर्वक न करता हिंसा।।
क्रोध मान माया लोभादि सहित/(प्रेरित)... विचार पूर्वक न करता कुछ।
झूठ चोरी व कुशील परिग्रह... अष्ट मद सप्त व्यसन परित्याग।। (2)
यत्नपूर्वक करता है हर कार्य... विरोधी उद्योगी आरंभी कार्य।
यत्नपूर्वक न करता त्रस पीडन... रखता सदा निर्मल परिणाम।।
ईर्ष्या द्वेष घृणा न करता अन्य से.. अपमान निंदा न करता अन्य के।
अहित चिंतन न करता अन्य के... यथायोग्य मन वचन काय से।। (3)
बलि न देता किसी भी जीव की... भय त्रास न देता है किसी को।
दोषारोपण न मर्मभेदी कहता...अपहरण न अंग-भंग करता।।
परतंत्र न किसी को भी करता...भोजन पानी आवास न हरता।
मिलावट ठगी प्रपंच न करता... मिथ्या साक्ष्य भी कभी न देता।। (4)
मद्य मांस तम्बाखू गुटका...नशीली वस्तु विष व चर्म का।
उत्पादन क्रय-विक्रय प्रयोग... नव कोटि से करता है त्याग।।
तब ही होता है सही श्रावक... मोक्ष मार्ग का होता है पथिक।
श्रद्धा व विवेक आचरण युक्त... 'कनक' मान्य है आगम तथ्य।। (5)

❑❑❑

"निर्दोषी जीवों के प्रति दोष करना संकल्पी-हिंसा"

(हिंसात्म वस्तु नशीली वस्तु निर्माण क्रय-विक्रय-प्रयोग, मिलावट, निर्दोषी जीवों को सताना आदि संकल्पी हिंसा है)

.. (रागः आत्मशक्ति से ओतप्रोत...) ..

निर्दोषी जीवों को जो सताता है... मन वचन काय से।
यह महान् हिंसा (पाप) करता है...कर्म सिद्धान्त मत से।। ध्रु.।।
कृत कारित व अनुमत से भी... जो निर्दोषी को (है) सताता।
यह भी महान् हिंसा/(पाप) है करता.. कर्म सिद्धान्त बताता।

दोषी को दण्ड विधान विधेय... यह है न्याय संगत।
दोष दूर हेतु यह विधान है... चिकित्सा सम सम्मत।। (1)
इसी के बिना अन्याय अत्याचार व ... पापाचार बढ़ेंगे।
मत्स्यन्याय सम दुर्बल जीवों को...सबल सतायेंगे।।
निदोषी प्रति एक भी दोष है...अनेक पाप होते/(करते)।
अन्याय अत्याचार संकल्पी हिंसा...अविवेक मिथ्या होते/(करते)।। (2)
दोषी रावण को राम ने मारा... नहीं किया बड़ा पाप।
श्रवण को दशरथ ने मारा... किया बहुत बड़ा पाप।।
पाण्डव ने नहीं किया बड़ा पाप... कौरवों को मारकर।
भारतीयों ने नहीं किया है पाप...विदेशी को भगाकर।। (3)
निर्दोषी पशु-पक्षी (या) मानवों को... थोड़ा भी कष्ट देना।
बलि चढ़ाना या शिकार भी करना... महान् (है) पाप करना।।
वधशाला में पशु-पक्षी मारना... वध हेतु उन्हें बेचना।
उससे प्राप्त मांस चर्बी चर्म.. क्रय-विक्रय करना।। (4)
प्राणीज वस्तु से निर्मित वस्तु... प्रसाधन औषधि पेय भोजन।
उपकरणों का क्रय-विक्रय प्रयोग (से)... होता पाप जघन्य।।
औषधि भोज्य वस्तु आदि में... करते जो भी मिलावट।
धन लेकर बेचते रोग या मृत्यु...ऐसा महान् पाप।। (5)
राग द्वेष मोह लोभ सहित... जो होते कुकृत्य।
निर्दोषी हेतु जो दुःख कारक...संकल्पी हिंसा युक्त।।
बुद्धि पूर्वक जीवों को मारना... यथा है संकल्पी हिंसा।
तथाहि उपरोक्त कुकृत्य करता...होती है संकल्पी हिंसा।। (6)
प्राकृतिक कृषि या आत्मरक्षा/(देश/धर्मादि) हेतु... होती हिंसा सो अल्प।
संकल्पी हिंसा ही महान् हिंसा... शेष हिंसा है अल्प।।
अतएव भाव पावन करो है... पालो भाव अहिंसा।
साधु बनकर त्यागो चारों हिंसा... 'कनक' मान्य अहिंसा।। (7)

❑❑❑

"संकल्पी हिंसा एवं अनावश्यक पाप करते हैं जीव अधिक"

(रागः तुम दिल की धड़कन में...)

अनावश्यक पाप/(हिंसा) करता है... जीव मन वचन काय से।
कृत कारित व अनुमत से... ज्ञात-अज्ञात भाव से।। ध्रु.।।
मोह क्रोध मान माया से... लोभ व काम भाव से।
तीव्र मंद मध्यम से व.. समरम्भ समारंभादि से।।
मोह अज्ञानादि से जीव... करता पाप/(हिंसा) अधिक है।
तन्दुल मत्स्य के समान... करता संकल्पी हिंसा है।। (1)
महामत्स्य के कान में है...रहता तंदुल मत्स्य छोटा।
जीवों को खाये बिना ही... करता भाव जो खोटा।।
जब महामत्स्य सो जाता... खाकर जीव अरबों को।
तन्दुल मत्स्य जगाता उसे...खाने को अन्य जीवों को।। (2)
सोचता यदि मैं बड़ा होता...नहीं छोड़ता एक जीव को।
यह महामत्स्य है महामूर्ख क्यों, नहीं खाता अन्य जीव को।।
दोनों मरकर नरक में जन्मते.. सप्तम नरक के मध्य में।
द्रव्य हिंसा बिना भी तंदुल मत्स्य... संकल्प से गया नरक में।। (3)
ऐसा ही जो जीव भाव करता...बिना भी कार्यों के करके।
पर अनिष्ट निंदा अपमान... को भाव से ही विचार करके।।
वे भी संकल्पी हिंसा करते...अनावश्यक करते पाप हैं।
ऐसे ही पाप अधिक करते... ज्ञात अज्ञात भी भाव से।। (4)
ऐसे पाप त्यागो हे! मानव... 'कनक' भावे हैं भाव से।
तब ही आप धार्मिक बनोंगे...सर्वोदय होगा इसी से।। (5)

❑❑❑

मजहब भी सिखाता है आपस में वैर करना

(रागः मजहब नहीं सिखाता...)

मजहब भी है सिखाता, आपस में वैर करना। ईर्ष्या, द्वेष, घृणा से/भेद-भाव भी करना।।
पंथ मत पूजा पाठ रीति रिवाज त्यौहार। परंपरा वेशभूषा जिनके हो अन्य (भिन्न) प्रकार।।

वे हैं सब अधर्मी पापी मिथ्यात्वी काफिर। नास्तिक अज्ञानी मानकर, करते उनसे वैर।।
ऐसे व्यक्ति न धार्मिक, न ही सज्जन नैतिक। न ही सदाचारी ज्ञानी, न ही सुदृष्टि आस्तिक।।
धर्म है वस्तु स्वरूप, सत्य समता अहिंसा। क्षमा सहिष्णु/(शौच) मैत्री, उदारभाव शुचिता।।
दया व दान सेवा, परोपकार व विनय। संयम तप त्याग ज्ञान ध्यान स्वध्याय।।
किंतु संकीर्ण क्रूर ईर्ष्यालु दम्भी मानव। धर्म के नाम पर, बनता है दुष्ट मानव।।
पशु पक्षी व कीट, पतंग वनस्पति। प्रचलित धर्मी की न पालते कोई है पद्धति।।
तथापि उन्हें कष्ट यथा न देना विधेय। तथाहि अन्य धर्मी को, कष्ट न देना विधेय।।
स्वयं ही जीओ और अन्य को जीने दो। आत्म विशुद्धि करके, अधर्म दूर कर दो।।
स्वयं जो शुद्ध होता वही धार्मिक होता। सच्चे धर्म के हेतु, 'कनक' यत्न करता।।

❑❑❑

7 जन्मान्ध व हाथी

(एकान्त है हठग्राहिकता तथा अनेकान्त है सत्यग्राहिकता)

सुनो हे! बच्चों तुम्हें सुनाऊँ कथा अन्धे व हाथी की।
जिससे तुम्हें शिक्षा मिलेगी, अनेकान्त स्याद्वाद की ।। (स्थायी)
एक हाथी को टटोंल कर, देख रहे थे अन्धे सात।
एक-एक हाथी के अंग को, स्पर्श करके अपने हाथ।।
इसके बाद सातों अन्धे चर्चा करते हैं हाथी संबंधी।
कोई कहता है खम्भा सम हाथी, कोई कहता है झाड़ू सम हाथी।।
कोई कहता है सूप सम हाथी, कोई कहता है लाठी सम हाथी।
कोई दीवाल सम कहता तो, कोई छत या सर्प कहता।।
परस्पर असहमत होते, स्व स्व मत को नहीं त्यागते।
एक दूसरों को झूठे मानते, स्वयं को ही सत्य मानते।।
एक सज्जन आये ज्ञानी, पूछते कलह का कारण।
सातों ही अन्धे बता देते, कलह होने का कारण।।
ज्ञानी सज्जन समझ जाता, बोला तुम सुनो हे!भाई।
स्व स्व मत से आप सत्य, अन्य का भी पक्ष सुनो भाई।।
पैर की दृष्टि से 'खंभा'', पूँछ की दृष्टि से झाड़ू है हाथी।

कान की दृष्टि से 'सूप' है हाथी, दाँत की दृष्टि से लाठी है हाथी।।
पार्श्व की दृष्टि से हाथी है 'दीवार', पेट सूंड से छत या सर्प।
स्व-स्व पक्ष से आप सत्य हो, पूर्ण दृष्टि से आंशिक है सत्य।।
यह है बच्चों अनेकान्त व एकान्त दृष्टि का है दृष्टांत।
अनेकांत को स्वीकारो बच्चों, एकान्त दृष्टि है असत्य।।
इसे भी कहते हैं 'सापेक्ष सिद्धान्त', 'अनेकान्त' या उदार दृष्टि।
'सत्यग्रहिता' व भाव 'अहिंसा', स्याद्वाद कथन व्यापक दृष्टि।।
तीर्थंकरों ने यह बताया, आचार्यों ने भी इसे माना।
जैन धर्म का प्राण यह है, आइन्स्टीन ने भी इसे माना।।
अनेकान्त है वस्तु स्वरूप, सत्य ज्ञान हेतु श्रेष्ठ उपाय।
विश्व समस्या का समाधान सूत्र, 'कनक' मान्य यह उपाय।।

□□□

जो कुछ होता सही न होता
(गलत अधिक होते सही कम होते)

(रागः दोहा)

जो कुछ होता सो सही, यह न यथार्थ होय।
सही तो कर्म होता है, गलत अधिक होय।। (1)
गलत से भी शिक्षा लेना, यह तो यथार्थ होय।
किन्तु गलत करना यह, उचित न होय।। (2)
हिंसा झूठ चोरी कुशील परिग्रह, तथा व्यसन भी।
क्रोध मान लोभ मिथ्यात्व, न होते हैं सही।। (3)
अन्याय अत्याचार भ्रष्टाचार शोषण मिलावट।
निंदा चुगली अपमान, प्रताड़न न होता सत्य।। (4)
यदि सब सही होते, नीति न्याय व्यर्थ होते।
सदाचार संविधान धर्म, शील व्यर्थ होते।। (5)
कोई न होते दोषी पापी, सभी हो जाते समान।
चोर हत्यारा साधु सज्जन, सभी हो जाते समान।। (6)

भक्षक व रक्षक तथा, चोर-दानी होते सम।
सेवाभावी शोषक डाकू-डाक्टर होते सम।। (7)
इसी से बहु अनर्थ होंगे, स्वेच्छाचारिता बढ़ेगी।
तानाशाही व मत्स्यन्याय की, नीति सर्वत्र होगी।। (8)
विद्यालय प्रवचन उपदेश, सभी व्यर्थ होते।
तीर्थंकर बुद्ध गुरु आदि, सभी भी व्यर्थ होते।। (9)
सत्य समता शान्ति शिक्षा, आदि तो यथार्थ है।
अन्याय पाप अधर्म आदि, नही होते यथार्थ हैं।। (10)
क्षीर नीर न्याय विवेक, गुणग्राही तो वरणीय।
सत्य समता निष्पक्षता, 'कनक' योग्य वरणीय।। (11)

❑❑❑

छोटे भी होते हैं मोटे उपकारी

सभी ही छोटे नहीं खोटे होते, छोटे के काम भी मोटे होते।
बड़ों के आकार भी छोटे होते, छोटे के बिना न मोटे होते।।1।।
वनस्पति भी होती है छोटे प्राणी, जिससे जीवित होते मोटे प्राणी।
भोजन, औषधि व प्राणवायु, प्राप्त करके बड़े बिताते आयु।। 2।।
कृषक होते है अन्नदाता सभी के, नेता से प्रजा, साधु तक के।
गाय, भैंस बकरी, भेड़ आदि, देते हैं दूध गोबर आदि।। 3।।
पक्षी व मधुमक्खी पतंग भ्रमर, परागण भी वे हैं करते प्रचुर।
जिससे (है) फल अनाज उत्पन्न होते, मनुष्य पशु पक्षी उसे भी खाते।। 4।।
श्रमिक जन बनातें मकान महल, तालाब, केनाल व सड़क पुल।
विभिन्न प्रकार की वे सेवा करते, मानव समाज का (बहु) उपकार करते।। 5।।
रेशा से धागा बनता तथाहि वस्त्र, अणु से (भी) बनता है भौतिक विश्व।
जलकण से बादल तथाहि वर्षा, उससे जीवन जीते सकल प्रजा।। 6।।
मिट्टी को तुच्छ मानता मानव प्राणी, मिट्टी से जीवित है पृथ्वी के प्राणी।
मानव बिना होंगे अन्य प्राणी जीवित, अन्य के बिना मानव न होगा जीवित।। 7।।
राजा बिना प्रजा का होता अस्तित्व, भोगभूमि में राजा का नहीं अस्तित्व।

वस्त्र बिना रेशा का होता अस्तित्व, रेशा बिना वस्त्र का नहीं अस्तित्व।। 8।।

छोटी कोशिका से बनता शरीर, तथाहि छोटे करते बहु उपकार।
छोटे को हेय मानना नहीं उचित, सभी के प्रति 'कनक' का समता चित्त।।9।।

❑❑❑

"विनाश होता है धीरे धीरे"

(-) (नकारात्मक विकास के सूत्र)

(तर्ज : हे राम हे राम..., मोक्ष पद मिलता धीरे धीरे...)

विनाश होता है धीरे धीरे...2
साधना त्यागे, संक्लेश (तनाव) करे (भ्रष्ट भी बने)
कुफल मिलेगा धीरे धीरेऽऽ/ (टेक/स्थायी)
काम न करके, दाम चाहने से...2, बीज न बोकर खेती (फल/धान्य) चाहने से..2
चोर भी बनते हैं धीरे धीरे ऽऽ, विनाश होता...(1)
अभक्ष खाने से, व्यसनी होने से...2, श्रम न होने से, फैशन करने से ऽऽ
रोग भी होता है धीरे धीरे ..ऽऽ, विनाश होता...(2)
उद्दण्ड बनने से, स्वाध्याय न करने से...2, संकीर्ण बनने से, गुण-हीन होने सेऽऽ
अज्ञानी बनते हैं धीरे धीरे ऽऽ.., विनाश होता...(3)
उद्योगहीन होने से, न्याय न पालने से...2, याचना करके, व्यय करने सेऽऽ
गरीब बनते हैं धीरे धीरेऽऽ.., विनाश होता...(4)
क्षुद्रता करने से, बढ़ाई चाहने से...2, अभद्र बनने से, शोषण करने सेऽऽ
निंदा भी होती है धीरे धीरेऽऽ.., विनाश होता...(5)
अधिक चाहने से, ईर्ष्या करने से...2, धैर्य न धरने से, संक्लेश करने सेऽऽ
दुःखी भी बनते हैं धीरे धीरे ऽऽ.., विनाश होता...(6)
मोह करने से, कषाय पालने से...2, सत्य न मानकर, घमंडी बनने सेऽऽ
जैनत्व छूटेगा धीरे धीरे ऽऽ.., विनाश होता...(7)
पाप करने से, व्रत न पालने से...2, स्वाध्याय हीनता से, दान न देने सेऽऽ
श्रावक व्रत (सागारधर्म से) च्युत धीरे धीरेऽऽ.., विनाश होता...(8)
परिग्रह रखने से, साधुता (साधना) न होने से...2, असमता से, कुध्यान सेऽऽ

आत्मा न पाओगे धीरे धीरेऽऽ.., विनाश होता...(9)
मोह बढ़ाकर कषाय करने से...2, कुध्यान ध्याकर, संक्लेश करने सेऽऽ
संसार बढ़ेगा, धीरे धीरेऽऽ..., विनाश होता...(10)
धैर्य न धरने से, विश्वास त्याग से...2, साधना हीनता से, कुभाव करने सेऽऽ
विनाश होयेगा धीरे धीरे ऽऽ.., विनाश होता...(11)
'कनक' कहे ऐ मानव सुनो...2, इन कारणों से, दूर ही रहो ऽऽ
विकास होयेगा धीरे धीरे ऽऽ..., विनाश होता...(12)

❑❑❑

"विकास होता है धीरे धीरे"

(+) (सकारात्मक विकास के सूत्र)

(तर्ज : हे राम हे राम..., मोक्ष पद मिलता धीरे धीरे...)
विकास होता है धीरे धीरे...2
साधना करो साध्य मिलेगा (लक्ष्य मिलेगा।)
सुफल मिलेगा धीरे धीरे ऽऽ (टेक/स्थायी)
बीज भी बोओ, अंकुर होगा...2, वृक्ष भी बनेगा फल भी आयेंगे ऽऽ
रस भी पाओगे, धीरे धीरे ऽऽ, विकास होता...(1)
भ्रूण से पूर्णता, बिन्दु से सिंधु...2 कदम से राह, तन्तुओं से वस्त्र ऽऽ
भोजन रस से बने धीरे धीरे ऽऽ, विकास होता...(2)
सात्विक खाओ, सदाचारी बनो...2, श्रम भी करो, प्राणायाम करो ऽऽ
स्वस्थ भी रहोगे, धीरे धीरे ऽऽ, विकास होता...(3)
विनम्र बनो, स्वाध्याय करो...2, उदार बनो, गुणों को मानो ऽऽ
ज्ञानी भी बनोगे धीरे धीरे ऽऽ, विकास होता...(4)
उद्योग करो न्याय पे चलो...2, दान भी करो, संयमी बनो ऽऽ
सम्पन्न बनोगे धीरे धीरे ऽऽ, विकास होता...(5)
महान् करो, महान् बनो...2, निःस्वार्थ (पवित्र) बनो, सेवा भी करो ऽऽ
प्रसिद्धि होयेगी धीरे धीरे ऽऽ, विकास होता...(6)
संतोषी बनो, ईर्ष्या भी त्यागो...2, धैर्य को धारो, संक्लेश त्यागो ऽऽ
सुःखी भी बनोगे धीरे धीरे ऽऽ, विकास होता...(7)

मोह को छोड़ो (त्यागो), कषाय त्यागो...2, अष्टांग पालो, व्यसन त्यागो ऽऽ
जैनत्व पाओगे (सम्यक्त्वी बनोगे) धीरे धीरे ऽऽ, विकास होता...(8)
पापों को त्यागो, व्रतों को (प्रतिमा) पालो...2, स्वाध्याय करो, दान भी करो ऽऽ
श्रावक बनोगे धीरे धीरे ऽऽ, विकास होता...(9)
परिग्रह त्यागो, श्रमण बनो...2, समता धारो, सुध्यान करो ऽऽ
आत्मा को पाओगे धीरे धीरे ऽऽ, विकास होता...(10)
कषाय नाशो, लीनता (समाधि) पाओ...2, शुक्ल भी ध्याओ, क्षपक चढ़ो ऽऽ
मोक्ष भी पाओगे धीरे धीरे ऽऽ, विकास होता...(11)
धैर्य को धारो, विश्वास करो...2, साधना करो, विकास करो (भावना भाओ) ऽऽ
'कनक' पाओगे लक्ष्य धीरे धीरे ऽऽ, विकास होता...(1)

❑❑❑

भारतीयों के भ्रष्टाचार एवं पापाचार के कारणों का अनुसंधान

(तर्ज : पावन है इस देश..., 2. मन की मुरलिया...)

भारतीयों के भ्रष्टाचारों का मैं कर रहा हूँ अनुसंधान।
सनम्र सत्यग्राही दृष्टि से, दया भाव से परिशोधन।...(टेक)
अंतरंग में पूर्वार्जित कर्म वर्तमान है बाह्य कारण।
समग्रदृष्टिकोण समन्वित, मनोविज्ञान से वातावरण।।..2
सैंकड़ों वर्ष गुलाम होने से, मौलिकता का हुआ क्षरण।
गुलाम मानसिकता से लेकर अकल बिना नकल कारण। (1) भारतीयों...
स्व आध्यात्मिक संस्कृति भूला, भौतिकता का किया वरण।
स्वतंत्रता के परिवर्तन में, स्वच्छंदता का दीवानापन।।...2
शासक विदेशी आक्रांताओं को, मान बैठा है अतिमहान्।
इसलिए तो स्वतंत्र भारत में, उनका होता अंधानुकरण।। (2) भारतीयों...
उनके समान खान-पान व वेश-भूषा और चाल चलना।
उनकी शिक्षा व भाषा कानून, सिनेमा, गान संविधान।। ...2
उनके आर्थिक विकास ज्ञान से हो रहा है सम्मोहित।
आध्यात्मिकता विवेक त्याग कर मुद्रा राक्षस से हुआ पतित।। (3) भारतीयों...
अनंतकाल की अतृप्त इच्छा, कलयुग (कलियुग) में करे दमन।

निर्जीव यंत्रों का दास बनकर, त्याग किया है स्वाबलम्बन।।...2
भोग विलासिता तृष्णा के कारण, धन आपूर्ति का बढ़ा प्रमाण।
इसलिए हर भ्रष्टाचार, बढ़ रहा दिनों-दिन... जान।। (4) भारतीयों...
इसी हेतु पढ़ाई भी करे जिससे न आता गुण महान्।
फैशनी-व्यसनी-आलसी होकर कर रहा है आत्म पतन।...2
ऐसी ही नौकरी, व्यापार, काल व राजनीति में बन बेईमान।
कानून, उद्योग, धर्म आदि में बेईमानी से भी करे वर्तन।। (5) भारतीयों...
परिवार से संसद तक व देवालय से न्यायालय काम।
इस काम व हर स्थिति में, सच्चाई अच्छाई है बेकाम।।...2
इनसे होता पाप का बंध व आचार-विचार होता विलोम।
विवेक, विनय कार्यपद्धति का, भारत में हो रहा है लोप।। (6) भारतीयों...
अनुभवहीन पद्धति-विहीन, अनुशासन न होता पालन।
गुण-गुणियों का नहीं सम्मान इसलिए हो रहा पतन।।...2
हीरो हीरोईन, अश्लील, उद्दण्ड बाहुबल का होता सम्मान।
इसलिए वे मालिक बनकर, संस्कृति को करे हीयमान।। (7) भारतीयों...
धर्म में नहीं नैतिकता, आडम्बर सर्वत्र जान।
आध्यात्मिकता के परितर्वन में भौतिकता का है सम्मान।।...2
इनका कुफल भारतीय जन, भोग रहे हैं प्रतिदिन।
जनसंख्या वृद्धि भ्रष्टाचार रोग, गंदगी में हो रहा अग्रिम।। (8) भारतीयों...
ईमानदारी में सत्यासी स्थान, खुशी में नब्बेवें स्थान।
वैश्विक दृष्टि से आज इंडिया का नहीं रहा है कुछ सम्मान।। ...2
संयुक्त राष्ट्र संघ तक में, नहीं मिल रहा है योग्य स्थान।
सर्वोच्च विश्व विद्यालयों में भारत का नहीं उच्च स्थान।। (9) भारतीयों...
न्यायालयों में नहीं शीघ्र निर्णय न्यायोचित सत्य प्रमाण।
संसद तो सबका दादा काला अंग्रेज व बेईमान।।...2
पृथ्वी भर में तीन-चार देश इंडिया से निम्न स्थान।
विश्वगुरु भारत प्रतिस्पर्द्धारत, प्राप्त करने को निम्नस्थान।। (10) भारतीयों...
इस कुकृत्यों को जानकार त्यागो, तब होगा भारत महान्।
"कनकनन्दी" तो इसी प्रयास में कर रहा है आह्वान।।...2
भारतीयों के भ्रष्टाचारों का मैं कर रहा हूँ अनुसंधान।
सनम्र सत्याग्राही दृष्टि, दयाभाव से परिशोधन मान।। (11) भारतीयों...

इंडियनों के पिछड़ापन के कारण एवं निवारण

(भारत के पतन एवं उत्थान के कारण)

(राग : सुनो सुनो ए दुनिया वालों....)

सुनो इण्डियन सुनो हिंग्लिस्तानी, पिछड़ापन की सच्ची कहानी।
जिसे सुनकर जिसे गुनकर तुम रचाओ प्रगति कहानी.. (स्थायी)...
पिछड़ापन के प्रधान हेतु, अव्यस्थित कार्य पद्धति
अनुशासनहीनता तेरी प्रवृत्ति, कार्य करने में आलस्य वृत्ति
कर्त्तव्यनिष्ठा तुम में नहीं है, दक्षता प्राप्त करते नहीं हैं
अकल बिना नकल प्रवृत्ति, सत्य तथ्य बिन तेरी कृति..(1)
शोध-बोध बिना तुम्हारी शिक्षा, साक्षार होना भी तुम्हारी इच्छा
डिग्री प्राप्त करो नौकरी हेतु, नौकरी करना शोषण हेतु
भ्रष्टाचार हेतु तेरी राजनीति, रक्षक बनकर भक्षक नीति
जाति पंथ क्षेत्र भाषा आधारित, राजनीति तेरी फूट की नीति...(2)
न्यायालय तेरा अन्याय हेतु, प्रभावशाली व्यक्ति की रक्षा हेतु
अतिदेरी से फैसला करो, साक्षी आधारित निर्णय करे
आंतकवादी व दोषी नेता हेतु, करोड़ों का खर्च रक्षण हेतु
छोटे दोषी हेतु कठोर नीति, सही में कानून अंध ही नीति...(3)
गुलामी कानून अभी भी चले, बेचारी जनता अभी भी मरे
मद्य विक्रय अभी भी चले, पशु हत्या अभी भी चले
तुम्हारी पुलिस सब से भ्रष्ट, रक्षक रूप में महाराक्षस
नौकर रूप में साक्षात् यम, धन जान मान करे हरण..(4)
व्यापार उद्योग में सच्चाई कहाँ, झूठ मिलावट शोषण वहाँ
जमाखोरी नकली वस्तु विक्रय, करचोरी धोखाधड़ी प्रचुर
गंदगी फैलाओ प्रदूषण करो, वृक्ष पशु की हत्या भी करो
फैशन व्यसन दिखावा करो, आधुनिकता का ढोंग भी करो...(5)
धर्म में नहीं है आध्यात्म लक्ष्य, पवित्र भावना महान् लक्ष्य
सत्य हिंसा व परोपकार, प्रामाणिकता व नैतिकाचार
धर्म में भी चले राजनीति व्यापार, बाह्य में प्रचार ढोंगाचार

धन जन मान का प्रदर्शन होता आत्मप्रदर्शन का नहीं है पता..(6)
मातृ-भाषा का नही सही ज्ञान, अंग्रेजी भाषा का करो है मान
इसलिए स्वसंस्कृति ज्ञान से, अनजान होकर बने हीयमान
इसका प्रतिफल मिल रहा है अभी, विभिन्न रोगों के बन गए हो रोगी
तनाव एड्स डायबिटीज रोगी, हृदयघात से क्षय के भोगी...(7)
दुर्घटना से आत्महत्या पर्यंत, तलाक, विघटन, हड़ताल तक
आतंकवाद से नस्लवाद पर्यंत, ये प्रतिफल तुम्हारे कृत्य
दोषों को जानकर कर निवारण, जिससे होगा तेरा कल्याण
'कनकनन्दी' की यही भावना इसी हेतु हुई यह रचना...(8)

❑❑❑

नृत्याभिनय सह

"हर पाप-पुण्य एवं मोक्ष के कर्त्ता: मानव"

(राग : ओडिशी /बंगला...2. सायोनारा... 3. इतनी शक्ति...)

हर कर्म को करने वाला, होता है वह मानव रे।
हर गति में जाने वाला, होता है वह मानव रे।। (ध्रु.)
हर पाप को करने वाला, होता है वह मानव रे।
हर नर्क में जाने वाला, होता है वह मानव रे।। (1)
हर लेश्या में रहने वाला, होता है वह मानव रे।
हर पुण्य को करने वाला, होता है मानव रे।।(2)
हर वस्तु को खाने वाला, होता है वह मानव रे।
हर कुभाव को करने वाला, होता है वह मानव रे।।(3)
ज्ञान-विज्ञान का आविष्कारक, होता है वह मानव रे।
हर कुज्ञान को करने वाला, होता है वह मानव रे।।(4)
हर विकास को करने वाला, होता है वह मानव रे।
हर विनाश को करने वाला, होता है वह मानव रे।।(5)
हर धर्म को पालने वाला, होता है वह मानव रे।
हर कुधर्म को पालने वाला, होता है वह मानव रे।।(6)
हर संस्कृति का आविष्कारक, होता है वह मानव रे।

हर विकृति का आविष्कारक, होता है वह मानव रे।।(7)
हर भाषा को बोलने वाला, होता है वह मानव रे।
हर मिथ्या (मृषा) को बोलने वाला, होता है मानव रे।।(8)
मानव ही महामानव बनता महामानव से भगवान् रे।
मानव ही दानव भी बनता, करता है दुराचार रे।। (9)
अधिक बुद्धि शक्ति पाकर करे जो सदा सदुपयोग रे।
हर विकास को करता हुआ, बन जाता भगवान् रे।। (10)
दुरुपयोग जब करता है, करता है कुकर्म रे।
हर विनाश को करता हुआ, जाता नरक निगोद रे।। (11)
हर प्रदूषण हर विध्वंसक, फैशन व्यसनों का सेवी है।
मानव के सम अन्य कोई, जीव न होता सर्व संभावी है।। (12)
उपलब्धियों के सदुपयोग से, मानव बनो भगवान् रे।
उपलब्धियों के सदुपयोग से, 'कनक' प्रयत्नवान् है।।

❑❑❑

संकीर्ण स्वार्थी क्रूरतम प्राणी है: मानव

(राग : आत्मशक्ति से ओतप्रोत... 2.सुवर्ण पात्री...(मराठी))
अभी तक के ज्ञात जीव में... सबसे क्रूर है मानव।
शास्त्र पुराण इतिहास लिखित...विज्ञान से है प्रमाण। (सिद्ध)।। (ध्रु.)
पाँचों पाप सप्त व्यसन...आठ मद मानव ही सेवता।
पच्चीस कषाय तीन सौ त्रेसठ... मत मानव ही करता।।
आक्रमण लूटपाट युद्ध महा...युद्ध मानव ही करता।
प्राकृतिक दोहन शोषण... विध्वंस भी मानव ही करता।। (1)
बलात्कार परस्त्री गमन... वेश्यागमन मानव ही करता।
मांस शाकाहार दुग्धाहार... सर्वाहार मानव ही करता।।
युद्धबंदी नौकरप्रथा.. दासप्रथा मानव ही करता।
गर्भपात आत्महत्या दहेज... हत्या मानव ही करता।।(2)
स्वार्थ संकीर्णता व कषायों... से आवेशित होकर।
फैशन व्यसन पापमद करता... है मानव होकर।

इन कारणों से वह धर्म में...भी है करता बहु पाप।
जीवबलि भेदभाव हिंसा... प्रतिहिंसा रूपी पाप।। (3)
मद्य मांस नशा सेवन...परस्त्री सेवन करता तथा।
आक्रमण युद्ध हत्या गुलाम...बनाने की कुप्रथा।
छुआछूत ईर्ष्या घृणा... नारी पुरुष में भेदभाव।
परम पावन धर्म के हेतु...करता है पापों के भाव।। (4)
ऐसा ही व्यापार व राजनीति... में भोग उपभोग हेतु।
परंपरा व स्वास्थ्य कारण... संतान प्राप्ति के हेतु।
सुख समृद्धि वर्षा के कारण... युद्ध में विजय के हेतु।
करता है कुकाम विभिन्न...तथा ही भविष्य हेतु।। (5)
मानव स्व शक्ति बुद्धि...साधन व उपकरण।
पाप हेतु अधिक करता...दुष्कर्म व दुराचरण।
इस हेतु मानव से ही... विध्वंस अधिक होता है।
जिससे दुःखी यहाँ होता... मरकर नरक भी जाता।। (6)
यदि मानव स्वशक्ति आदि... का करेगा सदुपयोग।
इह परलोक में वह करेगा... है सुख व उपभोग।
मानव से महामानव...तथाहि बनेगा भगवान्।
इसी हेतु 'कनकनन्दी' भी.. सतत प्रयत्नवान्।। (7)
विशेष परिज्ञान हेतु करो, मेरे साहित्य अध्ययन।
गद्य पद्यमय अनेक साहित्य...किया मैंने लेखन।।

❑❑❑

परम विकास के लिए आध्यत्मिक रहस्य के सूत्र

(असीम क्षमतावान्ः मानव)

(परमात्मा शक्ति संपन्नः मानव)

(राग : बहुरागीय व्यापक भाव दृष्टि युक्त गीत...)
सुनो हे मानव! तुम्हारी क्षमता... असीम अनन्त कल्पनातीत।
मानव से महामानव भगवान्... बनने की है तेरी ताकत।
अन्तर्मुहूर्त में भगवान बनने की...तेरे अन्दर है सुप्त क्षमता।

आत्म साधना से प्रगट होने से... बन जाओगे/(सकते) हो तू परमात्मा।
तीर्थेश केवली गणधर साधु... आत्मा से बने परम आत्मा।

परमात्मा की शक्ति से युक्त...तेरी क्षमता अनन्त तक (मा)।
अतएव त्यागो क्षुद्र विचार...कुंठा दंभ तथा मिथ्याचार।

आलस्य प्रमाद कर्तव्यमूढ़ता...तनाव उदास अयोग्याचार।
आत्मविश्वास व सदाचार द्वारा...तेरा विकास होगा अपार।

द्रव्य क्षेत्र काल सुरक्षा पाकर...वट बीज बने वृक्ष विशाल।
राजा महाराजा चक्रवर्ती नेता... बनना ही नहीं (है) महान् काम।

सेठ साहूकार सरकारी नौकर...विज्ञानी बनना नहीं महान् काम।
इससे परे भी सच्चिदानंद...सत्य शिव बनना तुम्हारा काम।

अनन्त विकास होने से पूर्व...अन्य सर्व विकास सहज काम।
सूर्य यथा है स्व प्रकाशी...असीम ऊर्जा का अजस्र पिण्ड।

तथाहि तेरी है क्षमता अनन्त...अक्षय अनन्त चेतना पिण्ड।
द्रव्य भाव कर्म विनाश समर्थ...तुझमें है अनन्त शक्ति।

आधि-व्याधि व उपाधि नाशक...तेरे में है अक्षयशक्ति।
अक्षय अनन्त सुख विज्ञान...वीर्य वस्तुत्व आत्म वैभव।

प्राप्त करने की तेरी क्षमता से...सर्व ही कार्य यथा संभव।
इम्पॉसिबल में समाविष्ट ...आई एम पॉबिसल सम्पूर्ण अर्थ।

मैं ही सबके सम्भव कर्त्ता...यह आध्यात्मिक गूढ़ रहस्य।
स्व-क्षमता के सम्यक् विकास से...बनेगा तू मानव से भगवान्।

विपरीत से विनाशक बनता...बनता है तू दुष्ट हैवान्।
विपरीत त्यागो सम्यक् (तू) भजो...करो परम आत्म विकास।

इस हेतु सदा 'कनक' प्रयास...अन्य है सर्वांगीण प्रयास।

❑❑❑

कब ये मानव शान्ति पायेगा?

(राग : इतनी शक्ति हमें देना... 2. झिलमिल सितारों का..)
कब ये मानव सरल होगा, सहज भाव से शान्ति पायेगा।

महान लक्ष्य में (हेतु) जीया करेगा, स्व पर विश्व हेतु भाव करेगा।
भौतिकता से परे सोचेगा, संकीर्ण स्वार्थ से नही बंधेगा।। (1)

बुद्धि से परे भी भाव करेगा, आध्यात्मिकता का भान करेगा।
देह से परे आत्मा मानेगा इन्द्रियातीत भी भान करेगा।
इन्द्रिय परे भी ज्ञान करेगा, अमूर्तिकमय द्रव्य मानेगा।। (2)
भेदभाव से परे सोचेगा, समतामय जीना जीयेगा।
अपना पराया नहीं मानेगा, उदार सहिष्णु भाव करेगा।
शोषक शोषित परे बनेगा (जीयेगा), सर्व जीव से मैत्री करेगा।। (3)
हिंसा प्रतिहिंसा नहीं करेगा, कलह द्वंद्व से दूर रहेगा।
धर्म हेतु न द्वेष करेगा, राष्ट्र के लिए न वैर करेगा।
भाषा के लिए न विष घोलेगा, जातिमद का न पान करेगा।। (4)
सत्ता-सम्पत्ति व प्रसिद्धि हेतु, फैशन व्यसन (व) मान के हेतु।
अन्याय अत्याचार नहीं करेगा, ईर्ष्या तृष्णा से रहित रहेगा।
सत्य समता में जीया करेगा, तन मन से स्वस्थ बनेगा।। (5)
आत्म कल्याण हेतु कार्य करेगा आत्मिक शाश्वत सुख पायेगा।
'कनक' इस हेतु प्रयासरत, नवकोटी से करे प्रयास।
विश्व मानव करे तथा प्रयास, इसलिए मेरा शुभ आशीष।। (6)

❑❑❑

महामानव प्रति मानव की क्रूरता
(महामानव की महानता से अज्ञ मानव उनसे करता क्रूरता)

(राग : आत्म शक्ति से ओत प्रोत... 2. नरेंद्र छंद...)
जय जय हे महापुरुष! महान्, सत्यनिष्ठा में आप वज्र समान।
भावना में आप कुसुम समान, आचरण में आप दीप समान।। (ध्रु.)
क्षमाशीलता में धरती समान, तेजस्विता में हो सूर्य समान।
भद्रता में हो बैल समान, गुणग्राहीता में गाय समान।।
आकाश के समान उदारवान्, कमल के सम निर्लिप्तवान्।
सुमेरु के सम है स्थिरवान्, समुद्र के समान गंभीरवान।। (1)
असाधारण (हो) आप श्रीमान्, अलौकिक आप व्यक्तित्ववान्।
आपको न समझे अन्यजन (आमजन), आपको वे मानते दुर्जन।

कष्ट देते आपको वे निर्मम, सम्मान के बदले में अपमान।
कभी वे कराते आपको विषपान, शूली से लेते आपकी जान।। (2)
स्वदेश से करते आप (का) निष्कासन, वध बंधन से करते अपमान।
इसी हेतु अनेक तेरे उदाहरण, तीर्थंकर बुद्ध जैसे महान्।।
पुराण इतिहास अनुभव से (मैं) लिखा, वर्तमान समय में बहुत मैं देखा।
अतः महापुरुष से लाभ न लेते, कष्ट देते पर शिक्षा न लेते।। (3)
सुकरात ईसा लिंकन अब्राहम, मीरा मोहनदास गांधी महान्।
तेरी मृत्यु अनन्तर पूजते मानव, अभाव अनन्तर करते सम्मान।
मरण अनन्तर करते श्राद्धदान, हाथी दाँत से यथा हाथी निर्माण।
अतएव मानव ही सही दानव (हैवान), जो न करते तेरे सम्मान।। (4)
संकीर्ण स्वार्थी मोही जो मानव, अतएव न पाते वे उच्चस्थान।
तेरा विकास सदा महान् होता, धनी मानी से भी महान् होता।
तेरे कारण (ही) मानव होता महान्, 'कनक' चाहे गुणगण महान्।
गुणों से ही बनूं मैं भी महान्, अतएव करता हूँ गुणगान।। (5)

❑❑❑

परमपीड़क का विनाश एवं साम्यभावी का विकास
(साम्यभाव की महिमा)

(राग : यमुना किनारे... अच्छा सिला दिया..., बहुत प्यार करते हैं...)

दूसरों को कष्ट कभी दिया न करो, दुःख के बदले दुःख पाया न करो।
दुःख देने वाला पापी होता है निश्चय, पाप से पतन होता यह है निश्चय।
दुःख के बदले जो दुःख नहीं देता है, निश्चय से वह सुखी होता जाता है (1)
दूजों को कष्ट देने के भाव मात्र से, पाप का बंध निश्चय होता तब से।
तनाव अशांति का भी होता प्रचार, प्रतिक्रिया रूप से भी होता प्रहार।
साम्यवादी प्रतिक्रिया यदि न करे, स्वकर्म पाप से दुःख ही भरे।।(2)
मरुभूति को कमठ ने दुःख ही दिया, दश भव तक प्रतिशोध ही लिया।
तथापि मरुभूति क्षमा धारण किया, दश भव तक साम्यभाव धारण किया।
अंत में मरुभूति बने पार्श्व तीर्थेश, दश भव तक कमठ पाया संक्लेश। (3)

कौरवों ने पाण्डवों को कष्ट ही दिया था, अंत में कौरवों का नाश ही हुआ था।
कंस ने कृष्ण को सदा मारना चाहा, अंत में कृष्ण द्वारा मारा ही गया।
सिकंदर, हिटलर सद्दाम, ओसामा जो दूसरों को कष्ट दिए हुआ खातमा।। (4)

बड़े-बड़े राजा महाराजा क्रूर नरेश, परपीड़क जनों का हुआ विनाश।
मय राक्षस सभ्यता या यज्ञवंश, अंत में सब का हुआ विनाश।
हिंस्र पशु-पक्षियों की संख्या बताती, जो दूसरों को खाये उसकी संख्या घटती।। (5)

प्रहार सहने वाली मूर्ति पूज्य बनती है, प्रहारक हथौड़ी न पूज्य बनती है।
अलंकार मुकुट व मिट्टी के घड़े, प्रहार सहन करने से सिर पर चढ़े।
अन्य धातु मिट्टी नीचे रहती, दूसरों के पैर तले मर्दित होती।। (6)

मर्दन गुण वर्द्धन नीति है प्रसिद्ध, क्षमा वीरस्य भूषणं सूत्र है सिद्ध।
क्षमा बड़न को छोटन को उत्पात, लौकिक उक्ति भी जग विख्यात।
'कनकनन्दी' तो चाहे सदा सद्भाव, सत्य समता से ही होवे कल्याण।। (7)

❑❑❑

(सुधारपरक व्यंगात्मक कविता)

विश्वगुरु भारत बन गया बेईमानों का देश

(ईमानदारी में भारत का स्थान 87वें पायदान पर)
(आधुनिक इंडिया की सच्ची तस्वीर)
(राग : 1.कहाँ गये चक्री... 2.सुनो सुनो ए दुनिया वालों..., 3. तन के तम्बूरे में..., 4. पूजा पाठ...)

कहाँ गयी वह ईमानदारी जिससे भारत महान् था।
प्राण जाये पर वचन न जाये ऐसा जिनका मान था।
प्रामाणिकता के हेतु ही भीष्म ब्रह्मचर्य का नियम लिया (व्रत को धारा)
पिता के वचन पालन हेतु श्रीराम वनवास स्वीकारा।
हरिशचंद्र भी प्रतिज्ञा हेतु श्मशान में शवदाह भी किया
प्रमाणिकता की सिद्धि हेतु सीता ने अग्नि में प्रवेश किया...(1)

'सत्यमेव जयते' जिस भारत का महान् भी मंत्र रहा।
वही भारत आज ईमानदारी में, सत्यासीवें (87) स्थान में रहा।

यह तो आज चिंता, चिंतन व शर्मनाक परिस्थिति ही मानो।
इससे श्रेष्ठ प्रामाणिक हेतु मरण वरना उचित जानो...(2)

यत्र तत्र सर्वत्र आज इंडिया में बेईमानी छाई
मन वचन व कार्य से आज ईमानदारी गायब हुई
स्कूल में देखो शिक्षक न पढ़ाते ट्यूशन पढ़ाते धन लोभ से
छात्र भी देखो नकल डिग्री पाकर नौकरी करते...(3)

नौकर बन के काम न करते भ्रष्टाचार से धन कमाते
व्यापार उद्योग मिलावट तथा शोषण करके धन जोड़ते
लोकसभा व विधानसभा में जनसेवक बने तानाशाह
काम न करके हंगामा करते भ्रष्टाचार के शाहंशाह...(4)

पुलिस देखो रक्षा हेतु नौकर बन के राक्षस बनते
हर पाप में इनका हाथ चोरी भी करते लाठी भांजते
डाक्टर आज डाकू बने हैं धन सहित जान भी लेते
हड़ताल करके रोगी को मारते फर्जीवाड़ा से धन कमाते...(5)

न्यायालय बना धर्म का आलय समय धन के शोषण द्वारा
कर्मचारी से वकील तथा जज भी कमाते अन्याय द्वारा
धर्म में देखो बाह्य दिखावा पवित्र कर्त्तव्य नहीं करते
नौकर द्वारा धर्म करते गुरु की सेवा नहीं करते...(6)

परिवार व समाज में देखो, स्व स्व कर्त्तव्य नहीं करते
माता पिता व वृद्ध रोगी के समुचित सेवा नही करते।
स्व स्व के परिसर की सफाई काम भी नहीं करते
यत्र तत्र भी गंदगी करके पर्यावरण को नष्ट करते...(7)

अनुशासन व आचार न पालते अश्लील उद्दण्ड काम करते
तथापि स्वयं को सभ्य मानते आधुनिकता का ढोंग रचाते।
"कर्मण्येव अधिकारस्तु" यह संदेश श्रीकृष्ण ने दिया
"मा फलेषु कदाचन" ऐसी निस्पृहता गीता में कहा...(8)

महावीर ने वीतरागता को सबसे महान् धर्म भी कहा
तृष्णा त्याग को बुद्धदेव ने दुःख निवृत्ति का उपाय कहा

'साँच बराबर तप नहीं है' झूठ बराबर होता पाप
जाके हिरदे साँच बैठा है वाके हिरदे बैठे है आप...(9)

जिनको मानते उनकी न मानते, कर रहे हैं विपरीत काम
मुँह में राम बगल में छुरी, ऐसे चल रहा देश का काम
बाहर में भगवान की जय हो, अंदर में बेईमान की
गोमुख व्याघ्र समान क्रिया चल रही इंडिया महान् की...(10)

इंडियन बने बड़े इडियट, काम न करते गाल बजाते
सफेद पोश दिन के चोर कर्तव्य चोरी प्रायः करते
इसी कारण आज संत्रस्त भारत में हो रहा हाहाकार
इसे दूर करने का उपाय ईमानदारी को करो स्वीकार...(11)

इसी हेतु यह रचना हुई, 'कनकनन्दी' की यह पुकार
मिथ्या को त्यागो सत्य को भजो जिससे होगा बेड़ा पार...

❑❑❑

(संदर्भ मुंबई हमला 26/11, 2008 की तीसरी बरसी के उपलक्ष्य में)

अभी भारत को क्या हो गया?

(''परित्राणाय दृष्कृताम्.. विनाशाय व साधुनाम् मार्ग पर चल रहा है।)

(राग : जब जीरो दिया मेरे भारत ने...)

क्या हुआ उस भारत को (भारत का मेरे भारत को)... जो कभी विश्व का गुरु रहा।
'सत्यमेव जयते' का नारा दिया... अभी असत्य मार्ग में चल रहा।। टेक।।
स्थापना धर्म की करने हेतु... 'परित्राणाया साधुनाम्' प्रण किया।
न्याय की स्थापना करने हेतु... 'विनाशाय च दुष्कृताम्' पक्ष लिया।। (1)
अभी तो सब उलट हो रहा... 'परित्राणाय दुष्कृताम!' हो रहा।
'विनाशाय च साधुनाम्' लक्ष्य वाले... भारत में प्रबल भी हो रहे।। (2)
हत्यारे आतंकवादी रक्षार्थे...पचास करोड़ खर्च हुआ (हो गया)।
उसकी सुरक्षा करने हेतु...पाँच करोड़ का सेल बना।। (3)
शताधिक जन को मारने वाला...कसाब आज हीरो हो गया।
उसका उपचार करने हेतु...चौबीस डाक्टरों ने काम किया।। (4)

इलाज के हेतु सेल जो बना...बुलेटप्रूफ अभेद्य (वह) बना।
एक करोड़ लगा करके...जे जे अस्पताल पास में बना।।(5)
प्रतिदिन ही लाखों खर्च होता... भारत यह भार वहन करता।
किसान जो अन्नदाता भी होता...गरीबी से आत्महत्या करता।। (6)
जन्म से कर्ज सहित आता...जीवनभर कर्ज को चुकाता।
चतुर्थ श्रेणी के नौकर के सम...अन्नदाता का मान (धन) भी न होता।। (7)
यदि विवशता से दोष हो जाता..अनेक कठोर दंड है मिलता।
अपरासी से सरकार तक...अन्नदाता का खून है पीते।। (8)
ऐसी ही सामान्य जनता की...दुर्दशा होती है भारत में।
हीरो हीराईन नेता धनी लोग...नौकरशाह देश को लूटते।। (9)
ऐसा ही होता हर क्षेत्र में...सामाजिक हो या धर्म क्षेत्र में।
जिसकी लाठी उसकी भैंस...नीति वाक्य तो इसी से बने।। (10)
इसी से न्याय भी कम तो होता...भ्रष्टाचार भी बढ़ता जाता।
नैतिक विकास सही न होता...राष्ट्रीय विकास मंद पड़ता।। (11)
अतः राष्ट्रीय विकास हेतु (कारण)...सत्य न्याय को करो पालन।
फनफनन्दी की यही पीड़ा (भावना)...कविता रूप में हुई रचना।। (12)

❑❑❑

भारतीयों में सत्य को मानने का सत् साहस नहीं

(राग : छोटी छोटी गैया...)

भारतीयों में सत् साहस नहीं...सत्य को मानने की क्षमता नहीं।
रूढ़ि परंपरा या विदेशी नकल (करण)... देखादेखी बहाव में बहते सही।
पूर्वकृत कुकृत तथा दीर्घ गुलामी... सच्ची शिक्षा विहीन संस्कार नहीं।। (1)
इसी के कुछ उदाहरण प्रस्तुत करूँ... विस्तार से ग्रंथों में वर्णन करूँ।
विदेशों में आर्यों का यथा आगम...पूर्व में देश में थे अनार्थ जन।
पांच हजार वर्ष की आर्य संस्कृति...पूर्व में थी भारत में म्लेच्छ संस्कृति।। (2)
आर्य (देश) भारत म्लेच्छखंड हो गया...भारतीयों आर्यों का लोप हो गया।
अधिसंख्य तीर्थंकर म्लेच्छ हो गये...श्रीराम कृष्ण आदि लोप हो गए।
विश्वगुरु भारत नीच हो गया...ज्ञान-विज्ञान सब मिथ्या हो गया।। (3)

हमारी **संस्कृति** है अति महान्.. स्व पर विश्व कल्याणी अमृतपरम्।
तन मन आत्मा को सुख (शान्ति) दायिनी...सत्यं शिवं सुंदरम् सर्व कल्याणी।
तथापि भौतिकता को अपना रहे...विभिन्न कष्टों को भोग भी रहे।। (4)

संस्कृत हमारी संस्कृति भाषा...भारतीय भाषाओं की जननी भाषा।
ज्ञान प्रबोधिनी प्राञ्जल भाषा..:सर्वज्ञान दायिनी प्राचीन भाषा।
मातृभाषा का अनादर कर रहे हैं...गुलामी भाषा को ढो रहे हैं।(5)

हमारे **महापुरुष** आदर्श होते...महान् गुणों से सहित होते।
हमारे अनुकरणीय उनके गुण...आदर्श बनने हेतु प्रथम गुण।
अभी तो हीरो हीरोईन हुए आदर्श...फैशन व्यसन हेतु सही आदर्श।। (6)

हमारा **भोजन** होता सात्विक शुद्ध...शाकाहार फलाहार प्रासुक दूध।
तो भी तामसिक अशुद्ध खाना खाते...बाजारु व मिलावटी खाद्य खाते।
मांस अण्डा मछली भी खाना खाते... धन स्वास्थ्य धर्मशान्ति हराते।। (7)

धर्म अर्थ काम भी मोक्ष युक्त...चक्रवर्ती भी त्यागता संसार सुख।
अभी तो केवल संसार सुख ही रहा...**चारों पुरुषार्थ** अर्थमय हो गया।
जिससे भ्रष्टाचार बहुविध हो रहा...बहुविध समस्याओं को भोग रहा।। (8)

संयम सदाचार आत्मानुशासन...धैर्य क्षमा सहिष्णुता आत्म-निर्भरता।
आर्य संस्कृति के ये मुख्य लक्षण...**विश्व गुरुत्व** की मुख्य पहिचान।
अभी तो इससे विपरीत हो रहा...सर्वत्र देश का अपमान हो रहा।। (9)

चारों आश्रमों से युक्त जीवनचर्या...जीवन मरण व मोक्ष की कला।
व्यवस्थित क्रमबद्ध विकास यात्रा...आत्मा से परमात्मा विकास यात्रा।
अभी तो अस्त-व्यस्त घर रह गया...समाज भी संत्रस्त भीड़ रह गया।। (10)

वैश्विक कुटुम्ब हमारा लक्ष्य भी रहा...**वैश्विक शान्ति** हेतु प्रयास रहा।
अभी तो पेट व पेटी लक्ष्य हो गया...परिवार भी पराया जन हो गया।
संकीर्ण स्वार्थ हेतु मरा जा रहा...दूसरों को मारकर खाता जा रहा।। (11)

मोक्ष की यात्रा अभी लोप हो गयी...अंधी दौड़ में अपमृत्यु हो रही।
सिद्धि नहीं प्रसिद्धि मुख्य हो गयी...साधना भी जन धन हेतु हो गयी।
आध्यात्मिक लोप हो रही...सांसारिक की बाढ़ आ गयी।। (12)

भौतिकवादी ज्ञानी सत्यग्राही हो रहा...**धार्मिक जन** रुढ़िवादी हो रहा।
हमारी संस्कृति पाश्चात्य मान रहा... धार्मिक जन रूढ़िवादी हो रहा।
विश्वगुरु भारत बन रहा दास... स्वतंत्र भारत बना बौद्धिक दास।। (13)

दोहा- तो भी अभी हर क्षेत्र में...होते हैं महान् जन।
संख्या में भले कम होते...तो भी होते वे महान्।
उनके कारण आज बचा है...भारतीय ज्ञान-विज्ञान।
दीपस्तंभ सम अंधकार में...बने हैं प्रकाशवान्।
उनसे शिक्षा ग्रहण कर बने...भारत पुनः महान्।
इसी हेतु भी 'कनकनन्दी'... कर रहा यत्न महान्।।...प्रभुजी...(14,

❑❑❑

कृषक की आत्मकथा तथा आत्महत्या

(अन्नदाता कृषक आत्महत्या न करे तो कैसे?)

(राग : पूछ तेरा क्या नाम रे...)

कृषक मेरा नाम रे, कृषि मेरा काम रे...
वर्षा गर्मी सर्दी में भी, हाड़तोड़ काम रे...2 (स्थायी)
बैल मेरा साथी रे परिवार मेरा साथ रे
खेती में दिन रात मैं, करूँ बड़ा काम रे ...कृषक...1
खेती का पालन पोषण करूँ यथा बच्चा रे
पशु पक्षी व कीट पतंग से, करूँ उसकी रक्षा रे...कृषक...2
उसके प्रसन्न खिन्न में, मैं भी प्रसन्न खिन्न रे
इससे विश्वप्रेम का मैं, पाठ पढ़ता जाऊँ रे...कृषक...3
मेरे से ही जन्म लिए हैं, मानव सभ्यता संस्कृति
कृषि से ही ऋषि बने हैं, कर्म प्रधान युग में...कृषक...4
मेरे से ही शाकाहार, दूध दही घृत झरें
पशु पालन वृक्षारोपण, प्रकृति रक्षण काम रे...कृषक...5
मैं ही सबका अन्नदाता, राजा प्रजा रंक रे
पशु पक्षी व कीट पतंग, वनस्पति वृक्ष (लता) रे...कृषक...6
तैल औषधि मसाला फल, वस्त्र का भी दाता हूँ
मेरे बिना व्यापार न उद्योग, राजनीति न नौकरी रे...कृषक...7
तो भी कृतघ्न मानव, मेरा करता है शोषण रे
मेरी वस्तु का करे व्यापार, दाम में नहीं हकदार मैं...कृषक...8

सबसे शोषित सबसे उपेक्षित, सबसे हूँ मैं गँवार रे
कर्जा में ही जन्म लेता हूँ, कर्जा में ही संहार रे...कृषक...9
चतुर्थ श्रेणी के नौकर से, भी मैं हूँ नौकर नीच
चपरासी से भी दीन गरीब, मैं हूँ गँवार पामर ...कृषक...10
मैं ही पुकारूँ कार्ल मार्क्स, लाल बहादुर शास्त्री को
अब्राहम लिंकन बनकर, मुक्त करो इस दास को...कृषक...11
विश्व में उपेक्षित भारतीय, कृषकगण के तंत्र में
जिस देश में पूजे जाते हैं, गोपाल हलधर भी...कृषक...12
इसलिए तो इस देश की, रक्षा न करे भगवान भी
भक्त में भगवान् बसे हैं, कहें भारतवासी भी...कृषक...13
आत्महत्या के अस्त्र से, मारा जाता अन्नदाता रे
आतंकवादी भ्रष्टाचारी भी, पूजे गए संसद तक में...कृषक...14
जिस देश ने विश्व को दिया वसुधैव कुटुम्ब नारा है
उसी देश में मारा जाता वसुधैव कुटुम्ब वाला है...कृषक...15
'कनकनन्दी' के माध्यम से, मैं अपनी पीड़ा प्रकट करूँ
प्रार्थना करूँ मैं मानव में ही, गोपाल हलधर प्रकट करूँ...
कृषक मेरा नाम रे, कृषि मेरा काम रे...
वर्षा गर्मी सर्दी में भी, हाड़तोड़ काम रे...sss

❑❑❑

गोमाता की व्यथा गाथा

(गो माता की आत्मकथा)

(राग : सुनो सुनो ऐ दुनिया वालों..., 2. आओ बच्चों...)

सुनो सुनो हे दुनिया वालों मेरी अति करुण कहानी
मैं अबला भोली भाली खाने वाली की कहानी (जुबानी) sss
सुनो सुनो हे दुनिया ...(टेक)
खाती हूँ मैं घास फूस किंतु देती अमृत रस दूध रे
अपने बच्चों को थोड़ा पिलाऊँ मानव जाति को ज्यादा दूँ रे
इसलिए तो माँ पुकारे भारतीय जाति

मेरे दूध से बने विविध मिष्ठान्न विविध प्रकार जाति
दही पनीर मट्ठा मक्खन घृत मावा मलाई गोरस जाति
पञ्चगव्य से विविध रोग से मुक्त मानव जाति ऽऽऽ
सुनो सुनो हे दुनिया ...(1)
मेरे बच्चे गाड़ी हल में विविध काम खेतों में करते
तो भी मानव कृतघ्न बनकर हमारी हत्या निशिदिन करते
जिस देश में मुझे पूजते गोमाता भी कहकर
उस देश में मेरा मांस भी बेचा जाता है मारकर
तैंतीस करोड़ देवता भी हैं मेरे देह में मानकर
उस देश में रक्षण मिले बाघ को भी राष्ट्र पशु मानकर
जहाँ पूजा जाता है पत्थर को भगवान् भी मानकर
अहिंसा प्रधान देश भारत में मुझे मारते हैं जानकर
सुनो सुनो हे दुनिया ...(2)
ऐसा कोई देश है जो जिसको पूजे उसको मारे
राष्ट्रीय चिह्न में मेरा सम्मान जीवंत में मुझे ही मारे
चिह्न को जो अपमान करे उसे तो दंड मिले कठोर
मुझे जो मारे सरकार है उसका क्या दण्ड भोगे पामर
लोकानुगतिक लोक ये न लोक है पारमार्थिक
चिह्न में तो मुझे पूजे हैं, जीवन्त में मेरा संहार
सत्यमेव जयते जिस देश में होता है राष्ट्रीय वाक्य
उस देश के न्यायालय भी किंतु नहीं है मेरा सहायक...
सुनो सुनो हे दुनिया ...(3)
जिस देश में हलधर गोपाल पूजे जाते है मंदिर मंदिर
उस देश में उनकी गाय को मारा जाता है हजारों हर दिन
इसलिए तो इस देश के लोकतंत्र में है भ्रष्टाचार
स्व संस्कृति सभ्यता नाशक यह है भारत सरकार
राजनीति के दल सभी हैं चोर चोर मौसेरे भाई
जिसको जब सत्ता मिले हैं करते हैं सब खूब कमाई
अभी तक भी भारत माता गुलामी में जकड़ी है भाई
सुनो सुनो हे दुनिया ...(4)

अभी तो तुम आओ गोपाल तुम हो हलधर
हिंसा भ्रष्टाचार स्वरूप कंस जरासंध का कर संहार
अभी तो मेरा उद्धार करो मैं करुणा से करूँ पुकार
आओ महावीर आओ बुद्ध है हिंसा का तो करो संहार
आओ नानक अर्जनसिंह गुरु वधशालाओं का करो संहार
आओ तिलक महात्मा गांधी मुझको बंधन से मुक्त करो
मेरी ही जल्लाद संतानों से मेरा अब उद्धार करो
तीर्थंकर बुद्ध कृष्ण अल्लाह के भक्तों तुम करो उद्धार
सुनो सुनो हे दुनिया ...(5)

❑❑❑

शिक्षा की गाथा-व्यथा आत्मकथा

(तर्ज : मेरे मन की अंध तमस्..., 2.यही समय की पुकार...)
सुनो हो बच्चों! सुनो हो बच्चों...2
मैं गाता हूँ शिक्षा की **गाथा**, मैं गाता हूँ शिक्षा की व्यथा।
मैं गाता हूँ शिक्षा की **कथा**, मैं गाता हूँ शिक्षा की आत्मा।। सुनो...
अक्षर कला अंक विज्ञान केवल **रटना** नही है शिक्षा,
अक्षर कला अंक विज्ञान केवल **उत्तीर्ण** नहीं है शिक्षा,
अक्षर कला अंक विज्ञान केवल **लिखना** नहीं है शिक्षा,
अक्षर कला अंक विज्ञान केवल **पढ़ाना** नहीं है शिक्षा।। सुनो...
धार्मिक ग्रंथ पूजा पाठ भी केवल **रटना** नहीं है शिक्षा,
धार्मिक ग्रंथ पूजा पाठ भी केवल **उत्तीर्ण** नहीं है शिक्षा,
धार्मिक ग्रंथ पूजा पाठ भी केवल **लिखना** नहीं है शिक्षा,
धार्मिक ग्रंथ पूजा पाठ भी केवल **पढ़ाना** नहीं है शिक्षा।। सुनो...
इनकी उपयोगिता में सुशिक्षा की रहती है **आत्मा**,
सुशिक्षा के प्रचार में शिक्षा की है बोलती **गाथा**,
शिक्षा के **अनुपयोग** में शिक्षा की है चलती व्यथा
शिक्षा के दुरुपयोग से समस्त शिक्षा होती **वृथा**।। सुनो...
संस्कार संस्कृति सदाचार है सभी शिक्षा की होती आत्मा,
इनके बिना सभी शिक्षा है देह की स्थिति बिना आत्मा।।सुनो...

इनके बिना रावण कंस स्व पर नाशक साक्षर राक्षस
इनसे युक्त तीर्थेश बुद्ध प्रह्लाद कबीर पवित्र अन्तस।। सुनो...
तुम भी बच्चों पढ़ो भी गुनो आचरण करो सदा सदाचार,
तुम भी बच्चों पढ़ो भी गुणों कभी न करो भ्रष्टाचार,
तुम भी बच्चों पढ़ो भी गुणों कभी न करो मिथ्याचार,
तुम भी बच्चों पढ़ो भी गुणों, सदा ही करो शिष्टाचार।।सुनो...
तुम भी बनो सभ्य शिक्षित्त, तुम भी बनो देश रक्षक,
तुम भी बनो सभ्य शिक्षित, तुम भी बनो धर्म रक्षक,
तुम भी बनो सभ्य शिक्षित, तुम भी बनो आत्म रक्षक,
तुम भी बनो सभ्य शिक्षित, कनकनन्दी के प्रिय बालक।।सुनो...

❑❑❑

व्यंगात्मक सुधारपरक कविता

मन्यमाना सभ्य मानव की असभ्य बर्बर वृत्ति

(तर्ज : सुनो सुनो हे दुनिया वालों...)

सुनो सुनो हे सभ्य मानव...तुम्हारी असभ्य बर्बर वृत्ति।
सत्ता सम्पत्ति बुद्धि के द्वारा...जो करते हो क्रूर प्रवृत्ति।।ध्रु.।।
सत्तादि द्वारा शोषण करते हो.. जो होते हैं सत्तादि हीन।
शोषण से सत्तादि प्राप्त करके...बन जाते हो और महान्।।
यह प्रवृत्ति तुम्हारी होती...राजनीति धर्म अर्थतंत्र में।
राजतंत्र व समाजवाद...लोकतंत्र या पूंजीवाद में।। (1)
राज्यविस्तार या धर्मप्रचार...उपनिवेश व व्यापार द्वारा।
अन्य राज्यों पर कर आक्रमण...विध्वंस शासन सत्तादि द्वारा।।
देश-विदेशों के इतिहास है...कलंकित इस कृति के द्वारा।
कलंकित इस कृतित्व को तू...महिमा मंडित किया स्वयं के द्वारा।। (2)
महाभारत व रामायण युद्ध...राजा चक्री के दिग्विजय।
सिकंदर व चंगेज खाँ...अकबर बाबर के दिग्विजय।।
अंग्रेजी फ्रांस के उपनिवेश...अथवा रोमन साम्राज्य गाथा।
दोनों विश्वयुद्ध सभ्य मानव की...गा रहे हैं बर्बर गाथा।।(3)

दासप्रथा व कालागोरा भेद... बलिप्रथा व दहेज हत्या।
जातिमद आदि अनेक मद... शोषक शोषित भ्रूणों की हत्या।।
मालिक मजदूर या बंधुआ मजदूर...ऊँच नीच की घृणित प्रथा।
गरीब असहाय बाल व महिला...कृषक शिल्पी की शोषण कथा।।(4)
रोगी पशु पक्षी प्रकृति शोषण... आतंकवाद व नृंशस हत्या।
डाकिनी प्रथा व बाल विवाह...अनमेल विवाह फैशन प्रथा।।
व्यसन विलास पशुक्रूरता...मिलावट अति ब्याज की प्रथा
अश्लील सिनेमा संगीत नृत्य...नशा सेवन व्याज की प्रथा।।(5)
मानव अभी तू सभ्य न बना...नैतिक अध्यात्म दूर की गाथा।
सभ्य साक्षर संस्कारवान् बनो...फिर गाओ हे! नैतिक गाथा।।
नैतिक से धार्मिक बनो...जिससे तुम्हारी सुधरे दशा।
उदार सहिष्णु क्षमावान् बनो... दया परोपकार से सुधरे दशा।। (6)
पावन समता से आध्यात्मिक बनो... जिससे मिलेगी मोक्ष की दशा।
इसी हेतु ही 'कनकनन्दी'... प्रयासरत अंतरंग की दशा।।
सुनो सुनो हे सभ्य मानव...तुम्हारी असभ्य बर्बर वृत्ति।
सत्ता सम्पत्ति बुद्धि के द्वारा...जो करते हो क्रूर प्रवृत्ति।। (1)

❑❑❑

हे मानव विनाशक युद्ध त्यागो, विकास के कर्म करो

(सबसे विनाशक है मानव प्रजाति)
(तर्ज : सुनो सुनो हे दुनियाँ वालों...)

सुनो सुनो हे! मानव जाति, तेरी जाति की नीच प्रवृत्ति।
स्वयं को माने महान् जाति, तो भी करती क्षुद्र प्रवृत्ति।।
महामानव व सज्जन लोग, तेरी जाति की सच्ची विभूति।
शिक्षा संस्कृति आध्यात्मिक भी, इन्हीं के द्वारा हुई प्रवृत्ति।।
अन्यथा तेरी जाति के द्वारा, नीच प्रवृत्ति की होती जागृति।
समस्त पाप व्यसन मद, तेरी जाति द्वारा पाती संवृद्धि।। (1)
क्रोध मान माया लोभ वृत्ति, तेरी जाति में अधिक होती।
इसलिए ही तेरी जाति, चारों गति में गमन करती।।

नारकी मर कर नरक न जाता, नर से वह कम पाप कमाता।
शेर भी सप्तम नरक न जाता, तू सप्तम नरक भी जाता।। (2)
धरती को तू बांट डाला, दो विदेश की सीमा बांधा।
प्रकृति का शोषण किया अन्य प्राणी का विध्वंस किया।
अन्य देशों को तूने लूटा, हत्या चोरी डाका डाला।
करोड़ों स्व-जाति को मारा, पर नारी से बलात्कार किया।। (3)
स्व-जाति को दास बनाया, सत्ता सम्पत्ति प्रसिद्धि पाया।
राजा सम्राट विजयी बना, स्वयं को महान् सिद्ध भी किया।।
युद्ध हेतु (तू) सेना बनायी, उन्हें युद्ध विद्या सिखायी।
लाठी प्रभृति (आदि) अणुबम बनाया, रथ राकेट तक बनाया।। (4)
योग्य युवक सैनिक बने, महान् काम से वंचित हुए।
कृषि व्यापार कला व सेवा आत्मविकास से वंचित हुए।।
उत्तम साधन धन व जन, समय शक्ति व पशु धन।
घातक युद्ध में हुए प्रयुक्त, स्वजाति नाशक बना ये योग।। (5)
स्वजाति को जो अधिक मारा, वीर अतिवीर पदवी धारा।
अधिक देश को जो दास बनाया, विजयी राजा पदवी पाया।।
इसी हेतु स्व जन को मारा, भाई बंधु पिता माँ को मारा।
तो भी स्व को श्रेष्ठ जताया, अन्य से स्व का गुण गँवाया।। (6)
रावण कंस व जरासंध, चंगेज खाँ व सिकंदर।
नेपोलियन व हिटलर, तेरी जाति के ये नरासुर।।
विध्वंसकारी तेरी ये जाति, सत्कार्य में यदि होती प्रवृत्ति।
इससे निवृत्ति यदि हो जाती, नरासुर नहीं महान् होती।। (7)
उदार सहिष्णु वृत्ति अपनाती, सत्य समता शान्ति को पाती।
तन मन आत्मा से पवित्र होती, वैर विरोध वृत्ति नश जाती।।
अन्याय अत्याचार न होते, पृथ्वी के खंड खंड न होते।
आक्रमण युद्ध नाश न होता, शोषक-शोषित दास न होते।। (8)
सर्वोदय साम्यवाद भी होते, आतंकवाद भय न होते।
वैश्विक कुटुम्ब साकार होता, लोकतंत्र विश्व बन्धुत्व होता।।
इसी हेतु धर्म उदय हुआ, उसका प्रचार प्रसार हुआ।
न्याय संविधान विधान बना, परिवार व समाज बना।। (9)

इनका भी तूने किया विनाश, भस्मासुर सम नरराक्षस।
अभी तो राक्षसी वृत्ति को त्यागो, उत्तम कार्य को तुम तो भजो।।
मानव से महामानव बनो, क्रमशः भगवान् भी बनो।
अतएव 'कनक' तुम्हें जगाता, तुम्हारा दुर्गुण तुम्हें बताता।। (10)

❑❑❑

हर अच्छाइयों को विकृत करता है मानव

(तर्ज : चौपाई...)

मानव सभी में ही विकृत करता, धर्म व राजनीति कानून शिक्षा का।
पर्यावरण व नीति नियमों का, संस्कृति प्रकृति खानपान का।
महापुरुष जो आदर्श पालते, सत्य शान्ति हेतु पाठ पढ़ाते।
उनके आदर्श पाठ को न मानता, संकीर्ण स्वार्थ हेतु प्रयोग करता।। (1)
धर्म के नाम पर विद्वेष फैलाता, भेदभाव कर विद्रोह करता।
कट्टर रुढ़ि व अज्ञान पालता, अंधश्रद्धा व हिंसा भी करता।। (2)
अन्याय अत्याचार शोषण करता, आक्रमण व युद्ध भी करता।
आडम्बर युक्त क्रिया भी करता, आतंकवाद व अशान्ति करता।। (3)
समतापूर्ण सहअस्तित्व निमित्त, राजनीति व कानून होता।
न्यायपूर्ण सर्वोदय के हेतु, संस्कृति सदाचार (रक्षण) निर्माण हेतु।।(4)
मानव इनका प्रयोग करता, स्वार्थ सिद्धि हेतु अन्यथा करता।
राजनीति से सत्ता हथियाता, अन्याय अत्याचार युद्ध भी करता।। (5)
धर्म की विकृति से जो कुछ करता, कमोवेशी तथा यहाँ भी करता।
कानून में न्याय अन्याय करता, राजनीति सम यहाँ भी करता।। (6)
यथाही शिक्षा से विकृति पालता, अहंकारी बनता उद्दण्ड बनता।
फैशन व्यसन आलस्य पालता, भुक्ति के बदले मुक्ति को चाहता।। (7)
पर्यावरण से जीवन जीता, तथापि उसी का विनाश करता।
वृक्ष व पशुपक्षी मछली मारता, जल थल वायु दूषित करता।। (8)
नीति नियम अनुशासन नाशता, प्रकृति से विपरीत भी करता।
पशु भी प्रकृति नियम पालता, तृणभक्षी पशु क्या मांस खाता।। (9)

मानव सर्वभक्षी दानव बनता, कीट व पशुपक्षी सर्प भी खाता।
अंगूर फलादि को विकृत करता, मद्य बनाकर नशेडी बनाता।। (10)
हर पाप व व्यसन करता, पशु की मुर्दा से शरीर सजाता।
प्रकृति शोषण खूब ही करता प्रत्युपकारी नहीं कृतघ्न बनता।। (11)
मानव इसलिए नरक जाता, सप्तम नरक का दुःख भी भोगता।
पंचम नरक तक शेर तो जाता, शेर से अधिक पाप जो करता।। (12)
मानव में जो महान् नेता, वह ही सच्चा मानव होता।
अन्य तो दानव समान होता, विकृति त्यागने से महान् बनता।। (13)
विकृति त्याग हेतु बनी ये रचना, अन्य कुछ नहीं मेरी प्रयोजना।
'कनकनन्दी' की समस्त रचना, स्व-पर हित हेतु हुई है सर्जना।। (14)

❑❑❑

मानव की विषमतापूर्ण विचित्र प्रवृत्ति

(तर्ज : चौपाई...)

अति विचित्र है मानव वृत्ति...कथनी करनी में विषम प्रवृत्ति।
तन मन काम में समता नहीं... हिताहित विवेकपूर्ण भी नहीं।।ध्रु.।।
स्व हित चाहे अहित करे...स्वास्थ्य चाहे पर तंबाकू खाये।
प्रेम भी चाहे द्वेष भी करे...शान्ति चाहे पर तनाव करे।।1।।
अन्य से सन्मान सदा ही चाहे... पर सम्माननीय कार्य न करे।
स्वयं के लिए अधिकार चाहता...स्वेच्छा से कर्तव्य न करता।।।2।।
व्यायाम के बिन स्वास्थ्य चाहता...योगासन प्राणायाम न करता।
तनाव करता अयोग्य खाता...भ्रमण व परिश्रम न करता।। 3।।
स्व अनुकूल अन्य को चाहता...स्वयं को सुयोग्य नहीं बनाता।
अन्य सुधरे सदा चाहता...नहीं स्वयं को सुधार करता।। 4।।
नीति नियम कानून बनाता...अन्य ही पाले यही चाहता।
स्वेच्छा से पालन नहीं करता...प्रयोग स्वार्थनुरूप करता।।5।।
स्व अपेक्षा की पूर्ति चाहता...परापेक्ष की उपेक्षा करता।
स्व विकास का गर्व करता...पर विकास से ईर्ष्या करता।। 6।।
श्रेष्ठपने का ढोंग करता...इसी से विपरीत काम करता।
बिन साधना के साध्य चाहता...साधन को ही महत्व देता।।7।।

भाग्य से ही सफलता चाहता...सुयोग्य पुरुषार्थ कम करता।
पढ़े हुए का ज्ञान न करता...ज्ञान अनुरूप कार्य न करता।।8।।
सदा सर्वदा सुख ही चाहता...तदनुकूल वह नहीं बनता।
दुःख के योग्य पात्र वह बनता...सुख प्राप्ति की इच्छा करता।।9।।
प्रकृति से प्रतिकूल चलता...प्रकृति को विकृत भी करता।
स्व अनुकूल प्रकृति चाहता...प्रकृति के अनुकूल न बनता।।10।
पाप खण्डने पापकरता... क्रियाकांड से ही मोक्ष चाहता।
समता शान्ति व निस्पृह वृत्ति...धर्म में इनकी नहीं प्रवृत्ति।।11।।
आदर्श महापुरुषों न माने... उनसे अपने स्वार्थ को साधे।
पूजाराधना का दिखावा करता...आदर्श के अनुरूप न चलता।।12।।
इससे मानव श्रेष्ठ न बनता...असफलताओं से त्रस्त रहता।
इन विषमताओं को जो त्यागे...सफल हो सुख व शान्ति में झूले।।13।।
तीर्थंकर राम बुद्ध आदि मानव...दोष त्याग से बने महामानव।
दोष त्याग हेतु रचना सही... 'कनक' के भाव अन्यथा नहीं।।14।।

❑❑❑

भारत के अपराधों के कारण-परिणाम और निवारणोपाय

(रागः आत्मशक्ति से ओतप्रोत...)

अपराध जो भारत में हो रहे, अनुसंधान मैं कर रहा हूँ।
कारण परिणाम व निवारण हेतु, कुछ परामर्श भी दे रहा हूँ।।
अन्याय अत्याचार व भ्रष्टाचार, बलात्कार चोरी जो हो रहे हैं।
मिलावट शोषण जमाखोरी ठगी, हत्या व दंगा भी हो रहे हैं।।
फैशन-व्यसन अश्लील का मुकता, गंदगी प्रदूषण भी बढ़ रहे हैं।
तनाव कलह व गरीबी हड़ताल, आत्महत्या रोग भी बढ़ रहे हैं।।
अनेक कारण होते हैं इसमें, अंतरंग बहिरंग कारण भेद से।
कर्म संस्कार या जिनोम अंतरंग, द्रव्य क्षेत्र काल आदि है बहिरंग।।
ईर्ष्या-द्वेष-घृणा-काम-क्रोध-मोह, तृष्णा व मद मत्सर भाव।
अंतरंग है कर्म जनित भाव, सर्व अनर्थ के हैं प्रमुख भाव।।

इसे दूर हेतु चाहिए शिक्षा, नैतिक व आध्यात्मिक पूर्ण।
सत्य समता व अहिंसा सेवा, परोपकार व प्रामाणिकता।।
त्याग सहिष्णुता व विवेक ध्यान, आध्यात्मिक चिंतन वैराग्य ज्ञान।
आत्मानुशासन व संयम दृढ़ता, संतोष क्षमा शुचि उदारता।।
महान् उद्देश्य व्यापक दृष्टिकोण, अनुभवपरक जो ज्ञान-विज्ञान।
आत्म विश्लेषण आत्म संशोधन, अपराध नाश के प्रमुख कारण।।
बाह्य कारण है सही कानून, सरकार प्रशासन समाजजन।
पुलिस परिवार परिवेष प्रियजन, भोजन वेशभूषा रहन -सहन।।
भारत के अभी दुर्भाग्य कहो या, भारतीयों की है अयोग्यता।
प्रमुख को छोड़ गौण में लगे हुए, सरकार न्यायालय नागरिक जन।।
रूढ़िवादी शिक्षा व अन्धा कानून, स्वार्थनिष्ठ राजनीति संकीर्ण धर्म।
कुभाव व्यवहार भी त्यागो सकल जन, सर्व अपराधों का होगा मूल हनन।।
इसी से ही होगा सर्वांगीण विकास, इह परलोक के सर्व कल्याण।
पतित भारत पुनः पावन होगा, अतएव 'कनक' भी करे आह्वान।

❑❑❑

''जैन धर्म की अतिविशेषतायें''

(रागः तुम दिल की धड़कन..., 2. क्या मिलिये...)

जैन धर्म की **अहिंसा प्यारी**...सर्व जीव रक्षा करने वाली।
भाव अहिंसा है समता वाली... **द्रव्य अहिंसा** है रक्षावाली।। ध्रु.।।
अनेकांत है सिद्धांत न्यारा...वस्तु स्वभाव सहित वाला।
अनन्त पक्ष सहित वाला...सापेक्ष सिद्धांत वैश्विक वाला।।
स्याद्वाद कथन करने वाला...सापेक्ष कथन सहित वाला।
सप्त भंगों से सहित वाला...अनंत सप्त भंग वाला।। (1)
अपरिग्रह है सिद्धांत प्यारा... सामाजिक न्याय सहित वाला।
अंतरंग बहिरंग परिग्रह रिक्त...पर्यावरण सुरक्षा युक्त।।
वस्तु व्यवस्था है प्राकृतिक वाली...द्रव्य की प्रकृति सहित वाली।
इसी से बनती विश्व व्यस्स्था..प्राकृतिक शाश्वतिक दशा।। (2)
कर्म सिद्धांत है संसार दशा...द्रव्य भाव नोकर्म की दशा।
संसार भ्रमण इसी से होता...कर्म रहित मोक्ष की दशा।।
मोक्षमार्ग है रत्नत्रयमय...आत्मविश्वासज्ञानवृत्तमय।
अनंत वैभव इसी से मिलता... 'कनकनन्दी' तो इसे ही चाहता।।(3)

"सम्यक्त्व एवं व्रत को दूषण नहीं करने वाले लोक व्यवहार भी ग्राह्य"

(रागः छोटी छोटी गैया..., आत्मशक्ति से ओतप्रोत)

(सर्वएव ही जैनानां, प्रमाणं लौकिको विधिः।
यत्र सम्यक्त्व हानि र्न, यत्र न व्रत दूषणम्।। य.ति.च.446
अर्श-सभी जैन धर्म अनुयायियों को वह लोक व्यवहार
मान्य है, जिससे उनको सम्यक्त्व में हानि न आती हो और न उनके व्रतों में दूषण लगता हो।
मान्य होता है वह लोक व्यवहार, जिससे न होती सम्यक्त्व हानि।
जिससे न होता है व्रत दूषण, यह कहती है श्री जिनवाणी।। ध्रु.।।

असि मसि कृषि वाणिज्य शिल्प, सेवा राजनीति तथा सर्विस।
शिक्षा कानून विवाह भोजन, रोगोपचार भी है लोक व्यवहार।। (1)

माता-पिता का विनय करना, लौकिक गुरुओं का योग्य विनय।
नैतिक कानून व्यवहार मान्य, तथाहि सामाजिक नियम मान्य।। (2)

इसी से न होती सम्यक्त्व हानि, तथा न होता है व्रतदूषण।
जब तक है तत्त्वश्रद्धान में, ज्ञान चारित्र में न लागे दूषण।।(3)

सम्यग्दर्शन है तत्त्वश्रद्धान, स्व शुद्ध आत्मा का होता श्रद्धान।
षड्द्रव्य सप्त तत्त्व सहित व, देव शास्त्र गुरु का होता श्रद्धान।। (4)

आत्म स्वभाव है सम्यग्दर्शन, अनन्तानुबंधी वह मोह रहित-(विहीन)
अष्ट मद सप्तभय से मुक्त, अष्ट अंग अष्ट गुण से युक्त।। (5)

स्व पर भेद विज्ञान सहित, स्वयं को मानता है सिद्ध स्वरूप।
सत्ता सम्पत्ति प्रसिद्धि रहित, सच्चिदानंद आत्मस्वरूप।। (6)

कर्म सहित होने पर भी, स्वयं को न माने कर्म स्वरूप।
शरीर रहित होने पर भी, स्वयं को न माने कर्म स्वरूप।। (7)

चारित्र मोहनीय के कारण, भले करे है लोक-व्यवहार।
इसे अपना स्वरूप न माने, स्वयं को माने हैं चेतनामय।। (8)

भोजन पानी घर वस्त्र को, करने पर भी यथा प्रयोग।
उसे अपना स्वरूप न माने, तथाहि माने लोक व्यवहार।। (9)

क्षायिक सम्यग्दृष्टि तीर्थंकर भी, जब वे रहते हैं गृहस्थ।
दो कल्याणक तीन ज्ञानी धारी भी, करते यथायोग्य लोक व्यवहार।। (10)

सत्य विश्वास व सत्य ज्ञान युक्त, सम्यक्चारित्र/(सदाचरण) से मिलता मोक्ष।
राग द्वेष मोह रहित मोक्ष, 'कनकनन्दी' का अंतिम लक्ष्य।। (11)

❑❑❑

"सुख प्राप्ति के उपाय"

(रागः छोटी छोटी गैया..., आत्मशक्ति से ओतप्रोत)

सुख न मिलता है सत्ता सम्पत्ति से, सुख न मिलता है प्रसिद्धि डिग्री से
सुख तो मिलता है **समता** (व) **शान्ति** से, सुख तो मिलता है पावन भाव से।।
सुख तो मिलता है क्रोध न करने से, सुख तो मिलता है मान न करने से।
सुख तो मिलता है **माया** न करने से, सुख तो मिलता है लोभ के अभाव से।।
अहिंसा सत्य व **अचौर्य शील** से, **परिग्रह त्याग** व सादा **जीवन** से।
संतोष धैर्य व **उदारभाव** से, सुख तो मिलता है **दान** व **सेवा** से।। (1)
सुख तो मिलता है **परोपकार** से, **उच्च विचार** व **महान् लक्ष्य** से।
ईर्ष्या घृणा त्याग अद्रोह भाव से, **अपेक्षा-उपेक्षा-प्रतीक्षा** रहित से।।
सुख तो मिलता है सर्वोदय से, प्रतिस्पर्द्धा रिक्त सहज भाव से।
वैश्विक कल्याण सहित भाव से, आसक्ति रहित माध्यस्थ भाव से।। (2)
दीन-हीन अहंकार से रहित, सरल सहज सहिष्णु सहित।
ऊँच नीच भेदभाव से, रहित मैत्री प्रमोद व करुणा सहित।।
निंदा अपमान कटुता रहित, वात्सल्य मृदुता विनम्र सहित।
गुणग्राही दृष्टि व दोष विरहित, सुख तो मिलता है संयम युक्त।। (3)
स्वस्थ तन मन इन्द्रिय सहित, आत्मानुभव मूढ़ता रहित।
ध्यान अध्ययन अनुभव युक्त, सुख तो मिलता है प्रज्ञा सहित।।
जो धन मान व प्रतिष्ठा सहित, जो/(वे) होते कृष्ण संवेदना रिक्त (असाम्य)।
दया दान सेवा उदार रहित, अतः वे होते हैं दुःख सहित।। (4)
आहार विहार विचार सम्यक्, जीवन संतुलित व अनुशासित।
इसी से मिलता सुख भी सम्यक्, 'कनक' का लक्ष्य परम सुख।।
धर्म में यह सब वर्णन हुआ है, अनुभव भी मैं यह सब किया है।
विज्ञान में यह सब सिद्ध हो रहा, अन्यत्र भी मैंने वर्णन किया।। (5)

❑❑❑

''बंध मोक्ष का कारण–मन''

(मन के वश में होती है स्वच्छंदता, मन को वश में करना है स्वतंत्रता)

(रागः बड़ा नटखट है...)

बड़ा नटखट अरे मानव मनुआ, भ्रमे है जहाँ व तहाँ होऽऽऽ।
क्षण में यहाँ तो क्षण में वहाँ, चंचल दामिनी जहाँ हो ऽऽऽ।। (स्थायी)।।
संकल्प विकल्प है मन की प्रवृत्ति, जल के समान है निम्न की गति।
क्रोध मान माया लोभ की प्रकृति, ईर्ष्या तृष्णा घृणा काम की विकृति।।
अनादिकालीन कर्म के संस्कार, आहार निद्रा भय संग्रह परिग्रह।
इसी के कारण होता है अस्थिर, वायु के प्रवाह यथा है नीर।।
मन के वश से जो काम करता, अयोग्य पापमय वो काम करता।
मन को वश कर जो काम करता, सुयोग्य आदर्श वो काम करता।।
सुनो दूसरों का करो मन का, यह है काम मनमानी का।
सत्य समतामय जो काम होता, उसे करने वाले सुमन होता।।
रावण कंस हिटलर आदि भी, मन के अनुसार काम करे भी।
इसी से अनर्थ काम हुए भी, हितकर बातें नहीं सुने भी।।
तीर्थंकर बुद्ध ऋषि मुनि भी, मन को वश कर काम किये ही (भी)।
महान् काम अतः उनसे हुआ, स्व पर विश्व कल्याण हुआ।।
शिक्षा संस्कृति व अनुशासन, संयम तप त्याग क्षमा धारण।
शौच व ब्रह्मचर्य मनन ध्यान, होते हैं जब हो मन दमन।।
मन को वश में जो करे मानव, वह ही बनता है महामानव।
मन के वश में जो होता मानव, वह ही होता है दुष्ट मानव।।
मन से परे, होता मानव, वह ही बनता है आप्त सर्वज्ञ।
मन ही बंध मोक्ष होता कारण, 'कनक' का लक्ष्य आत्मरमण।।

❑❑❑

निंदक संगति न कीजिए

(रागः दोहा...)

निंदक नियरे न राखिये आंगन कुटी छवाय।
सज्जन गुणग्राही ही दोषहारी की सदा संगति कीजिए।

सद्वृत्तानां गुणगणकथा, दोषवादे च मौन होइये।
स्वयं सज्जन बनिए व सज्जन संगति कीजिए।।
निंदक जो जन होता है, होता है वह दुर्जन।
दुर्जन संगति जो करे, वह भी होता दुर्जन।।
जो होता है ईर्ष्यालु, दंभी व गुण विद्वेषी।
वह ही होता है निंदक, वह पृष्ठमांसभक्षी।।
गुण-गुणी की प्रशंसा ही, प्रार्थना पूजा आराधना।
इसी से होता है प्रशस्त भाव पाप की विराधना।।
तीर्थंकर बुद्ध साधु सज्जन, ज्ञानी ध्यानी दयावंत।
संगति उनकी कीजिए, जो होते हैं शीलवन्त।।
चोर डाकू हिंसक व असत्यवादी व कुशील।
कलह प्रिय निंदक पापी, न होते संगति अनुकूल।।
मन वचन काय व कृत कारित व अनुमत सहित।
द्रव्य क्षेत्र काल भाव निमित्त से होते पाप संचित।।
वह नीति ही ग्राह्य है जिससे होता भाव निर्मल।
स्व पर हितकारी नीति को, 'कनक' करे स्वीकार।।

❑❑❑

दया ही पावन अमृत धारा

(रागः गंगा तेरा पानी अमृत...)

करुणा (दया)! तेरी धारा है पावन, सर्वत्र बहती जाए।
क्षुद्र जीव से श्रेष्ठ जीव तक, तुझसे अमृत पाए ...दया...(ध्रुव)
तेरा निर्गम स्थान है सदा, निर्मल आत्म प्रवेश
जिससे तेरी धारा पावन अमृत जीव अशेषऽऽ
तू ही पावन अमृतमय, अन्य नहीं है अमय ...करुणा...(1)
तेरी पावन धारा में, बने हैं तीर्थस्थान
उसी तीर्थ में जो स्नान करे, पाते हैं उच्च/(पुण्य) स्थान
सत्ता सम्पत्ति मात्र से कोई न, पाते उच्च/(पुण्य) स्थान ...करुणा...(2)
दान सेवा परोपकार, कोमल मधुर स्वभाव

क्षमा मार्दव आर्जव शौच, संयम तप भावऽऽ
उदार सहिष्णु संवेदना, वे हैं तीर्थ स्थान ...करुणा...(3)
मेरे तीर्थ में स्नान बिना जो, करते नाना धर्म
वे कभी न होते पावन, वे करते अधर्मऽऽ
समस्त धर्म पुण्य जननी, अन्य तो पाप कर्म/(कुधर्म) ...दया..(4)
तुझसे ही जन्म लेते, तीर्थंकर बुद्ध संत
तेरे कारण से ही बनते, मानव गुणवंत ऽऽ
तेरा अमृत 'कनकनन्दी' पीकर बना है सन्त...दया..(5)

❑❑❑

धार्मिक जन के लक्षण

(रागः वैष्णव जन...)

धार्मिक जन तो तेने कहिये, जो सम्य समता अपनाये हैं। (रे)।
भाव पवित्रता सहित सोचे, कथन व्यवहार करे हैं (रे)
मन वचन काय कृतकारित से, निर्दोषी को न सताये रे।
नवकोटि से यथाभक्ति भी, परोपकारी बने रे।।
क्रोधमान माया लोभ को त्यागे रे, इन्द्रिय संयम करे रे।
मनको अपना वश में करे हैं, हितमित प्रिय बोले रे।।
सरल सहज सादा जीवन जीए, उदार भाव धारे रे।
अपना पराया भेद न करे, वैश्विक कुटुम्ब धारे रे।।
परनिंदा पर अनादर त्यागे, गुणग्रहण ही करे रे।
मैत्री प्रमोद कृपा माध्यस्थ भी, सुयोग्य भाव धारे रे।।
आध्यत्म चिंतन सतत करे, स्वदोष को परिहारे रे।
कोमल मधुर विनम्र बने, ढोंग पाखंड न करे रे।।
ईर्ष्या प्रतिस्पर्द्धा प्रसिद्धि प्रपंच, नवकोटि से न करे रे।
पंच पाप सर्व व्यसन त्याग करे, 'कनक' धार्मिक पूरे रे।।

❑❑❑

सरल एवं कठिन

(रागः दे दी हमें आजादी..., मनहरण)

सरल होता है अन्य के दोषों को देखना, **कठिन होता** है स्वयं के दोषों को देखना।।
बाह्य वस्तु को तो आँख सहज से देखती, पर स्वयं को देखने में असमर्थ होती।
सहज है भेद-भाव करना होता जीवों में, कठिन है **भेदज्ञान** करना होता जीवों में।
स्वार्थ/(मोह) के कारण भेद-भाव सरल से होता, मोह के कारण भेदज्ञान सरल न होता।।
लोभ से स्वार्थी होना सहज ही होता, जिससे भेदभाव सरल हो जाता।
मोह से सुदृष्टि जीव सहज न होता, इसलिये भेदज्ञान सरल न होता।
सरल होता है **परोपदेश** करना, **स्वयं का सुधार** करना कठिन होता।
टार्च से प्रकाश होता अन्य के लिए, टॉर्च तो स्वयं रहता अंधेरा को लिए।।
जानकारी होना कभी सरल भी होती, अनुभूति/(अनुभव) होना अतिकठिन भी होती।
आत्मा की जानकारी होना भी सहज, आत्मा का **अनुभव** होना अतिदुर्लभ/(विरल)।।
सूर्य चंद्र में पहुँचना होता कठिन, तथाहि ज्ञान अनुभव प्राप्ति कठिन।।
रटन्त ज्ञान सरल होना संभव, यथा टेप में रिकॉर्डिंग होना संभव।।
आचरण अनुभव होना कठिन, टेप को अनुभव न होना संभव।
बढ़-चढ़कर कहना तो सरल भी होता, रिक्त चना बाजे घना समान भी होता।।
मन-वचन-काय सरल होना कठिन, यद्वा-तद्वा प्रवृत्ति तो होना सरल।।
पानी का तो **निम्नगामी** होना सरल, **ऊर्ध्वगामी** बनाना तो अतिकठिन।
निम्न प्रवृत्ति होना जीव में सरल, उन्नत वृत्ति होना अति विरल।
आगम अनुभव से मैं यह पाया, जिससे मेरा आचरण सम्यक् हुआ।
अप्रभावी हो रहा हूँ इसी के कारण, 'कनक' अनुभव से बना है सम्पन्न।।

❑❑❑

स्वयं को जानना-मानना-पाना कठिन क्यों?

(रागः तुम दिल की धड़कन...)

स्वयं को मानना स्वयं को जानना, स्वयं को पाना अति कठिन।
अनादि कालीन कर्म के कारण, यह सब होना अति कठिन।।
अनन्तकर्म आवृत्त आत्मा में, जिससे आत्मा विकृत हुआ।
अनन्तगुण सुप्त हुए हैं, जिससे स्वभाव न प्रगट हुआ।। (1)

यथा मेघाछन्न सूर्य से प्रकाश, स्पष्ट न प्रगट होता।
तथाहि कर्माछन्न आत्मा से, शुद्ध गुण न प्रगट होता।।
यथा आँख स्वयं को न देखती, तथा स्वयं को न जीव जानता।
यथा आँख बाहर देखती, तथाहि जीव बाह्य को जानता।। (2)
अनादिकालीन मोह के कारण, जीव स्वयं को न मानता है।
ज्ञानावरणीय कर्म के कारण, जीव स्वयं को न जानता है।।
चारित्र मोह से आवृत्त जीव, स्वयं में स्वयं को न पाता है।
अन्य को जानता अन्य को मानता, अन्य को प्राप्त करता है।। (3)
इसी से विपरीत प्रवृत्ति होती, जिससे संसार भ्रमता है।
चौरासी लक्ष योनि मध्य में, पंच परिवर्तन करता है।।
दर्शनमोह व अनन्तानुबंधी, कषाय के नाश होने पर।
जीव स्वयं को मानता, तथाहि स्वयं को जानता भी।। (4)
चारित्र मोह के क्रमनाश से, स्वयं को पाता जाता है।
पूर्ण नाश से पूर्ण पा जाता, जिसे मोक्ष कहा जाता है।।
स्वयं को मानता स्वयं को जानता, स्वयं को पाना ही धर्म है।
इसी हेतु ही 'कनकनन्दी' पालता संपूर्ण धर्म है।। (5)

❑❑❑

"बुद्धि (मतिज्ञान) एवं अनुभूति (श्रुतज्ञान) प्राप्ति के उपाय"

(रागः तुम दिल की धड़कन...)

अवग्रह से ईहा ईहा से आवाय... आवाय से धारणा होती है।
उत्तरोत्तर वे श्रेष्ठ क्लिष्ठ...व दुर्लभ (भी) होते हैं।।
अवग्रह है पदार्थ का प्रथम ग्रहण...ईहा है विशेष जिज्ञासा।
आवाय है निर्णय ज्ञान...धारणा है अविस्मरण मतिज्ञान।। (1)
मतिज्ञानावरण क्षयोपशम व...वीर्यान्तराय क्षयोपशम से।
अंगोपांग नाम कर्मोदय से...मतिज्ञान प्रगट होते।।
उपलब्धि उपयोग भावना...मय भी तीन भेद हैं।
कोष्ठ बीज पादानुसारी...संभिन्न श्रोतृता भेद हैं।। (2)

प्रतिभा बुद्धि मेधा प्रज्ञा...भी इसके भेद-प्रभेद है।
मति स्मृति संज्ञा चिंता..आभिनिबोधमय होता है।।
बहु बहुविध क्षिप्र निसृत..अनुक्त ध्रुवमय होता है।
एक एकविध अक्षिप्र...अनिसृत उक्त अध्रुव है।। (3)
इन्द्रिय व मन निमित्त...मतिज्ञान उत्पन्न होता है।
यह परोक्षज्ञान है...पदार्थों का ज्ञान होता है।।
लोक प्रचलन में इसे...प्रत्यक्षज्ञान कहते हैं।
यथार्थ में नहीं प्रत्यक्ष..अतः सांव्यावाहारिक कहते हैं।। (4)
इसी से परे श्रुतज्ञान जो...आत्माभिमुख होता है।
मतिज्ञान से परे प्रायोगिक...अनुभव ज्ञान मान होता है।।
श्रुतज्ञानावरण क्षयोपशम... (व) वीर्यान्तराय क्षयोपशम से।
अंगोपांग नामकर्म उदय से...यह श्रुतज्ञान होता है।। (5)
श्रुत वाचन श्रवण से...श्रुत का मतिज्ञान होता है।
इसके प्रयोग अनुभव से...भाव श्रुतज्ञान होता है।।
सम्यग्दर्शन होने से...सुश्रुतज्ञान होता है।
उपलब्धि उपयोग भावना से...श्रुतज्ञान विकास होता है।। (6)
विनय शुद्धि एकाग्र सहित...जिज्ञासा सह स्वाध्याय से।
मनन चिंतन प्रयोग अनुभव (से)... श्रुतज्ञान विकास होता है।।
ज्ञानदान निःस्वार्थ भाव से...श्रद्धा विनय से करने से।
समन्वय समीक्षा चर्चा लेखन से...श्रुतज्ञान विकास होता है।। (7)
ज्ञानी गुरु सेवा विनय बहुमान...तथाहि आज्ञा पालने से।
उनकी संगति अनुभव से भी..श्रुतज्ञान परिपक्व होता है।।
विविध विषय तथा भाषा ज्ञान से...श्रुतज्ञान व्यापक होता है।
विविध धर्म दर्शन/(ज्ञान) व...गणित विज्ञान से बढ़ता है।। (8)
अनुभव प्रयोग ज्ञान बिन...केवल रटन्त ज्ञान से।
सुफल के बिना कुफल मिले...जैसा अपच भोजन से।।
श्रुतज्ञान है महान् ज्ञान...केवलज्ञान के है कारण।
इसी हेतु ही 'कनकनन्दी'... करता है ज्ञान अर्जन।। (9)

❑❑❑

मेरा व तेरा पथ हो मोक्ष-पथ

(रागः शत शत वन्दन..., 2. आत्मशक्ति..., 3.सायोनारा)

तेरा मेरा भेदभाव भरा, यह तो राग-द्वेष का काम...2
हर जीव स्वतंत्र सम्पूर्ण, यह तो वीतराग का काम...2।। टेक।।
छोटा-बड़ा ये सब भाव होते, कर्म बंध के कारण...
साम्य भाव सदा होना, यह भाव कर्म नाश कारण...
राग-द्वेष व मोह सहित, स्वयं को श्रेष्ठ मानना है पाप...
इनसे रहित हर जीव श्रेष्ठ, ऐसा मानना सत्य निष्पाप...(1)
ईर्ष्या घृणा तृष्णा सहित करना धर्म है होता पाखंड...
ख्याति पूजा दिखावा सहित करना धर्म है होता घमंड...
सत्य समता शान्ति पावनता, यह है धर्म का सच्चा स्वरूप...
क्षमा मृदुता धैर्य सहिष्णुता, यह है धर्म का अच्छा स्वरूप।...(2)
जिस मार्ग पर चलकर तीर्थंकर, पाये मोक्ष को वह है पथ...
वह पथ ही मोक्ष का पथ है, अन्य पथ तो मोह के पथ...
सम्यक् दर्शन ज्ञान चारित्रमय, शुद्धात्मभाव ही है मोक्ष का पथ...
उसी पथ के पथिक 'कनक', अन्य पथ नहीं है मेरा-(तेरा).. पथ...(3)
कोशीवाड़ा (जैन श्वे. तेरापंथ भवन) 20/12/2013, प्रातः 6.15

❑❑❑

मुमुक्ष के लिए सतत करणीय

(रागः शत शत वन्दन..., 2.सायोनारा)

आत्मचिंतन स्मरण ध्यान सतत रूप से करणीय।
स्व गुण दोष स्वभाव का, आत्म विश्लेषण करणीय।। (स्थायी)।।
कहाँ से आया, कहाँ है जाना, किस निमित्त से क्या करना।
क्या किया हूँ, क्या करना, इसका चिंतन सदा करना।।
मैं हूँ आत्मा निगोद से आया, परिवर्तन अनन्त किया।
चारों गति में भ्रमण किया, स्व-स्वरूप को कभी न पाया।। (1)
राग-द्वेष मोह विभाव कारण, अनन्त कर्म ग्रहण किया।
जिससे संसार भ्रमण किया मोक्ष स्वरूप को कभी न पाया।।

विभाव त्याग से स्वभाव पाना, अनन्त कर्मों को नष्ट करना।
संसार भ्रमण को दूर करना, अनन्त वैभव प्राप्त करना।। (2)
इस हेतु यत्न सतत करना, प्रमाद आलस्य त्याग करना।
ध्यान अध्ययन मनन करना, अनुप्रेक्षा भी सतत करना।।
जब तक न होता केवलज्ञान, तब तक यह करणीय काम।
अन्यथा आत्म पतन होगा, गुणस्थान से नीचे गिरेगा।। (3)
छद्मस्थ काल में होता पतन, असंख्य बार भी होता पतन।
उपशम श्रेणी से भी होता पतन, संसार में होता भ्रमण।।
अभी न होता शुद्ध ध्यान, अतएव करणीय शुभ ध्यान।
शुभ ध्यान जब नहीं होगा, अशुभ ध्यान अवश्य होगा।। (4)
अतएव शुभ सतत करणीय, ध्यान अध्ययन मनन स्मरणीय।
प्रतिक्रमण व प्रत्याख्यान, अनुप्रेक्षा व मंत्र-स्मरण।।
मन वचन या लेखन से, सतत करणीय मुमुक्षु से।
पूर्वाचार्यों ने यह भी किया, मुमुक्षु जनों को प्रेरित किया।। (5)
अभावित आत्मा की भावना करो, भावित विभाव त्याग करो।
भावना से भव नाश होता, 'कनक' स्वरूप प्राप्त होगा।। (6)

(लोयरा, दिनांक 1 जनवरी 2014 प्रातः 5.05 से 6.35)

(यह कविता क्षु. सुवीक्षमती की जिज्ञासा से बनी)

❑❑❑

गृहस्थाश्रमी एवं गृहस्थों की दशा-दिशा/(समस्या)

(रागः शत शत वन्दन...)

गृह में रहकर जो श्रम करता (है)..गृहस्थाश्रमी वह आत्मकामी होता।
धर्म आधारित अर्थ काम मुख्य, मोक्ष लक्ष्य युक्त सो जन होता।। स्थायी
विवाह सहित परिवार युक्त, असि मसि कृषि वाणिज्य युक्त।
सेवा व शिल्प जीविका युक्त, सामाजिक रीति-रिवाज युक्त।।
गुणस्थान होता चतुर्थ पंचम, अविरत सम्यक्त्वी विरताविरत।
तीन व दो कषाय चौकड़ी युक्त, नव नोकषाय परिणाम युक्त।। 1
शुभ व अशुभ लेश्या सहित, आहार निद्रा भय मैथुन युक्त।

आरंभ परिग्रह उद्योग युक्त, त्रस स्थावर हिंसा से सहित।।
दान पूजा (तप) व अणुव्रत सहित, किंचित् पुण्य पाप अधिक।
गजस्नानवत् होता चारित्र, अरहट समान कार्य विचित्र।। 2
जन्म मरण हानि-लाभ युक्त, संयोग वियोग सुख-दुःख।
आकर्षण विकर्षण संक्लेश युक्त, अपेक्षा उपेक्षा प्रतीक्षा युक्त।।
इससे परम सुख न मिलता, उत्तम स्वर्ग व मोक्ष न मिलता।।
आत्म विकास परम न होता, अतएव मुमुक्षु साधु बनता।। 3
धर्म व मोक्ष पुरुषार्थ रहित, अर्थ व काम व्यापार सहित।
गृहस्थाश्रमी कोई नहीं होते, आत्मिक श्रम जो नहीं करते।।
ऐसे जन तो होते अधर्मी, मोही अज्ञानी व होते कुकर्मी।
पंच-पाप-सप्त-व्यसन सेवते, अष्टमद से सहित होते।। 4
आर्त्त रौद्र परिणामी वे होते, अन्याय अत्याचार शोषण करते।
कलह विवाद संक्लेश करते, भोग तृष्णा में आसक्त होते।।
महान् लक्ष्य से रहित होते, संकीर्ण भौतिकवादी वे होते।
कूप मण्डूक सम काम करते, गोबरिला सम काम करते।। 5
आत्म विकास हेतु जो श्रम करते, मानव जन्म को सफल करते।
इह परलोक में सुखी वे होते, 'कनक' आत्मश्रम ही भाते।। 6
(लोयरा 31 दिसंबर 2013 रात्रि में)

❑❑❑

निमंत्रण बिना होता है धर्म

आत्म संबोधन-आत्म प्रेरणा
(रागः कौन दिशा में लेकर...)

कौन दिशा में. तुझे जाना है रे! मनुआ...2
एक धर्म की डगर, एक पाप का डगर, जरा सोच तो तू...सोच तो सही
कौन दिशा में....(स्थायी)
राग द्वेष काम मद मोह मत्सर, ये हैं सब अधर्म डगर...
इसी से विपरीत भाव व्यवहार.., वे सब हैं धर्म के डगर...
ख्याति पूजा विवाह व्यापार..ये सब हैं पाप के डगर ...2
कौन दिशा में....(2)

दान दया सेवा परोपकार आदि...ये सब हैं पुण्य के डगर...
कलह निंदा विसंवाद अपवाद, चोरी बलात्कार पाप के डगर...
इसमें तो चलते बिना निमंत्रण, तो भी न होता तू शर्मसार...2
कौन दिशा में....(2)

धर्म हेतु तुझे निमंत्रण चाहिये, ये तो तेरा है दम्भाचार...
धर्म कर्म तो स्वेच्छा से होता है...त्याग पूर्वक दम्भाचार...
सम्यक् दर्शन ज्ञान आचरण..., होता स्वयं द्वारा ही प्राप्त...2
कौन दिशा में....(3)

आत्मविशुद्धि व साधना द्वारा.., परिनिर्वाण भी प्राप्त होता...
अतएव तू भी बिना निमंत्रण..., धर्म मार्ग में प्रवृत्त हो जा...
निमंत्रण से भी पाप मार्ग में..., न हो तू कभी भी प्रवृत्त...2
कौन दिशा में....(4)

विवाह आदि में निमंत्रण चाहिये, नहीं चाहिये धर्म कर्म में...
सामाजिक बंधन परे धर्म होता..बंधन न होता धर्म में...
इसलिए होते साधु अतिथि...होते हैं निमंत्रण परे...2
कौन दिशा में....(5)

साधु की भक्ति करके भक्त...पथिक होते धर्म मार्ग के...
आध्यात्म वृत्ति होती अलौकिक... जो होती है धर्म का सार...
इसी से मनुआ शान्ति (मुक्ति) मिलेगी..., 'कनक' का लक्ष्य है समयसार।।
(आत्मिकसार) कौन दिशा में....(6)

(हल्दीघाटी रात्रि विश्राम में 25 दिसंबर 2013)

❑❑❑

आध्यात्मिक कर्म सिद्धांत, मनोवैज्ञानिक चिकित्सा आदि की शोधपूर्ण कविता

समता (सामायिक) एक लाभ अनंत

समता अर्थात् शान्ति सहिष्णुता-क्षमा-धैर्य-संयम-वीतरागता
आदि से होते तन-मन आत्मा स्वस्थ्य

(चालः 1. आत्मशक्ति..., 2. शत शत वन्दन..., 3. पायो जी मैंने...)
पायोजी मैंने, समता रसायन पायो...2 सुधा रस पायो...2
इसी से होते हैं तन मन स्वस्थ्य, आदि व्याधि भी (होते) विनाश।।
समता में न होते राग-द्वेष-मोह, काम-क्रोध-मद-लोभ/(तृष्णा)
भय व चिंता उद्वेग-निंदा, उदास ईर्ष्या व घृणा क्षोभ।।
शत्रु-मित्र भेदभाव न होता, हानि-लाभ में न (होती) चिंता।
संकल्प-विकल्प-संक्लेश न होते, न होती निराशा व निंदा।।
होती है क्षमा दया सहिष्णुता, शुचिता व वीतरागता।
संयम-धैर्य-आत्मविश्वास सह, होती है स्थित चित्तता।
इसी से होती भाव की पवित्रता, होते आत्म प्रदेश स्थिर।
जिससे न होता पाप बंध, होता है पाप संवर।।
जिससे सम्पूर्ण तनाव न होते, न होते बैड हार्मोन व स्राव।
इम्यून सिस्टम सबल होने से, होते हैं रोग अभाव।।
इसी से न होते कब्ज डायरिया, कमरदर्द व शिरदर्द।
थकान अनिद्रा भूख न लगना, पेट खराब, देह दर्द।।
ब्लड प्रेशर व चक्कर आना, वजन बढ़ना या कम होना।
पसीना आना व मुँह सूखना, शरीर में जलन होना।।
खाँसी-जुकाम व कफ विकार, पित्त व वायु विकार।
शरीर मुँह से दुर्गंध आना तथाहि चर्म विकार।।
शरीर मन इन्द्रिय स्वस्थ होते, होता है आत्मा भी स्वस्थ।
ध्यान अध्ययन कर्तव्य पालन, व्यवहार होते स्वस्थ।।
समता के हेतु सात्विक आहार-विहार-विचार-ज्ञान।
प्रभु स्मरण व आत्मचिंतन, मंत्र जाप, त्याग, दान।।
फैशन-व्यसन अन्याय दुराचार, त्याग व संकीर्ण भाव।
पंथ-मत-जाति राष्ट्र भाषा परे, होना पावन भाव।।
समता की वृद्धि होने के कारण, बढ़ता ज्ञान वैराग्य।
जिससे मानव साधु बनकर, पाता है परिनिर्वाण/(परमधाम)।।
समता से जब मोक्ष भी मिलता, जो है परम स्वास्थ्य।
अन्य स्वास्थ्य तो आनुसांगिक है, 'कनक' का लक्ष्य परम स्वास्थ्य।।

मोक्ष स्वरूप है "सच्चिदानंदमय", सत्य व शिव सुंदर।
अक्षय अनंत ज्ञान दर्शन व, अनंत वीर्य अजर-अमर।।
परम औषधि परम चिकित्सा, परम योगासन व ध्यान।
समता ही सर्व दुःख निवारक, समता सम श्रेष्ठ न अन्य।।
(मोलेला दिनांक 24 दिसंबर 2014, प्रातः 6.22)

इसके विस्तृत परिज्ञान हेतु कविकृत कृति "शारीरिक-मानसिक-आध्यात्मिक स्वास्थ्य के विविध आयाम" "धर्म एवं स्वास्थ्य विज्ञान", "ध्यान का वैज्ञानिक विश्लेषण", "कर्म सिद्धांत" आदि कृतियों का अध्ययन करें।

❑❑❑

-ज्ञानामृतम्-

सेयम्बरो व आसम्बरो वा बुद्धो वा तहेव अन्नो वा।
समभाव भावियप्पा लहेइ मुक्खं न संदेहो।। -हरिभद्र

श्वेताम्बर हो, चाहे दिगंबर हो, चाहे बौद्ध हो या अन्य किसी मत का हो, जो भी समभाव में स्थित होगा, वह निःसंदेह मोक्ष को प्राप्त करेगा।

दिवसे दिवसे लक्खं देइ सुवण्णस्स खंडियं एगो।
एगो पुण सामाइयं, करेइ न पहुप्पए तस्स।।

एक व्यक्ति प्रतिदिन एक लाख स्वर्ण मुद्राओं का उदारतापूर्वक दान करता है, दूसरा व्यक्ति समत्वयोग की साधना करता है, इन दोनों में महान् कौन है? इस जिज्ञासा का समाधान करते हुए तत्त्वदर्शी मनीषियों ने कहा- जो समत्व योग-सामायिक की साधना करता है, वह महान् है।

तिव्वतवं तवमाणे जं न वि निवट्टइ जम्मकोडीहिं।
तं समभाविअचित्तो, खवेइ कम्मं खणद्धेण।।

करोड़ों वर्षों तक तपश्चरण की निरंतर साधना करने वाला जिन कर्मों को नष्ट नहीं कर पाता, उनको समभावी साधक कुछ ही क्षणों में नष्ट कर लेता है।

सामायिक विशुद्धात्मा सर्वथा घातिकर्मणः।
क्षयात्केवलमाप्नोति लोकालोक प्रकाशनम्।। हरिभद्र अष्टक प्रकरण, 30.1

सामायिक एक विशुद्ध साधना है। सामायिक में साधक की चित्तवृत्ति क्षीरसमुद्र की तरह एकदम शान्त रहती है। इसलिए वह नवीनकर्मों का बंध नहीं करता। आत्म स्वरूप में स्थित रहने के विरोधी कारण जो शेष रहे हुए हैं, उनकी वह निर्जरा कर लेता है। इसलिए आचार्य हरिभद्र सूरी ने लिखा है कि सामायिक की विशुद्ध साधना से जीव घातिकर्मों को नष्ट कर केवलज्ञान को प्राप्त कर लेता है।

'सम्' एकीभाव वर्तते। तद्यथा, संगतं घृतं संगतं तैलमित्युच्यते एकीभूतमितिगम्यते। एकत्वेन अयनं गमनं समयः, समय एव सामायिकम्। समयः प्रयोजनमस्येति विग्रह सामायिकम्। सर्वासिद्धि, 7, 21

आचार्य पूज्यपादजी ने सर्वासिद्धि में सामायिक की परिभाषा करते हुए लिखा है कि सम् उपसर्ग पूर्वक गति अर्थ वाली 'इण्' धातु से समय शब्द निष्पन्न होता है। सम् एकीभाव, अय-गमन अर्थात् एकीभाव के द्वारा बाह्य परिणति से पुनः मुड़कर आत्मा की ओर गमन करना समय है। समय का भाव सामायिक है।

समो-रागद्वेषयोरपान्तरालवर्ती मध्यस्थः, इण गतौ अयनंअयो गमनमित्यर्थः, समस्य अयः समायः-समीभूतस्य सतो मोक्षाध्वनि प्रवृत्तिः समाय एव सामायिकम्। (आवश्यक मलयगिरि वृत्ति, 854)

राग-द्वेष के कारणों में माध्यस्थ रहना सम है। माध्यस्थभाव युक्त साधक की मोक्ष के अभिमुख जो प्रवृत्ति है, वह सामायिक है।

❑❑❑

मानव जब विवेकी होगा

(रागः झिलमिल सितारों का...)

जब ये मानव विवेकी होगा, गुण दोषों की समीक्षा करेगा।
सम्मान अपमान आश्चर्य होगा, जब मानव को सही जानेगा।।

भूतकाल को जब वह देखेगा, तीर्थंकर बुद्ध को जब जानेगा।
सम्मान सहित आश्चर्य होगा, आध्यात्मिकता से प्रेरित होगा।।

आध्यात्मिकता से शिक्षा पायेगा, मानव की महानता से गौरव होगा।
स्व शक्ति का भी भान करेगा, सनम्र सत्यग्राही गुणी बनेगा।।
तथाहि साधु, संत ऋषि मुनि को, ज्ञानी विज्ञानी व गणितज्ञ को।
दानी दयालु व परोपकारी को, जानकर पायेगा प्रेरणा को।।
परंतु दुष्ट दुर्जनों क्रूरों को, आततायी भ्रष्ट चोर लूटेरों को।
आक्रमणकारी शोषणकारी को, अन्यायी दुराचारी आतंकवादी को।।
काला गोरा भेदभावी संकीर्णों को, मानवों को दास बनाने वालों को।
हत्या-बलात्कार मिश्रणकारी को, जानकर अनुभव करेगा लज्जा को।।
वर्तमान को भी जब वो जानेगा, तथाहि सम्मान आदि भी करेगा।
दिखावा मात्र से सभ्य को जानेगा, बगुला के सम उसे भी मानेगा।।
आधुनिकता व साक्षर रूप में, राक्षस सम असभ्य पायेगा।
यंत्र से चालित मानव देखेगा, संवेदनहीन रोबोट पायेगा।।
बर्बर जंगली अंदर पायेगा, अपमान दुःख शर्म को पायेगा।
मननशील तो मानव होता है, मानव से महामानव होता है।।
इसी से भिन्न तो दानव होता है, 'कनक' सम्मान गुणी को देता है।
(तुला (रात्रि विश्राम) दिनांक 8 दिसंबर 2013 रात्रि 10.17)

❑❑❑

आत्मदीप पहले परदीप अनंतर

(रागः शत शत वन्दन...)

पूर्व में आत्महित करणीय, परहित अनंतर करणीय।
आत्मदीप पूर्व वरणीय, परदीप अनन्तर भजनीय।। (1)
पूर्व जो आत्म हित नहीं करता, परहित भी न कर पाता।
जो दीपक बुझा हुआ होता (है), अन्य को प्रज्ज्वलित न कर पाता।। (2
जो स्वयं न ज्ञानी बनता, अन्य को ज्ञान न दे पाता।
जिसके पास न धन होता, अन्य को धन न दे पाता।। (3)
आत्मविश्वास से जो रहित होता, स्वयं के बारे में न सोच (जान) पातः
आत्म विश्वास व ज्ञान रहित, महान् कार्य भी न कर पाता।। (4)
स्वयं का ज्ञान व आत्मालोचन, आत्म परीक्षण व आत्म निर्णय।

स्व निर्धारण व दृढ़ प्रतिज्ञ, जिससे होते हैं महान् कार्य।। (5)
इसी के बिना न धर्म होता, इसी के बिना ध्यान न होता।
आत्म कल्याण भी नहीं होता, परिनिर्वाण भी नहीं होता।। (6)
महान् लौकिक कार्य न होता, सामाजिक सुधार काम न होता।
राष्ट्रीय विकास का काम न होता, परोपकार का काम न होता।। (7)
शोध-बोध व खोज न होते, कविता लेख व ग्रंथ न होते।
ज्ञान विज्ञान व यंत्र न होते, मंदिर महल व सेतु न होते।। (8)
आयुर्वेद गणित नृत्य संगीत, चित्र व कला वाद्य सहित।
व्यापार उद्योग कृषि व शिल्प, दर्शन शिक्षा आदि विशेष।। (9)
जो भी होते हैं महापुरुष, इन्हीं गुणों से वे होते विशेष।
समस्त विकास इसी से होते, 'कनकनन्दी' को ये सब भाते।। (10)

(तुला (रात्रि विश्राम)9 दिसंबर 2013 प्रातः 7.42)

❑❑❑

शिक्षा धर्मादि का मूल्यांकन धन से

(रागः छोटी छोटी गैया...)

भौतिकमय हर क्षेत्र हो गया (रहा), शिक्षा से लेकर धर्म तक हो गया/रहा।
मूल्यांकन धन से सब हो रहा, धन से विनियम सब हो रहा।। (1)
धन से धन द्वारा धन के लिये, शिक्षा से लेकर धर्म सब हो रहा।
नैतिक व आध्यात्मिक मूल्य भूल गया, भौतिकवादी चार्वाकमय हो रहा।। (2)
व्यापार नौकरी राजनीति कानून, सेवा प्रतिष्ठा मान व सम्मान।
महानता प्रामणिकता ज्ञान-विज्ञान, भौतिकता से होता मूल्यांकन।। (3)
शरीर धन सम्पत्ति भूमि मकान, अस्त्र-शस्त्र वस्त्र यान वाहन।
कल-कारखाना व टीवी कम्प्यूटर, सोना चांदी आदि (सभी) भौतिकमय।। (4)
हीरो हीराईन के शरीर गाना, मॉडलों के शरीर नृत्य सिनेमा।
खिलाड़ियों की सामग्री तथा खेलना, टीवी प्रसारण होते देखना।। (5)
ये सब भौतिकमय अचेतन हैं जड़, स्पर्श-रस-गंधमय सहित भार।
इसी में मानव मस्त हो रहा, चैतन्य भावना से रिक्त हो रहा।। (6)
नैतिक संवेदना व आध्यात्मिकता, दया दान सौहार्द्र त्याग शीलता।

सरल सहज नम्र क्षमाशीलता, मूल्यहीन हो रही परोपकारिता।। (7)
इसलिए मानव हो रहा संत्रस्त, व्यस्त होते हुए भी न-पाता संतोष।
नहीं पा रहा है आध्यात्मिक आनंद, भौतिकता ने नष्ट किया आत्म आनंद।। (8)
आनंद बिना जीना मृत्यु समान, आनंद ही जीव का श्रेष्ठतम गुण।
भौतिक मोह त्यागो आनंद पाओ, इसी हेतु 'कनक' का आशीष पाओ।। (9)

(कालोड़ा (हल्दीघाटी से विहार का प्रथम दिन) 20 नवंबर 2013, रात्रि 9.15)

❑❑❑

सफलता एवं असफलता के कारक

(विशेष विकास के बाधक-साधक उपाय)

(रागः शत शत वन्दन... सायोनारा...)

संकीर्ण स्वार्थी जो मानव होता, विशेष विकास नहीं कर पाता।
गृहस्थ गमला के वृक्ष सम, विशाल आकार न बन पाता। (1)
योग्य भूमि जलवायु सूर्य रश्मि, विशाल वृक्ष हेतु यथा चाहिये।
तथाहि संपूर्ण विकास के हेतु, उदार निःस्वार्थ भाव/(काम) चाहिए।। (2)
केवल लौकिक शिक्षा सत्ता सम्पत्ति, नौकरी व्यापार या राजनीति से।
सम्पूर्ण विकास न होता रुढ़ि से, संकीर्ण-कट्टर धर्म राष्ट्रवाद से।। (3)
जो नया-नया ज्ञान नहीं सीखता, जिज्ञासु गुणग्राही नहीं बनता।
स्वयं को महाज्ञानी श्रेष्ठ मानता, उसका विकास रुक जाता।। (4)
स्वयं की कमियों जो न जानता, जानकर भी उसे न दूर करता।
दूसरों के गुणों से (जो) न शिक्षा लेता, अन्य के दोषों को ही देखता।। (5)
तुच्छ उपलब्धियों का गर्व करता, अन्य की उपलब्धि से शिक्षा न लेता।
आलसी प्रमादी फैशनीं (जो) होता, व्यसन कलह से जीवन जीता।। (6)
घर जलने पर जो कुआँ खोदता, लगनशील सतर्क न होता।
तैराकी ज्ञान बिन कूप में कूदता, उसका विकास सही न होता।। (7)
सामान्य ज्ञान से जो रहित होता, व्यवहार ज्ञान से रहित होता।
नैतिक सदाचार नहीं जानता, उसका विकास भी सही न होता।। (8)
सही पद्धति सहित सूक्ष्म ज्ञान, लक्ष्य निर्धारण सह अनुशासन।
क्रमबद्ध व्यवस्थित (व) रुचि संपन्न, ईर्ष्या तृष्णा कुंठा रहित मन।। (9)

सतत पुरुषार्थी व प्रसन्न मन, गुण-दोष विज्ञानी व उदार मन।
समन्वय समता सहिष्णु जन, विशेष विकास योग्य होता सज्जन।। (10)
दीर्घ अनुभव/(बाल्यकाल) से ही जाना हूँ, महापुरुषों से यह जाना हूँ।
विभिन्न साहित्यों से यह जाना हूँ, 'कनक' सत्य तथ्य रूप जाना हूँ।। (11)

(मचीन्द दिनांक 12 दिसंबर 2013 रात्रि 9.01)

❑❑❑

क्षुद्र मानव की अनधिकार चेष्टा

(रागः 1. शत-शत वन्दन... 2. यमुना किनारे श्याम...)

प्राकृतिक सम्पदा व्यक्तिगत न होती, होती प्रकृति की सभी जीव की।
तथापि संकीर्ण-स्वार्थी मानव, अधिकार जमाता है उस पर भी।। 1
भूमि जलवायु गगन सूर्य चंद्र, प्राकृतिक हो जो भी सामग्री।
अनैतिक व अनधिकृत रूप से, कब्जा करता है उस पर भी।। 2
मानव ने किया पृथ्वी खंड-खंड, देश प्रदेश जिला नगरादि।
मेरा भूखंड तेरा भूखंड के लिए, करता है राग-द्वेष मोहादि।। 3
कब्जा करने हेतु करता आक्रमण, अतिक्रमण व युद्ध हत्यादि।
अनधिकृत कब्जा करके पुनः, करता गर्व व शोषण आदि भी।। 4
जो अधिक से अधिक करता है, स्वयं को मानता राजा महाराज भी।
चोर लुटेरे आतंकवादी हत्यारे, स्वयं को माने मानो मालिक भी।। 5
पुनः जन्म लेता संकीर्ण राष्ट्रवाद, क्षेत्रवाद आदि स्वार्थवाद भी।
उसी क्षेत्र के जल-भूसंपदा आदि को भी, करता कब्जा, न देता अन्य को भी।। 6
अखंड धरती प्रकृति आदि को भी, खंड विखंडित करता मानव।
तथाहि मानव समाज धर्म को भी, भेद्भाव से करता विखण्डन।। 7
राष्ट्र-राष्ट्र में व प्रदेश-प्रदेश में, जिला प्रखंड नगर ग्राम में।
जाति धर्म भाषा मत पंथ आदि में, भेद्भाव करके करता हिंसादि।। 8
महापुरुषों की उदार नीति को भी, नहीं मानता है स्वार्थी मानव।
वसुधैव कुटुम्ब साम्यवाद तथा, अपरिग्रह को न माने मानव।। 9
समस्त पाप फैशन व्यसनों को भी, सेवन करता है क्षुद्र मानव।
तथापि स्वयं को श्रेष्ठ मानता है, अन्य जीवों का भी करे शोषण।। 10

स्वयं जीओ और जीने दो अन्य को, जिससे तेरा भी होगा विकास।
परस्पर उपग्रहों से जीओ (हे) मानव, 'कनकनन्दी' का तुम्हें आशीष।। 11

(खमनोर 24 नवंबर 2013 रात्रि 4.22)

❑❑❑

तब ये मानव नैतिक होगा!

(रागः झिलमिल सितारों का...)

तब ये मानव नैतिक होगा, शालीन शांत जब बनेगा।
अहंकार भाव त्यागकर, हित वचनों को सही सुनेगा।। ...

ध्यान से हितकर वचन सुनकर, चिंतन कर ग्रहण करेगा।
हित-मित-प्रिय वचन बोलेगा, वचन अनुसार कार्य करेगा।।

अहितकर राय कभी न देगा, अनावश्यक बातें/(राय) नहीं कहेगा।
वाद विवाद न ढोंग करना, सरल सहज मधुर होगा।।

स्वयं की कमी को स्वयं जानेगा, आत्म-विश्लेषण स्वयं करेगा।
अन्य की कमी से शिक्षा भी लेगा, गुण ग्रहण कर दोष त्यागेगा।।

महान् उदार लक्ष्य धरेगा, लक्ष्यानुसार कार्य करेगा।
आलस्य प्रमाद भय छोड़ेगा पराजय से भी शिक्षा को लेगा।। ...

सकारात्मक सोच रखेगा, आशावादी आत्मविश्वासी होगा।
ईर्ष्या द्वेष घृणा दम्भ त्यागेगा, चोरी दगाबाजी नहीं करेगा।।

आदर्शमय स्वयं बनेगा, प्रतिस्पर्द्धा भी नहीं करेगा।
दबाव प्रलोभ से रहित होगा, स्व पर अहित नही करेगा।। ....

फैशन व्यसनों से दूर रहेगा, हिंसा झूठ से परे रहेगा।
उदार सहिष्णु भाव धरेगा, भेदभाव से दूर रहेगा।।

दान दया सेवा सहित होगा, परोपकार का भाव रखेगा।
संवेदनशील जब बनेगा, 'कनक' उसे नैतिक मानेगा।।

❑❑❑

कब ये मानव परम आदर्श बनेगा?

(रागः झिलमिल सितारों का...)

कब ये मानव नैतिक होगा, आत्मिक दृष्टि से सम्पन्न होगा।
संकीर्ण भौतिक भेदभाव परे, समता शान्ति से आगे बढ़ेगा।।
सत्ता सम्पत्ति व प्रसिद्धि परे, चैतन्यभाव का ज्ञान करेगा।
संकीर्ण पंथ मत जाति/(भाषा) परे, वैश्विक कुटुम्ब भाव धरेगा।।
काला-गोरा व धनी गरीब परे, हर जीव में मैत्री रखेगा।
संकीर्ण क्षेत्रवाद राष्ट्रीयता परे, हर मानव से प्रेम करेगा।।
छोटा-बड़ा व ऊँच-नीच से परे, सर्व जीव प्रति दया करेगा।
नर-नारी-पशु-पक्षी सभी में, समान अधिकार भाव धरेगा।।
ग्रामीण-गँवार शहरवासी सभ्य, ऐसी संकीर्णता नहीं पालेगा।
साक्षरी महान् निरक्षरी हीन, ऐसा अविवेक नहीं धरेगा।।
बुद्धि संवेदना आध्यात्मिकता को, उत्तर-उत्तर श्रेष्ठ मानेगा।
आत्मविश्वास ज्ञान आचरण द्वारा, स्वयं को आदर्श सिद्ध करेगा।।
सरल सहज व पावन बनकर, स्वयं को श्रेष्ठ सिद्ध करेगा।
धैर्य सहिष्णुता संयम क्षमा से, आत्मिक शक्ति की वृद्धि करेगा।।
मनन चिंतन व विवेक द्वारा, मानवता को प्राप्त करेगा।
मानव से महामानव बनकर, उन्नतशील प्राणी बनेगा।।
महामानव में/(से) स्वतंत्र बनकर, सच्चिदानंदमय बनेगा।
'कनकनन्दी' ऐसे मानव को, परम आदर्शमय मानेगा।

❑❑❑

"महापुरुष व (या) सफल व्यक्ति के गुण"

(रागः आत्मशक्ति से ओतप्रोत...)

महापुरुष या सफल व्यक्ति के...होते कुछ विशेष गुण।
जिससे वे महान् होते...कर पाते वे विशिष्ट काम।। ध्रु.।।
सत्ता सम्पत्ति प्रसिद्धि बल से...कोई न होते हैं महामानव।
नैतिक व आत्मिक गुणों से...होते हैं वे ये महामानव।।
महापुरुषों के होते अनेक गुण...(यथा) होते हैं वे सत्यग्राही।

पक्षपात रहित होकर...सतत होते हैं सत्यग्राही।। (1)
विनम्र सरल सहज होते...दंभ पाखंडों से होते दूर।
उदार सहिष्णु परोपकारी...संकीर्ण स्वार्थ से होते हैं दूर।।
आत्मानुशासी संयमी होते...स्वावलम्बी व समयानुबद्ध।
सेवाभावी व्यापक दृष्टि...महान् लक्ष्य से होते सन्नद्ध।। (2)
एकाग्रमना दृढ़ निश्चयी..सत्य जिज्ञासु कर्तव्यशील।
हानि लाभ से होते अविचल.. सतत होते प्रयत्नशील।।
अविचल होते निंदा प्रशंसा से...सतत होते हैं शिक्षाशील।
काहूँ न वैरी काहू न रागी...वैश्विक कुटुम्बी उदारशील।। (3)
रूढ़ि परम्परा संकीर्णता व ...अंधविश्वास से होते वे दूर।
सत्य समता शान्ति के साधक...क्रूर कट्टरता से होते वे दूर।।
उनमें होता आत्मिक बल...सत् साहस व धैर्य गुण।
ऐसे गुण गुणी के आदर से... 'कनक' करे सदा सम्मान।। (4)

❑❑❑

कितना विवश (गुलाम) है मानव?

(रागः क्या मिलिये ऐसे लोगों...)

कितना विवश/(गुलाम) है यह मानव,
कर्म इन्द्रिय व मन-तन का।
जन्म से लेकर मरण तक, गुलामी से जीवन जीने का ।। (1)
कर्म से विवश हो जन्म लेता है, रोग बुढ़ापा व मरण भी।
भूख प्यास सर्दी गरमी सहता, दुःख शोक दारिद्र अपमान भी।।
क्रोध मान माया लोभ मोह/(काम), भय काम का होता विवश है।
इसी के कारण संतप्त होता है, करता अन्याय अत्याचार है। (2)
वाद विवाद व कलह करता है, आतंकवाद भ्रष्टाचार है।
शोषण मिलावट चोरी भी करता है, अन्य को मारता मारता स्वयं को भी।।
इन्द्रियों के गुलाम बनकर भी, करता फैशन-व्यसन अश्लील।
काम भोग विलासिता करता, परस्त्री गमन वेश्यारमण भी।। (3)
मन के अनुसार नाचता रहता, मनमानी काम करता भी।

इन्द्रिय भोग हेतु मन होता चंचल, चंचल मन से इन्द्रिय भोग भी।।
तन के कारण भूख-प्यास सहता, सहता है सर्दी-गर्मी भी।
शरीर सुख का गुलाम बनकर (भी), करता है विभिन्न पाप भी।। (4)
इन सब कारण परिश्रम करता, पढ़ाई व्यापार नौकरी भी।
विवाह करता बच्चा भी पालता, बनता सभी का गुलाम भी।।
जिसने गुलामी को त्याग किया, वह करता आत्मकल्याण है।
वह बनता है त्रिलोक का स्वामी, अनन्त आत्म-वैभव का स्वामी।। (5)
जो गुलामी का त्याग न करता, पाप अनन्त दुःख संताप है।
चतुर्गति में भ्रमण करता, जो न करता आत्म-कल्याण है।।
तथापि आत्म-कल्याण न करता, जिससे बने मालिक है।
राग-द्वेष-मोह/(गुलामी) त्याग हेतु, 'कनक' करे प्रयास है। (6)

❑❑❑

मानव की दोष प्रवृति के कारण एवं निवारणोपाय

(रागः 1. सुनो सुनो हे दुनिया वालों...,2. कहाँ गये चक्री....)
सुनो मानव! तुम्हें बताऊँ, तुम्हारी विचित्र/(विकृत) प्रवृत्ति।
जिसे जानकर तुम करो हे! सच्ची व अच्छी प्रवृत्ति।। (1)
इसके लिए अनेक कारण मुख्य अंतरंग व बाह्य हैं।
अंतरंग है प्रमुख कारण, गौण कारण ब्राह्य है।। (2)
द्रव्य-भाव-नोकर्म होते हैं, अंतरंग के कारण।
द्रव्य-क्षेत्र-काल आदि होते हैं बहिरंग कारण।। (3)
पूर्वभवों के संचितकर्म/(संस्कार) होते हैं द्रव्य कर्म।
उसके उदय होने पर, होते हैं भाव कर्म।। (4)
क्रोध मान माया लोभ मोह काम है भाव कर्म।
भाव कर्म से प्रेरित होकर, होते हैं बाह्य कर्म।। (5)
शरीर बनता नोकर्म से, जो है इन्द्रिय आधार।
विचित्र प्रवृत्ति के हेतु, ये हैं मूल आधार।। (6)
इन्हीं कारणों से हे! मानव, तू करता पापाचार।
ज्ञात-अज्ञात विवश होकर करता है तू पापाचार।। (7)

हिंसा झूठ चोरी कुशील परिग्रह बलात्कार।
फैशन-व्यसन अष्ट-मद, ढोंग व मिथ्याचार।। (8)
ठगी मिलावट कलह, विसंवाद व भ्रष्टाचार।
अंधविश्वास व निंदा चुगली, ईर्ष्यादि पापाचार।। (9)
पापाचार से निवृत्ति हेतु ही, ध्यान-अध्ययन-तप है।
दान-दया-परोपकार व संयम-त्याग-व्रत है।। (10)
शिक्षा-संस्कार-सदाचार व नीति-नियम-संविधान है।
न्याय-राजनीति-अर्थशास्त्र व सामाजिक प्रतिबंध है।। (11)
दोष होने पर पश्चात्ताप व आलोचना प्रायश्चित है।
यह है आध्यात्मिक विधान, जो कि सर्वोत्तम है।। (12)
गौण विधान है न्याय द्वारा, दण्ड को प्राप्त करना।
मनोवैज्ञानिक पद्धति से भी, दोषों को दूर करना।। (13)
अशुद्ध भाव से दोष होते हैं, शुद्ध से होते दूर।
भाव को शुद्ध करने हेतु, तू करो हे! प्रयत्नाचार।। (14)
भाव शुद्ध बिना बाह्य धर्म व शिक्षा नियम कानून।
दोष दूर नहीं होता है, प्रकाश बिन यथा तम।। (15)
गुण दोष को जानो-मानो-करो दोष निवारण।
इसी हेतु ही 'कनकनन्दी', किया है यह वर्णन।। (16)

❑❑❑

"दोष निवृत्ति एवं सत् प्रवृत्ति के कारण"

(पश्चात्ताप एवं उत्तम क्षमा प्रारंभ होत है स्वयं से)
आंतरिक पीड़ा प्रायश्चित्त आदि से होती है दोषों की निवृत्ति एवं गुणों में प्रवृत्ति)
प्रसव पीड़ा होती है यथा प्रसव के पहले।
अन्तः (आंतरिक) पीड़ा होती है तथा (है) दोष दूर करने के पहले।। ध्रु.।।
जो कोमल स्वभावी व गुणग्राही होते हैं।
स्व-दोषो के कारण वे पश्चात्तापी होते हैं।।
जो कठोर क्रूर व हठग्राही होते हैं।
स्व दोषों के कारण वे पश्चात्ताप न करते हैं।। (1)

यथा रावण कंस व जरासंध हिटलर।
पश्चात्ताप के द्वारा न किये वे दोष दूर।।
अशोक वाल्मिकी अंगुलीमाल तथाहि दृढ़प्रहारी।
पश्चात्ताप के द्वारा वे बने स्वदोष परिहारी।। (2)
ताप ताड़न गलन से स्वर्ण पाषाण होता शुद्ध।
पश्चात्ताप के कारण दोषी हो जाता है शुद्ध।।
अंधपाषाण यथा नहीं होता कभी शुद्ध।
तथाहि कठोर क्रूर नहीं होता दोषों से शुद्ध।। (3)
जो दयालु परोपकारी गुणग्राही होते सज्जन।
दोष होने पर वे/(जो) चाहते दोष परिमार्जन।
स्व-दोष के कारण वे पश्चात्ताप बहुत करते।
पीड़ित होते अन्तःकरण से स्वयं को दोषी मानते।। (4)
आत्मविश्लेषण करते गुरु को दोष बताते।
प्रायश्चित्त करते स्वदोष को दूर वे करते।।
क्षमादान करते सभी को क्षमा मांगते भी सभी से।
मैत्री प्रमोद कारुण्य माध्यस्थ से पावन भाव सभी से।। (5)
दोष दूर करके आत्मसंतोष को वे पाते।
पुनः पूर्वोक्त दोष को पुनरावृत्ति न करते।।
धर्म कानून प्रायश्चित्त व मनोविज्ञान में पढ़ा हूँ।
बाल्यकाल से अभी तक मैं अनेक अनुभव किया हूँ।। (6)
उसी पाप के कारण बहुत वे दुःखी।
इसी के विपरीत जो कठोर क्रूर दुर्जन।
स्व दोष को न मानते न करते परिमार्जन।।
उसी पाप के कारण बहुत वे दुःखी होते।
इह परभव में वे अनेक दुःखों को पाते।। (7)
कर्म संस्कार के कारण दोष होना संभव है।
दोष जो दूर करते वे ही सच्चे मानव हैं।
दोष जो दूर कर लेते वे बन जाते भगवान् (हैं)।
न दोष दूर करते वे ही पक्के हैवान (हैं)।। (8)

स्व दोष दूर करके मानव बनो भगवान्।
इसी कार्य के हेतु ही 'कनक' सदा प्रयत्नवान्।। (9)
उक्त चंः- जीवे प्रमाद जनिताः प्रचुराः प्रदोषाः
यस्मात् प्रतिक्रमणतः प्रलयं प्रयान्ति।
तस्मात् तदर्थ ममलं मुनि बोधनार्थं,
वक्ष्ये विचित्र भव कर्म विशोधनार्थम्।। (1)
पापिष्ठेन दुरात्मना जड़धिया मायाविना लोभिना,
रागद्वेष मलीमसेन मनसा दुष्कर्म यन्निर्मितम्।
त्रैलोक्याधिपते जिनेन्द्र! भवतः श्री पाद मूलेऽधुना,
निन्दा पूर्वमहं जहामि सततं वर्वर्तिषु सत्पथे।। (2)
खम्मामि सव्व जीवाणं सव्वे जीवा खमंतु मे।
मित्ती में सव्व भूदेसु वैरं मज्झं ण केणवि ।। (3)
राग-बन्ध पदोसं च हरिसं दीण भावयं।
उस्सुगत्तं भयं सोगं रदि मरदिं च वोस्सरे।। (4)
हा! दुट्ठ कयं हा! दुट्ठ चिंतियं भासियं च हा दुट्ठं।
दुटठ् अंतो-अंतो डज्झमि पच्छत्तावेण वेदंतो।। (5)
दव्वे खेत्ते काले भावे च कदावराह सोहणयं।
णिंदण गरहण जुत्तो मण वच कायेण पड़िक्कमणं।। (6) (प्रतिक्रमण)

❑❑❑

स्व-पर हित हेतु स्व पर गुण दोष ज्ञातव्य

(राग-दोहा)

बुरा ही देखने जो चला, बुरा ही देखता सही।
अच्छा ही देखने जो चला, समीक्षा/(परीक्षा) करता सही।। (1)

बुरा ही देखने जो चला, बुरा ही होता वो सही।
अच्छा ही देखने जो चला, गुणज्ञ होता वो सही।। (2)

काला चश्मा धारक सम, बुरा जो व्यक्ति होय।
अच्छा बुरा सब एक सा, लगे ऐसा दुर्गुण होय।। (3)

(सही)/पारदर्शी चश्मा धारक सम, गुणज्ञ व्यक्ति होय।
जो जैसा हो वह वैसा देखे, बुरा या अच्छा/(जो) होय।। (4)
बुरा व्यक्ति सदा अन्य को, बुरा ही सदा माने।
अवचेतन संतुष्टि से, स्वयं को ही अच्छा माने।। (5)
गुणज्ञ व्यक्ति व गुणग्राही, जो होता सो सज्जन।
स्व-पर गुणों को सो गुण माने, कुगुण को कुगुण।। (6)
बुरे भले दोनों जीव होते, संसार के मांहिं।
बुरे व्यक्ति बुरे गुणों से, बचे सो सज्जन होय।। (7)
स्व गुणों को भी गुणज्ञ, गुण ही मानेगा सही।
स्व गुणों की वृद्धि से, महान् बन् जग मांहि।। (8)
स्व गुणों को भी कुगुण, मानेगा सही नहीं।
ऐसा यदि होयेगा तो, सुगुण विकास न होय।। (9)
हीन भावना भी आयेगी, पुरुषार्थ होगा हीन।
उत्साह साहस धैर्य भी, हो जायेंगे विहीन।। (10)
स्वाभिमान न आयेगा, नहीं होगा है विकास।
आत्मविश्वास भी न होगा, न होगा आत्मविकास।। (11)
आत्म चिंतन मनन स्मरण, नहीं होगा आत्मज्ञान।
सोऽहं भाव भी नहीं होगा, नहीं होगा आत्मध्यान।। (12)
इसी से धर्म का होगा लोप, होगा आध्यात्म लोप।
मोक्ष मार्ग का भी होगा लोप, होगा मोक्ष का भी लोप।। (13)
अतएव बुरा भाव से, अन्य के बुरा न देखो।
स्व पर हित हेतु स्व पर, गुण दोष भी देखो।। (14)
यह है मनोविज्ञान नैतिक, शिक्षा व आध्यात्मिक।
इसे ही 'कनक' माने, विकास हेतु आध्यात्मिक।। (15)

❑❑❑

सत्य कटु नहीं, सत्य है सच्चिदानंद

(राग-दोहा)

सत्य न होता कटु है, सत्य है शिवसुंदर।
सत्य सम न कोई होता, सत्य है परमेश्वर।। (1)

अस्तित्ववान् जो होता सत्य, असत्य न सत्तावान्।
जीव पुद्गल धर्म अधर्म, आकाश काल सत्तावान्।। (2)
सत्य है **वस्तुस्वरूप**, सत्य है **उत्तम धर्म।**
सत्य है **अणु-महाव्रत**, भाषा समितिमय सत्य।। (3)
हितमित प्रियं वचन, होता है वाचनिक सत्य।
औरन को शीतल करे, आप हूँ शीतल होय।। (4)
हितकर कटु वचन भी, गुरु के हितकर होय।
रोगहर कटु औषधि भी, रोगी को उपादेय होय।। (5)
लालित्य सुमधुर वचन भी, वेश्या के योग्य न होय।
चोर ठगी लुटेरों के, मीठे वचन भी कटु होय।। (6)
परम सत्य है वस्तु स्वरूप, सच्चिदानंदमय होय।
उसके वर्णन स्वरूप आगम, वचन भी सत्य होय।। (7)
लौकिक व्यवहार स्वरूप नीति, नियम कानून होय।
उसके वर्णन स्वरूप, पुस्तक वचन भी सत्य होय।।
आध्यात्मिक न है सत्य बिना, न है लौकिक व्यवहार।
ज्ञान विज्ञान सभ्यता संस्कृति, गणित इतिहास समाचार।।
इसी से विपरीत है असत्य, असत्य है मिथ्या भ्रम।
सच्चिदानंद बनने हेतु, 'कनक' पाले हर धर्म।।

❑❑❑

कर्म सिद्धांत, गुणस्थान व्यवहार मनोविज्ञान, कानून एवं मैनेजमेंट गुर से युक्त शोधपूर्ण कविता

"हर क्षेत्र में भाव की मुख्यता क्यों?

(भाव से ही पाप-दुःख पुण्य-सांसारिक सुख, मोक्ष-आत्मसुख)

भाव से उत्पन्न होता विचार, विचार से होता है व्यवहार।
खाना पीना व कथन भी होता, कर्म बंध व मोक्ष भी होता।। (1)
वस्तु स्वभावमय होता भाव वर्तमान पर्यायगत भाव।
भाव है अशुभ-शुभ व शुद्ध, पाप पुण्य व सिद्ध स्वभाव।। (2)

अशुभ है पाप जिससे पतन, शुभ है पुण्य जिससे उत्थान।
शुद्ध (है) इससे परे श्रेष्ठ-ज्येष्ठ, जिससे मिलता अनन्त सुख।। (3)
अशुभ भाव है क्रोध मान माया, लोभ मोह काम विकारमय।
इसी से उत्पन्न होते अशुभ कर्म, पंच पाप व फैशन-व्यसन।। (4)
अन्याय अत्याचार व दुराचार, शोषण मिलावट व भ्रष्टाचार।
आक्रमण युद्ध व लूट व हत्या, आतंकवाद चोरी व बलात्कार।।(5)
सनम्र सत्यग्राही विवेक सह/(युक्त), उदार सहिष्णु संवेदनशील।
मैत्री प्रमोद करुणा साम्य गुण ग्रहण युक्त भाव से भाव।। (6)
दान दया सेवा शुभ के काम, परोपकार व अद्रोह काम।
पंच पाप-सप्त व्यसन त्याग, स्व पर उपकारी वचन-काम।। (7)
शुभ भाव से नहीं/(असंभव) अशुभ काम, अन्याय अत्याचार दुष्टता काम।
शोषण मिलावट व भ्रष्टाचार, ईर्ष्या द्वेष घृणा व व्यभिचार।। (8)
मोह क्षोभ रहित है शुद्ध भाव, सत्य समतामय पावन भाव।
अनंत ज्ञान दर्शन सुख स्वभाव, शुभाशुभ रहित विमुक्त भाव।। (9)
अतएव भाव ही होता प्रधान, इसी से ही होते कार्य उत्पन्न।
शुभ व शुद्ध भाव करणीय, 'कनकनन्दी' को यह वरणीय।। (10)

❑❑❑

"भाव से भाग्य एवं भावी निर्माण"

(भाव ही पाप-पुण्य एवं मोक्ष)

(कल्पवृक्ष-कामधेनु-चिन्तामणि-शाल्मली-वृक्ष-अमृत है भाव)
(रागः 1. तेरे प्यार का आसरा..., 2. चौपाई..., 3. नरेंद्र छन्द...,)
भाव के विश्व स्वरूप को जानो...अशुभ-शुभ-शुद्ध पहचानो।
अशुभ भाव है पाप व दुःख...शुभ शुद्ध है पुण्य व मोक्ष।।ध्रु.।।
भाव से भावी उत्पन्न होता...भाव से भाग्य निर्माण होता।
भाव से स्वर्ग मोक्ष मिलते...जैसा भाव वैसा ही होते।।
अशुभ भाव है नरक तिर्यंच...रोग शोक व दुःख संताप।
विष शत्रु व अस्त्र-शस्त्र...कलह विवाद शुद्ध विनाश।। (1)

क्रोध मान माया लोभ व मोह...ईर्ष्या द्वेष घृणा कामुक भाव।
हिंसा झूठ व कुशील परिग्रह...चोरी व्यसन फैशन द्रोह।।
निंदा चुगली अपमान भय...शोषण मिलावट आतंकवाद।
तनाव क्षोभ (व) भ्रष्टाचार आदि...अशुभ भाव है विपरीत बुद्धि।। (2)
शुभ है कामधेनु कल्पवृक्ष...चिंतामणि व मंत्र व तंत्र।।
दिव्य औषधि व रसायन कल्प...प्रसाद वरदान आशीर्वाद।।
दान दया सेवा पर उपकार...सरल सहज व मृदु व्यवहार।
उदार प्रेम व नम्र व्यवहार...अहिंसा सत्य सुशील सदाचार।। (3)
शालीन शान्त मधुर व्यवहार...कोमल स्वभाव संवेदनाशील।
भेद-भाव रहित विश्व हितकर...शुभभाव के हैं परिकर।।
शुद्ध भाव है आत्मस्वरूप...सच्चिदानंदमय अध्यात्म रूप।
सत्य शिव सुंदर अमृतमय...अजर अमर व विज्ञान मय।। (4)
तन मन इन्द्रिय रूप रहित...द्रव्य भाव नोकर्म से रहित।
संकल्प विकल्प क्षोभ रहित...स्वतंत्र केवल निज स्वरूप।।
अतएव जीव स्वयं का कर्ता...स्व निर्माता स्वयं का भोक्ता।
आत्मविश्वास ज्ञान चारित्र द्वारा ...स्वर्ग मोक्ष सुख पाता है सारा

('कनकनन्दी' हेतु भाव सहारा)

❑❑❑

"अशुभ त्यागो शुभ से शुद्ध बनो"

(रागः चलो दिलदार चलो...)

चलो दिलदार चलो दया दान सेवा करो,
स्वार्थ लोभ मोह छोड़ो उदार भाव धरो।
साधु साध्वी वृद्धजन पशु पक्षी रोगी जन,
आहार औषधि से यथायोग्य सेवा करो।। (1)
सदाचार नीति पालो शोषण ठगी छोड़ो,
परनिंदा ईर्ष्या छोड़ो विनम्र भाव धरो।
तन मन स्वस्थ करो प्राणायाम योग करो,
भ्रमण नित्य करो प्रमाद दूर करो।। (2)

मद्य मांस द्युत छोड़ो फैशन दंभ छोड़ो,
सादा जीवन जीओ उच्च विचार करो।
अध्ययन ध्यान करो संकीर्ण भाव छोड़ो,
कृतज्ञ भाव धरो घृणा विद्वेष छोड़ो।। (3)
सत्य तथ्य को जानो गुणग्राही नम्र बनो,
दीर्घदर्शी प्राज्ञ बनो सरल भाव धरो।
सौम्य शान्त गुणी बनो अनुशासी शुचि बनो,
हित मित प्रिय बोलो सत्यग्राही सदा बनो।। (4)
आत्मा परमात्मा जानो आत्मविशुद्धि करो,
संयम भाव धरो परिग्रह भोग छोड़ो।
गुणस्थान पार करो आत्मतत्त्व को वरो,
'कनक' नित्य चाहे शुद्ध स्वरूप वरो।। (5)

❑❑❑

विश्व कल्याण

(विश्व के हर जीव चैतन्य दृष्टि से एक समान)

(रागः हिन्द देश के निवासी...)

विश्व के हर जीव, चैतन्य हैं।
गति जाति लिंग भेद, चाहे अनेक हैं।
कर्म से गति (जाति) आदि, भेद भाव होते हैं।
कर्म से निरपेक्ष, शुद्ध बुद्ध (भी) होते हैं।।
जीवों (हर जीव) का विकास, निगोद से है होता।
शुद्ध होने के पूर्व, नाना रूप है पाता।।
बहुरूपिया यथा, नाना रूप है लेता।
रङ्क व राव पशु, स्वांग रूप रूप है लेता।।
तथा ही गति आदि, स्वांग है होता।।
चैतन्य स्वरूप तो, निज रूप है होता।।
चैतन्य स्वरूप से, हर जीव सम है।
क्षुद्र से शुद्ध तक, द्रव्य से एक है।।

धार्मिक पंथ-मत, राष्ट्रीय भेद-भाव।
भाषा व राजनीति, बाह्य है व्यवहार।।
काला व गोरा भेद, चर्म का बाह्य भेद।
जीव तो चिन्मय, चर्म तो जड़ भेद।।
धनी व गरीब भी, जड़ के हीनाधिक।
चेतना स्वरूप से, नहीं है हीनाधिक।।
परम साम्यवाद, जहाँ न कोई वाद।
सच्चिदानंद रूप, कनक शुद्ध रूप।।

❑❑❑

व्यक्ति राष्ट्र एवं विश्व के उत्थान पतन के कारक

(व्यक्तित्व पर आधारित है व्यक्ति राष्ट्र एवं विश्व के उत्थान-पतन)

(रागः सुनो सुनो हे दुनिया वालों...)

सुनों सुनों हे! देशवासियों
राष्ट्र विकास/(उत्थान) की सच्ची कहानी।
जिसे सुनकर तुम रचोगे...
देश निर्माण की नई कहानी। (टेक)
उत्थान पतन भाव से होता-भावानुसार भाग्य/(भावी) बनता।
उच्च भाव से उत्थान होता-नीच भाव से पतन होता।।
बीजानुसार वृक्ष बनता-मृदादि बाह्य कारक होता।
वट बीज से विशाल वृक्ष-सरसों से छोटा वृक्ष बनता।।
भाव से कर्म आस्रव होता-कर्म से भाग्य निर्माण होता।
अच्छे भाव से सुभाग्य होता-खोटे भाव से दुर्भाग्य होता।।
सुभाग्य विकास कारक होता-दुर्भाग्य विनाश कारण होता।
कारण-कार्य जनक होता-सुफल-कुफल कर्त्ता भोगता।।
अच्छे नागरिक तुम बनोगे-राष्ट्र निर्माण स्वतः ही होगा।
खोटे नागरिक तुम बनोगे-राष्ट्र पतन स्वयं ही होगा।।
व्यक्तित्व तुम्हारा हो गया खोटा-जिससे लगा है देश को बट्टा।

नैतिक पतन तुम्हारा हुआ-बंटाढार देश का हुआ।।
तुम्हारा भाव तो खोटा-छोटा पढ़ाई तुम्हारी तोता रट्टा।
अकल बिना करके नकल-नीली लोमड़ी सा चाल-ढाल।।
पाश्चात्य अंधभक्त बने हो-ज्ञान विज्ञान से रिक्त बने हो।
भ्रष्टाचार से विकास तेरा-परजीवी सम जीवन तेरा।।
अश्लील-तुच्छ नाच गान-जिससे बने हो बोल्ड तुम।
अटपटा चटपटा कार्यक्रम जिससे बने हो सुपरमैन।।
झगड़ा गाली अश्लील वेष-जिससे बना बिग बॉस।
क्रिकेट तुम्हारी राष्ट्रीय चिंता-कृषक करे है आत्महत्या।।
हिट फ्लॉप तेरा सिनेमा करे-आचरण तेरा चरण तले।
व्यक्तित्व निर्माण करता दर्जी-व्यक्तित्व तुम्हारा होता फर्जी।।
टीवी तुम्हारा सच्चा गुरु-पाप कार्य के शिक्षा गुरु।
इसी से सीखो फैशन-व्यसन-हत्या-बलात्कार चोरी हरण।।
धन ही तेरा धर्म व कर्म-धन के लिए करो है धर्म।
आडम्बर व मनोरंजन-होता नहीं है मनमंजन।।
भाषा भी तेरी गुलामी भाषा-माता विहीन तुम्हारी भाषा।
संविधान व कानून तेरा-विदेशियों का जीर्ण पिटारा।।
विज्ञान तक बना विदेशी-तथाहि खान पान विदेशी।
बहुरूपीया सम तुम्हारा रूप-अध्यात्म विहीन विकृत रूप।।
इसी से तुम्हारा विनाश होता-आत्मिक विकास कुंद होता।
सर्वोदय तेरा न हो पाता-घुण लगा बीज वृक्ष न होता।।
आध्यात्मक में होती अनंत सीमा-भौतिक परे अनंत सीमा/(गुण गरिमा)।
आत्मिक/(अनंत) विकास जब है होता-भौतिक विकास सहज (ही) होता।।
आत्म विकास हेतु करो है यत्न-सत्य न्याय से करो प्रयत्न।
राग द्वेष मोह तृष्णा छोड़ो-चारों पुरुषार्थ सम्यक् पालो।।
इसी से बना था देश महान्-विश्वगुरुत्व में हुआ सन्मान।
सर्वोदय से बना महान्-आध्यात्म सहित ज्ञान-विज्ञान।।
पूर्ण गौरव को जागृत करो-वर्तमान में यत्न तू करो।
आत्म विकास को प्राप्त करो तुम-'कनक' की आशा पूर्ण करो तुम।।

विश्व मानव भी ऐसा ही करो-विश्व कल्याण की भावना धरो।
जिससे वैश्विक विकास होगा-विषमतामय कष्ट न होगा।।

❑❑❑

विश्व कल्याण के लिए भौतिकता से श्रेष्ठ आध्यात्मिकता

(भौतिकता से कम विकास, अधिक विनाश तो आध्यात्मिकता से अनंत विकास)

(रागः चौपाई)

भौतिक विकास सीमित होता-आत्मिक विकास अनंत होता।
इहलोक तक भौतिक जानो-मोक्ष तक है आत्मिक मानो।। (टेक)।
तन मन धन भौतिक होता-आत्मिक इसे परे होता।
जड़मय सर्व भौतिक होता-सच्चिदानंद आत्मिक होता।।
अष्टकर्म भी भौतिक होते-संसार भ्रमण के कारण होते।
भौतिक प्रति जो ममत्व होता-उसी से कर्मों का बंधन होता।।
अणु से विश्व/(ब्रह्माण्ड) तक होता भौतिक...मिट्टी से रत्न तक सर्व भौतिक।
धनधान्य आदि सर्व भौतिक-वैज्ञानिक यंत्र आदि भौतिक।।
इसे जो अपना रूप मानता-उसी के लिए यत्न करता।
उसी के विकास विनाश द्वारा-अपना ही होता जो मानता।।
वह होता है भौतिकवादी-चार्वाक अनुयायी लौकिकवादी।
आत्मतत्त्व शून्य मिथ्यावादी-नास्तिक दृष्टि संकीर्णवादी।
भौतिक अर्जन संरक्षण हेतु-न्याय अन्याय भी कार्य करता।
व्यापार शोषण मिलावट तथा भ्रष्टाचार चोरी आदि करता।।
विनिवेश तथा उपनिवेश-आक्रमण युद्ध लूट करता।
पशु से लेकर मनुष्य तक को-गुलाम बनाकर राज करता।।
इसी हेतु हुए लाखों भी युद्ध-प्राचीनकाल से अभी तक में।
भरत बाहुबली से लेकर राजा- महाराजा चक्री तक में।।
महाभारत व सिकंदर तथा-चंगेजखाँ से अकबर तक।
स्पार्टा युद्ध उपनिवेशवाद-सबके कारण भौतिकवाद।।
दो विश्वयुद्ध या बाजारवाद-सबके जनक है भौतिकवाद।

शिक्षा राजनीति कानून धर्म में-घुसपैठ किया है भौतिकवाद।।
इससे परे है आत्म विकास-आत्म केंद्रित होता विकास।
भौतिक से भी अनंत गुणा-आत्मिक विकास सर्वज्ञ जाना।।
अनंत आत्म सुख के हेतु-लक्ष्य भी होता है तदनुकूल।
तदनुकूल भी पुरुषार्थ होता-भौतिकवाद दूर हो जाता।।
भौतिकवाद दूर होने से-उसके दोष हो जाते दूर।
इसलिए तो आत्मपुरुष-भौतिकवाद से होते दूर।।
ये ही बनते तीर्थंकर बुद्ध-ऋषि मुनि साधु संत प्रवर।
दिव्यज्ञान सुख प्राप्त कर-विश्व को देते ज्ञान भंडार/(अमर)।।
ऐसे ही व्यक्ति होते पूजित-मानव जाति के पथदर्शक।
भौतिकवादी नेता सेठ आदि-न होते पूज्य पथदर्शक।।
आत्म विकास के कारण जानो-सत्य समता शांति को मानो।
अहिंसा अचौर्य ब्रह्मचर्य गुण-निर्मल भावना उदार गुण।।
सर्व जीव में मित्रता भाव-आत्मविश्वास व आत्मविज्ञान।
धैर्य सहिष्णुता आत्मचिंतन-अनासक्ति भाव आत्म रमण।।
धर्म के नाम जो हुए युद्धादि-उसमें नहीं है आध्यात्मवाद।
वह तो है धर्म उन्माद-संकीर्ण स्वार्थ भौतिकवाद।।
विश्व इतिहास व वर्तमान में-जो कुछ पाया लिखा पद्य में।
स्व पर विश्व कल्याण भाव-'कनकनन्दी' के भरे पद्य में/(दिल में)।।

❑❑❑

शान्ति की सरिता बहाते चलो

(रागः ज्योत से ज्योत...)

ज्ञान से ज्ञान बढ़ाते चलो, शान्ति की सरिता बहाते चलो।
ज्ञान पिपासु जो भी मिले, उनको सन्मार्ग बताते चलो।। (टेक)।
सत्य जो मिले ज्ञान होने से, मान्यता उसे भी दे दो।
सत्यज्ञान से शान्ति प्राप्त कर, विश्व को शान्ति दे दो।।
संकीर्णता का भाव मिटाकर, प्रेम भाव का वरण करो।
शान्ति के भाव लुटाते चलो, शान्ति की सरिता बहाते चलो...।।

आशा-निराशा को दूर हटाके, लक्ष्य पे सतत गमन करो।
जो भी सत्य करे पुरुषार्थ, सफलता को अवश्य करो।।
पाप भी पुण्य में होता परिणत, पवित्र भाव जो सतत धरे।।
समता भाव को धारण करो, शान्ति की सरिता
जो भाव तुम्हें अच्छा न लगे, वह भाव पर में न करो
प्रत्येक जीव तो शान्ति चाहते, शान्ति की नित बरसात करो
अभाव संक्लेश दुःख मिटे सदा, ऐसा प्रयत्न तुम भी करो....
पापी को नहीं पाप मिटाते चलो शांति की सरिता....।
प्रत्येक जीव से मैत्री रखना, गुणी से गुण ले लेना
दुःखियों के दुःख हर लेना, हठी से समता रखना।
क्षमता स्वयं की बढ़ाते चलो, दुर्भाव सभी से त्याग करो।।
विश्व शान्ति हेतु प्रार्थना करो... शान्ति की...

❑❑❑

युद्ध एवं शान्ति (सत्य न्याय हेतु युद्ध)

(संकल्पी हिंसा, विरोधी हिंसा एवं पूर्ण अहिंसा)

पूर्ण हिंसा से ही संपूर्ण शान्ति संभव

(रागः 1.जय हनुमान..., 2.अच्छा सिला दिया...)

हर जीव चाहता शान्ति को सदा...किसी भी उपाय/(हेतु) से मिले है सदा।
उपाय सबका सही न होता...इसीलिए कभी-कभी युद्ध भी होता।।

रामायण महाभारत युद्ध...न्याय रक्षार्थे हुआ था युद्ध।
एक पक्ष था तो न्यायवन्त...अन्य पक्ष था अन्यायवन्त।।

श्रीराम सदा तो थे न्यायवन्त...मर्यादा पुरुष व शान्तिदूत।
रावण था इसी से विपरीत...इसी हेतु युद्ध हुआ नियत।

ऐसा ही हुआ महाभारत युद्ध...न्याय के लिए हुआ था युद्ध।
पाण्डव का था तो न्याय पक्ष...कौरव थे इस से विपरीत।।

शान्ति से न्याय राम चाहते थे...पाण्डव तथाहि न्याय चाहते थे।
तथापि रावण व कौरव पक्ष...अन्याय करने से हो गये युद्ध।

न्याय की स्थापना व अशान्ति दूर...करने हेतु दोनों समर।
राम पाण्डव यदि करते न युद्ध...असत्य अन्याय हो जाते प्रवृद्ध।
चंद्रगुप्त तथा खारवेल राजा...राणा प्रताप व शिवाजी राजा।
लक्ष्मीबाई व नेताजी सुभाष...सत्य न्याय हेतु किये थे समर।
सिकंदर चंगेजखाँ नेपोलियन...हिटलर तथा अंग्रेज शासन।
जब अन्याय अत्याचार किए...उसे दूर हेतु संग्राम हुए।
इसी हेतु असि/(युद्ध) का हुआ प्रणयन..सुरक्षा हेतु न हत्या/(हिंसा)/(युद्ध) कारण।।
इसी हेतु न्यावन्त/(सज्जन) भी युद्ध किए... चतुर्थ काल से अभी तक हुए।।
इसे कहते हैं विरोधी हिंसा...बहु हिंसा रोकने की/(दूर हेतु) अल्प हिंसा।
डॉक्टर न्यायाधीश समान काम...संकल्पी हिंसा रहित काम।
संकल्पी हिंसा हेतु जो युद्ध करता...उसे रोकने हेतु विरोधी हिंसा।
संकल्पी हिंसा महापापदायी...विरोधी हिंसा अल्पपापदायी।।
संपूर्ण पाप से निवृत्ति हेतु...विरोधी हिंसा भी त्यागने हेतु।
पञ्च महाव्रत साधु पालते...पञ्च अणुव्रत गृही/(व्रती) पालते।।
पूर्ण अहिंसा से मिले वैश्विक/(पूर्ण) शान्ति...किसी भी युद्ध में होती महान् क्षति।
धन जन साधनों का होता संहार...सभ्यता संस्कृति का भी होता संहार।।
पर्यावरण प्रदूषण विशेष होता...मृदा जल वायु दूषण अधिक होता।
शब्द रेडियेशन प्रदूषण भी होता...अनेक अनर्थों का जन्म भी होता।
युद्ध पूर्व व युद्ध शान्ति के परे भी...उपरोक्त अनर्थों को झेले पृथ्वी।
जिससे अकाल महामारी फैलती..जिससे अनेक समस्याएँ होती।
इसलिए तीर्थंकर बुद्ध अशोक...युद्ध मात्र को ही किया है निषेध।
युद्ध निषेध हेतु है सर्वप्रथम...अंतरंग युद्ध को करो निष्कासन।।
इसलिए क्रोध मान माया लोभ त्यागो...अहंकार सहित भी स्वार्थ को त्यागो।
इसी से अंतरंग होता प्रशांत...जिससे बाह्य युद्ध होता है शान्त।
इसी हेतु तीर्थंकर भी चक्रीत्व त्यागे...आत्मशान्ति हेतु कषाय त्यागे।
जिससे वे बने अन्तःपरम शान्त...विश्व को दिया शान्ति दिव्या सन्देश।।
यदि स्व-पर-विश्व में शान्ति को चाहो...आत्मशान्ति द्वारा इसे फैलाओ।
'कनकनन्दी' सदा साधना रत...युद्ध के बिना हो विश्वशान्ति में रत।।

❑❑❑

"युद्ध विश्व में युद्ध न होता"

(रागः आत्मशक्ति से ओतप्रोत...)

यदि न होता विश्व में युद्ध... कितना उत्तम होता।
धन जन समय नष्ट न होते...विकास में विनिमय होते।। ध्रु.।।
बुद्धि व खोज युद्ध में न होते...विकास में प्रयोग होते।
पर्यावरण साधन घर न नशते...नदी नाला खेती न नशते।।
आक्रमण व प्रति आक्रमण का...सिलसिला समाप्त होता।
हत्या लूट बलात्कार विध्वंस...युद्ध बंदी विकलांग न होते।
शान्ति समाधान सौहार्द्र बढ़ते...सहयोग एकता समन्वय।
सर्वोदय हेतु चिंतन आचरण..तथाहि शोध बोध ज्ञान।।
धर्म अर्थ काम मोक्ष पुरुषार्थ...तथाहि चारों आश्रम।
समुचित रूप से विकसित होते...न होता विनाश क़ाम।।
महाभारत व रामायण युद्ध...तथाहि दो विश्वयुद्ध।
तथाहिं अन्य लाखों युद्ध...जो है प्रसिद्ध अप्रसिद्ध।।
युद्ध की कथा सुनने सुनाने में...नाटक में देखने में।
भले लगती है वीरसमय...वास्तविक विध्वंसमय।।
अतएव तीर्थंकर बुद्ध अशोक...रामकृष्ण व युधिष्ठिर।
गाँधी संयुक्त राष्ट्र संघ...न मानते हैं श्रेयस्कर।।
यदि सब जन युद्ध न चाहेंगे...करेंगे शान्ति की संधि।
शान्ति से यदि समाधान होगा...अप्रासंगिक युद्ध होगा।।
इसी हेतु उपाय (है) पंचव्रत समता...समन्वय सदाचार।
क्षमा सहिष्णुता ईर्ष्या द्वेष त्याग...वैश्विक कुटुम्ब विचार।।
इनसे यदि मोक्ष मिलता है...युद्ध बंद काम तो छोटा।
अंतरंग शत्रु जब क्षय या नष्ट हो जाते...अजितशत्रु वह हो जाता/ (विश्वविजयी स्वतः हो जाता)।।
यह मार्ग ही सर्वोच्च उपाय...तीर्थंकर बुद्ध ने जो खोजा।
अन्य उपाय है प्रतिक्रियावादी... 'कनकनन्दी' को यह सब भाया।।

❑❑❑

हो भारतीय संस्कृति युक्त, जापानी कार्य पद्धति (16)

(रागः इक परदेशी मेरा दिल ले गया..., 2. यमुना किनारे श्याम जाया...)

जीवन में भ्रष्टाचार किया न करो, कर्त्तव्य को पूजा मान किया ही करो
तन मन समय में कर्त्तव्य करो, स्व पर राष्ट्र हिते दिल से करो..(टेक)
जापानियों के समान कर्त्तव्य करो रे, भारतीय संस्कृति हृदये धरो रे ऽऽ
भूकम्प व सुनामी में जापानी से सीखो हे, शान्ति व धैर्य से कर्त्तव्य करो हे
आत्म सम्मान सहित काम सदा करो, छीना झपटी कभी किया न करो....(1)
क्षमता से हर कार्य उत्तम करो रे, जमाखोरी दगाबाजी किया न करो रे ऽऽ
व्यवस्था से हर काम किया ही करो रे, लूटपाट उद्दण्डता किया न करो रे
राष्ट्र स्व-पर-विश्व हिते कुर्बानी करो, संकीर्ण स्वार्थ को त्याग ही करो.....(2)
दूसरों की विपत्ति में सहाय बनो रे, अनैतिक लाभ कभी उठाया न करो रेऽऽ
अफवाह निंदा द्वेष किया न करो, तिल को ताड़ किया न करो।
समाचार माध्यम अफवाह न फैलाये, सत्य तथ्य का ही प्रसार किया करो रे.....(3)
भारतीय संस्कृति का ध्यान भी रखो रे, 'कनकनन्दी' कहे विकास करो रे
दूसरों से अच्छी शिक्षा पाया ही करो, विकास के कारणों को स्वीकार करो....(4)

❑❑❑

जज का फैसला

पी डल्ब्यू स्मिथ अमेरिका के मशहूर जज थे। एक बार वह अदालत से घर लौट रहे थे। रास्ते में उनकी गाड़ी से टकरा कर एक व्यक्ति घायल हो गया। तत्काल भीड़ इकट्ठा हो गयी और जैसा कि होता है, सभी लोग चालक को बुरा भला कहने लगे। लेकिन लोगों को जब पता चला कि चालक कोई नही बल्कि जाने माने न्यायाधीश स्मिथ हैं, तो लोग घायल व्यक्ति को ही दोषी ठहराने लगे। स्मिथ ने कहा, 'इस समय कौन दोषी है, इसका फैसला आप लोग नहीं कर सकते। इसका निर्णय तो अदालत करेगी। इस समय इस शख्स को इलाज की जरुरत है। जज साहब लोगों की मदद से घायल व्यक्ति को अस्पताल ले गए और उसकी मरहम पट्टी करायी। इसके बाद उन्होंने अस्पताल में तैनात पुलिस से कहा कि यह मेरी गाड़ी से घायल हुआ है, मेरे खिलाफ इसका केस दर्ज किया

जाए। पहले तो पुलिस वालों ने आनाकानी की, लेकिन स्मिथ के दबाव पर केस दर्ज हो गया। दूसरे दिन पुलिस ने उनके सामने यह केस पेश किया। इससे कुछ दिनों पहले इसी तरह के हादसे में एक व्यक्ति को 15 दिनों की कैद या 15 डॉलर जुर्माने की सजा सुनायी थी। उसी फैसले को नजीर मान कर उन्होंने अपने को वही सजा सुना दी, पुलिस से कहा, 'मुझे जेल ले चलो। पुलिस वाले उच्चाधिकारियों की आदेश के बिना जज साहब को जेल कैसे ले जाते। उन्होंने इसकी सूचना मुख्य न्यायाधीश को दी। मुख्य न्यायाधीश कुछ देर बाद स्मिथ की अदालत में पहुंचे और कहा, 'हमें आप के निर्णय पर गर्व है। यदि सभी जज आपकी तरह इंसाफ करने लगे तो लोगों का इंसाफ पर भरोसा और मजबूत होगा। आप ने अपना फैसला सुना दिया। अब मेरा भी फैसला सुन लीजिए।'' मुख्य न्यायाधीश ने कैद की जगह 15 डॉलर का जुर्माना स्वयं देकर स्मिथ को बरी कराया। स्मिथ ने कहा, 'इंसाफ सबके लिए बराबर होना चाहिए।'' यह कह कर उन्होंने 15 डॉलर चीफ जस्टिस को लौटा दिये।

❑❑❑

मगरा प्रांत में जैन (जन) एकता की बहार

प. पू. समन्वयकारी जननायक सन्तप्रवर दिगम्बर जैनाचार्य श्री कनकनन्दी जी गुरुदेव ससंघ का 2013 का हल्दीघाटी में चातुर्मास संपन्न होने के पश्चांत् आचार्य श्री संघ अपने पूर्व नियोजित मंगल विहार करते हुए मेवाड़ के मगरा प्रांत के शांत-सुरम्य-सांस्कृतिक-धार्मिक व गुरु भक्ति के प्रायः 20-25 ग्रामों में विहार-प्रवास-व्याख्यान-आहारदान-शास्त्रदान आदि धर्म प्रभावना के कार्यक्रम करते हुए विविध ग्रामों में श्वेताम्बर जैन के तीनों पंथ स्थानकवासी, मंदिरमार्गी, तेरहपंथी से लेकर हिन्दुभक्तों द्वारा आचार्य श्री संघ का अत्यंत भावभीना हार्दिक स्वागत-सत्कार-आहार-दान-वैयावृत्ति-ज्ञानदान-व्याख्यान-पगल्या (द्वाराचार) मंगलाचार-भक्ति संध्याआदि आयामों के माध्यम से अभूतपूर्व-अद्वितीय ऐसा संस्मरणीय धर्म प्रभावनाकारी मंगल विहार से अञ्चलवासी से लेकर आचार्य श्री संघ अत्यंत अभिभूत हुआ।

अखिल भारतीय जैन एकता मंच संयोजक श्री मांगीलालजी मादरेचा द्वारा श्री संघ के विहार की व्यवस्था में अनेक ग्राम जैसे कालोड़ा, सेमल, उनवास,

खमनोर, सगरून, वाटी, कदमाल, तुला, फतहपुर, मचीन्द, करई, बड़ा भाणुजा, गांवगुढ़ा, झालों की मदार, कोशीवाड़ा, सेमा, खेड़ीबावजी, मोलेला, गुणीआश्रम, भुताला, ईसवाल, लोयरा आदि ग्रामों में आचार्य श्री संघ के प्रति सभी ग्रामवासियों ने यथायोग्य तन-मन-धन-समय-श्रम-दान-वैयावृत्ति आदि के माध्यम से अपना योगदान किया। कुछ ग्रामों में आचार्य श्री कनकनन्दी जी साहित्य कक्ष की स्थापना की गयी। वहाँ के जैन अजैन भक्तों द्वारा प्रदत्त दान राशि से गुरुदेव सृजित वैश्विक कृति (क्या है ईश्वरीय करण?) ग्रंथ का प्रकाशन हुआ। अपने अल्प प्रवास में ग्रामीणजनों द्वारा आचार्य श्री संघ को दीर्घ प्रवास को लेकर चातुर्मास करने हेतु विनती की गयी, जिसे आचार्य भगवन्त ने अपने प्रबोधन में कहा कि यह मंगल विहार अभी परिचय मात्र है, आगे यथायोग्य-यथासमय आपके ग्रामों में पधारकर शिविर, संगोष्ठी, सांस्कृतिक कार्यक्रमों के माध्यम से, ज्ञान-विज्ञान जैन एकता आदि विविध आयामों के माध्यम से लाभान्वित कराऊँगा। अंचल के ग्रामों में ऐतिहासिक कला, संस्कृति, पर्यावरण, भावना, भक्ति से प्रसन्न होकर गुरुदेव ने अनेक ग्राम गीतों की रचना की। मेवाड़ मगरा का आचार्यश्री का चातुर्मास मंगल विहार प्रवास आदि देश-विदेशों में चर्चा व प्रभावना का विषय बना हुआ है।

शुभकामनाओं सह - मुनि सुविज्ञसागर
संघस्थ आचार्य श्री कनकनन्दी गुरुदेव

❑❑❑

आध्यात्मिक विज्ञान सभा सम्पन्न

"जैन फिलॉसफी एण्ड साइंस स्टडी सेंटर" विज्ञान समिति अशोकनगर, उदयपुर द्वारा आयोजित मासिक विज्ञान संगोष्ठी का आयोजन श्री पद्मप्रभ दिगंबर जैन मंदिर, यूनिवर्सिटी रोड गणेशनगर पहाड़ा के सभागृह में प.पू. आध्यात्मिक वैज्ञानिक धर्माचार्य श्री कनकनन्दी जी गुरुदेव ससंघ सान्निध्य में संपन्न हुआ। विज्ञान समिति के प्रबुद्धजनों की उपस्थिति में भूतपूर्व एमडी, बीएन इंस्टीच्यूट व अंतर्राष्ट्रीय आध्यात्म विज्ञान प्रवक्ता श्री मनोहर सिंह जी कृष्णावत ने "आत्म स्वरूप और उसकी प्राप्ति" विषय पर अपना प्रभावशाली व रोचक व्याख्यान प्रस्तुत किया। इसी भाँति दूसरे वक्ता जियॉलाजिस्ट डॉ. आर एल

मुंशी ने अपना वक्तव्य अंग्रेजी भाषा में प्रस्तुत किया, जिसका विषय ''क्राइसिस ऑफ कान्सियसनेस-रिलीजियस माइण्ड जैन योगा'' रहा। इस अवसर पर आचार्य श्री कनकनन्दी गुरुदेव सृजित कृति ''ANCIENT ALIENS'' प्राचीन परग्रही (देव) जो कि जैन तथ्य/(भारतीय तथ्य) जो कि आधुनिक विज्ञान से परे (ज्ञानधारा।) ग्रंथांक 224 का विमोचन विज्ञान शोधकर्ताओ द्वारा किया गया। इस कृति के अर्थ सहयोगी आचार्य श्री के शिष्य वैज्ञानिक डॉ. श्यामलाल जी गोदावत हैं।

इस सभा का प्रारंभ आचार्य श्री सृजित कविता ''सबसे परम है आध्यात्मिक'' के मंगलाचरण से हुआ। डॉ. मुंशी ने चेतना, विचार, समय आदि विषयों पर अपने विचार प्रस्तुत किए। आचार्य श्री ने प्रति प्रश्नों के माध्यम से समीक्षा की। कृष्णावत जी ने आत्मा क्या है, हम इस धरती पर क्यों आए आदि प्रश्नात्मक भावों से आध्यात्म जगत् की व्यापकता व उपादेयता का महत्व समझाते हुए उपस्थित श्रोताओं को अंतरंग की यात्रा सशीघ्र प्रारंभ करने हेतु प्रेरित किया। उपस्थित आचार्य श्री व संघस्थ साधुओं को विश्व की सबसे धनाढ्य मूर्ति बताते हुए अपना अहोभाव व्यक्त किया। इसके पश्चात् आचार्य श्री ने कृष्णावत जी व उपस्थित ज्ञानी-विज्ञानी जनों ने चिंतन मनन हेतु भारतीय जनों में वर्तमान के आध्यात्मिक पतन के कारणों को लेकर प्रति प्रश्न उपस्थित किए। इस अवसर पर सभा संचालक डॉ. नारायणलाल कछारा, डॉ. पारसमल जी अग्रवाल ने भी अपने विचार संक्षिप्त में प्रस्तुत किए। कृष्णावत जी ने अपने वक्तव्य के अनंतर आचार्य भगवंत से अपने स्वयं के आत्मकल्याण हेतु आचार्य श्री की प्रेरणा-सम्बोधन व आशीर्वाद की कामना की, जिसे देखकर उपस्थित जन द्रवित व अभिभूत हुए।

शुभकांक्षा सह-श्रमण मुनि सुविज्ञसागर, संघस्थ आ. श्री कनकनंदी जी गुरुदेव

❑❑❑

जैन (भारतीय) सत्य तथ्य जो आधुनिक विज्ञान से परे

Jain Facts Behind Modern Science

आचार्य कनकनन्दी

वर्तमान वैज्ञानिक युग के महान् जैन/(भारतीय) सत्य-तथ्य के उद्घाटक वैज्ञानिक श्रमणाचार्य श्री कनकनन्दी जी गुरुदेव द्वारा उदयपुर स्थित 'जैन फिलॉसफी एण्ड स्टडी सेंटर' विज्ञान समिति के सभागृह में अपना अत्यंत ओजस्वी, नवाचारी, युग परिवर्तनकारी ऐसा प्रबोधन संस्था के वृहद् स्तरीय प्रबुद्धजनों की उपस्थिति में व्याख्यायित किया; जिससे आचार्य श्री की प्रज्ञा, क्षमता, दार्शनिकता, वैज्ञानिक प्रगतिशीलता व अन्यान्यं प्राचीन से लेकर आधुनिक ज्ञान-विज्ञान के बहुआयामी पक्षों से उपस्थित जन अत्यंत प्रभावित हुए। प्रास्ताविक डॉ. के. एल. कोठारी ने किया व आचर्य श्री के विराट आध्यात्मिक व्यक्ति का परिचय श्री लक्ष्मीलाल जी धाकड़ ने सुंदर शैली में प्रस्तुत किया। श्रीमती रजनी मेहता व श्रीमती प्रमिला राँका द्वारा संयुक्त रूप से गुरुगुण मालिका की पद्यात्मक प्रस्तुति से मंगलाचरण हुआ।

आचार्य श्री सृजित कविता द्वय "छोटा भोला छात्र हूँ" व "जैन धर्म में समाहित वैश्विक ज्ञान-विज्ञान" की प्रस्तुति अनन्तर आचार्य श्री ने अपनी ओजस्वी तेजस्वी देशना के माध्यम से आगम वर्णित ज्ञान-विज्ञान व आधुनिक विज्ञान के विविध आयामों की तुलनात्मक समीक्षा प्रस्तुत करते हुए जीव-विज्ञान, पर्यावरण, भौतिकी, रसायन, ब्रह्माण्डीय विज्ञान (परम विज्ञान) से लेकर अलौकिक गणित के संदर्भ में अपनी समन्वयात्मक शैली से जैन/(भारतीय) ज्ञान-विज्ञान के सत्य तथ्यों को आधुनिक विज्ञान से परे अर्थात् फारवर्ड द डेट सिद्ध किया व अपने चुनौती पूर्ण आह्वान से प्रबुद्ध सनग्र सत्याग्रही वैज्ञानिकों के लिए कुछ प्रश्न व प्रति प्रश्न करने हेतु प्रेरित किया। विशेषकर सुषुप्त भारतीयों को इस दिशा में इन्वेन्शन (उद्भावन) करने की आवश्यकता पर विशेष बल दिया। गुरुदेव ने इस महान् कार्य के लिए मेवाड़-बागड़वासियों की नम्रता भक्ति व शालीनता की अनुमोदना करते हुए महान् लक्ष्य की ओर बढ़ने हेतु अभिप्रेरणा दी। कार्यक्रम के समापन पर श्री हिम्मत जी राँका की ओर से नारंगी की प्रभावना वितरित की गयी।

शुभकामनाओं सह प्रस्तुति

श्रमण मुनि, सुविज्ञसागर, संघस्थ आ. कनकनन्दीजी



पंचम अन्तर्राष्ट्रीय वैज्ञानिक संगोष्ठी में अखिल भारतीय गायत्री परिवार द्वारा संगीत प्रस्तुति का एक दृश्य। यह संगोष्ठी आ. कनकनन्दी ससंघ सान्निध्य में आयोजित हुई थी तथा डॉ. प्रणव पाण्या भी पधारे थे (प्रतापगढ़ 2002)



धर्मसभा में मंगलाचरण करते आ. कनकनंदी गुरुदेव के संघस्थ बालब्रह्मचारी श्रेणिक। आगे दीक्षा लेने की आपकी तीव्र भावना है। (उदयपुर 2014)



राजकीय आदर्श आयुर्वेद औषधालय (उदयपुर) के अवलोकन के अवसर पर आचार्य कनकनन्दी गुरुदेव को औषधालय के ग्रोथ रिपोर्ट बताते हुए परीक्षण एवं परामर्श दाता डॉ. एस. एल. औदिच्य। आप भारत के सभी जैन साधु संघ की चिकित्सा कर रहे हैं।



हिरणमगरी सेक्टर-11 के पंचकल्याणक के अवसर पर आचार्य वर्द्धमान सागर जी ससंघ का स्वागत करते हुए आचार्य कनकनन्दी ससंघ एवं भक्तगण (1996)



आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी समारोह में उपस्थित साधु-साध्वियों को आचार्य कनकनन्दी द्वारा रचित ग्रन्थों के भेंट के अवसर पर साध्वी कनकश्री को भेंट करते हुए।



राजकीय आदर्श आयुर्वेद औषधालय (उदयपुर) का अवलोकन करते हुए आचार्य कनकनन्दी गुरुदेव संघस्थ साथ में डॉ. एस.एल. औदीच्य, मुकेश जैन

Jain Printers, Udr. # 094142 39198